नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के मानदंडों पर आधारित हिंदी पाठ्यपुस्तक

सरस्वती सरगम

हिंदी पाठमाला

6

लेखिकाएँ

गीता बुद्धिराजा

एम०ए०, बी०एड्०

डॉ० जयश्री अय्यंगार

एम०ए०, एम०फिल० (हिंदी)

(एन०सी०ई०आर०टी०, डी०एस०ई०आर०टी० द्वारा पुरस्कृत)

न्यू सरस्वती हाउस (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड

नई दिल्ली-110002 (इंडिया)

NEW SARASWATI HOUSE

Head Office : Second Floor, MGM Tower, 19 Ansari Road, Daryaganj, New Delhi–110 002 (India)
Registered Office : A-27, 2nd Floor, Mohan Co-operative Industrial Estate, New Delhi–110 044

Phone : +91-11-4355 6600
Fax : +91-11-4355 6688
E-mail : delhi@saraswatihouse.com
Website : www.saraswatihouse.com
CIN : U22110DL2013PTC262320
Import-Export Licence No. 0513086293

Branches:

• Ahmedabad: Ph. 079-2657 5018 • Bengaluru: Ph. 080-2675 6396
• Chennai: Ph. 044-2841 6531 • Dehradun: Ph. +91-98374 52852
• Guwahati: Ph. 0361-2457 198 • Hyderabad: Ph. 040-4261 5566 • Jaipur: Ph. 0141-4006 022
• Jalandhar: Ph. 0181-4642 600, 4643 600 • Kochi: Ph. 0484-4033 369 • Kolkata: Ph. 033-4004 2314
• Lucknow: Ph. 0522-4062 517 • Mumbai: Ph. 022-2876 9871, 2873 7090
• Nagpur: Ph. +91-70661 49006 • Patna: Ph. 0612-2275 403 • Ranchi: Ph. 0651-2244 654

Revised edition 2020

ISBN: 978-93-53621-55-1

The moral rights of the author has been asserted.

© New Saraswati House (India) Private Limited

Publisher's Warranty: The Publisher warrants the customer for a period of 1 year from the date of purchase of the Book against any Printing/Binding defect or theft/loss of the book.
Terms and Conditions apply: For further details, please visit our website www.saraswatihouse.com or call us at our Customer Care (toll free) No.: +91-1800 2701 460
Jurisdiction: All disputes with respect to this publication shall be subject to the jurisdiction of the Courts, Tribunals and Forums of New Delhi, India Only.

All rights reserved under the Copyright Act. No part of this publication may be reproduced, transcribed, transmitted, stored in a retrieval system or translated into any language or computer, in any form or by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual, photocopy or otherwise without the prior permission of the copyright owner. Any person who does any unauthorised act in relation to this publication may be liable to criminal prosecution and civil claims for damages.

Product Code: NSS2SRG060HINAB19CBY

This book is meant for educational and learning purposes. The author(s) of the book has/have taken all reasonable care to ensure that the contents of the book do not violate any copyright or other intellectual property rights of any person in any manner whatsoever. In the event the author(s) has/have been unable to track any source and if any copyright has been inadvertently infringed, please notify the publisher in writing for any corrective action.

PRINTED IN INDIA
By Vikas Publishing House Private Limited, Plot 20/4, Site-IV, Industrial Area Sahibabad, Ghaziabad–201 010 and
published by New Saraswati House (India) Private Limited, 19 Ansari Road, Daryaganj, New Delhi–110 002 (India)

आमुख

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति एवं राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा से हम यह निष्कर्ष निकालते हैं कि बच्चों के स्कूली जीवन को बाहरी तथा व्यावहारिक जीवन से जोड़ना चाहिए। इसी सिद्धांत को ध्यान में रखकर यह पाठ्यपुस्तक तैयार की गई है। इस पुस्तक के माध्यम से स्कूल और घर की दूरी कम करने का प्रयास किया गया है। इस प्रयास में हर विषय को एक मज़बूत दीवार से घेर देने तथा रटा देने की प्रवृत्ति का प्रबल विरोध किया गया है। आशा है कि यह कदम हमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति में चर्चित बाल-केंद्रित शिक्षा की दिशा में सफलता प्रदान करवाएगा।

इस उद्देश्य में तभी सफलता मिलेगी, जब सभी स्कूलों के प्राचार्य/प्राचार्या और अध्यापक/अध्यापिकाएँ बच्चों को कल्पनाशील गतिविधियों, रचनात्मक प्रश्नों, पाठ से संबंधित प्रश्नों की मदद से सीखने और अपने अनुभवों पर विचार प्रकट करने का अवसर देंगे। हमारा दृढ़ विश्वास है कि यदि बच्चों को उचित अवसर, समय और स्वतंत्रता दी जाए तो वे अपने ज्ञान, सूझ-बूझ तथा कल्पना से ऊँची उड़ान भर सकते हैं। बच्चों के सामने यदि ज्ञान की सारी सामग्री परोस दी जाए तो वे अपनी क्षमता के अनुसार उसमें से बहुत अधिक ज्ञानवर्धक चीज़ें निकाल लेते हैं। यदि बच्चों को उपदेश दिया जाए तो उन्हें अच्छा नहीं लगता। जब वे कहानी तथा कविता पढ़ते हैं या सुनते हैं, तो नैतिक तथा मानवीय-मूल्य सहजता से स्वीकार कर लेते हैं।

- पुस्तक को तैयार करते समय पाठों का चुनाव बच्चों की बौद्धिक क्षमता तथा भाषा-स्तर को ध्यान में रखते हुए किया गया है।
- पाठ के आरंभ में पाठ को स्पष्ट करने वाली भूमिका दी गई है।
- पाठों में दिए गए चित्र तथा अभ्यास बच्चों को आकर्षित करेंगे तथा वे कुछ-न-कुछ संदेश भी अवश्य ग्रहण करेंगे।
- सोचिए और बताइए यह प्रश्न बच्चों के सोचने, समझने और लिखने की क्षमता को बढ़ावा देता है।
- अभ्यास बनाते समय यह ध्यान रखा गया है कि बच्चे स्वयं सोचें तथा आत्मविश्वास के साथ अपने विचारों को प्रकट कर सकें।
- बच्चे जब अपने विचारों को प्रकट करेंगे तो उन्हें नए-नए शब्दों की जानकारी होगी तथा उनका शब्द-भंडार भी बढ़ेगा।
- बच्चे और खेल दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं, इसलिए पुस्तक के बीच-बीच में बच्चों को आकर्षित करने के लिए खेल तथा खेल से संबंधित गतिविधियाँ भी दी गई हैं।
- हमारी संस्कृति, कलाओं तथा लोक-कलाओं से भरपूर है। बच्चों को अपनी संस्कृति से जोड़ने के लिए पुस्तक में उन्हें यथा स्थान दिया गया है।
- पुस्तक का निर्माण सी०बी०एस०ई० समेत विभिन्न राज्यों के शिक्षा बोर्ड्स के पाठ्यक्रम को ध्यान रखते हुए किया गया है।
- पाठ्यक्रम को तैयार करते समय अहिंदी भाषी क्षेत्रों के छात्रों का विशेष ध्यान रखा गया है।

शिक्षाविदों एवं अभिभावकों के ऐसे सुझावों का हम स्वागत करेंगे, जिससे पुस्तक के आवश्यक संशोधन में सहायता ली जा सके।

–लेखिकाएँ

विषय-सूची

- इन्हें भी जानिए ..... (*vi*)

1. **आओ! हम अच्छे बनें** (कविता)
   –डॉ. सिद्धया पुराणिक 07
   - गतिविधि-1 (अच्छी आदतें) 11
2. **पंच परमेश्वर** (कहानी)
   –प्रेमचंद 12
   - गतिविधि-2 (ग्राम्य और शहरी जीवन) 19
   - मीनल की चिन्नी (अतिरिक्त पठन)
     –नीना सिंह सोलंकी 20
3. **ईश्वर जो करता है, अच्छा ही करता है** (प्रसंग) 23
   - गतिविधि-3 (गांधी जी के तीन बंदर) 27
4. **नन्हे-मुन्ने प्यारे बच्चे** (कविता)
   –डॉ. परशुराम शुक्ल 28
   - बीरबल की खिचड़ी (अतिरिक्त पठन) 33
5. **तमिलनाडु** (लेख) 36
   - गतिविधि-4 (माँ) 41
6. **हमारे प्रेरणा स्त्रोत– डॉ० अब्दुल कलाम** (लेख) 42
   - ड्राइवर बन गया लेक्चरर (अतिरिक्त पठन) 47
   - गतिविधि-5 (गुरु और शिष्य) 48
7. **खेल पुराने** (कविता)
   –सतीश मिश्र 49
   - पेड़ नहीं काटो (अतिरिक्त पठन)
     –डॉ० नागेश पांडेय 'संजय' 55

8. **नमक का मोल** (कहानी) 56
- गतिविधि-6 (चित्र-वर्णन) 62

9. **महान नरेंद्र** (प्रेरक प्रसंग) 63
- मलयालम ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता–गोविंद शंकर कुरूप (अतिरिक्त पठन) 69

10. **फूल और काँटा** (कविता)
–अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' 70

11. **पदावली** (मीरा के पद) 75
- गतिविधि-7 (नोबेल पुरस्कार विजेता) 79

12. **तेनालीराम** (एकांकी)
–डॉ. श्रीप्रसाद 80

13. **ट्राम** (कविता)
–श्री भगवतीचरण वर्मा 90
- आचार्य देवो भव (अतिरिक्त पठन) 96

14. **घमंडी डाली** (कहानी)
–डॉ० विनिता राहुरिकर 98

मेरा पन्ना (परियोजना कार्य) **106–113**
- परियोजना-1 (चित्र-वर्णन) 106
- परियोजना-2 (अनुच्छेद-लेखन) 107
- परियोजना-3 (सार-लेखन) 108
- परियोजना-4 (अपठित पद्यांश) 110
- परियोजना-5 (मौखिक अभिव्यक्ति) 112
- परियोजना-6 (विज्ञापन लेखन) 113
- परियोजना-7 (संवाद लेखन) 114
- परियोजना-8 (डायरी लेखन) 115

- तिरंगे की यात्रा 116
- हमारी प्रतिज्ञा : ध्वज के प्रति 117

- शब्दकोश का प्रयोग 118
- हिंदी वर्तनी का मानकीकरण 119
- सीखने के प्रतिफल (Learning Outcome) 120

इन्हें भी जानिए

विराट कोहली

श्रीकांत किदंबी

दीपिका कुमारी

मैरी कॉम

हरमनप्रीत कौर

पी०वी० सिंधु

साक्षी मलिक

विश्वनाथन आनंद

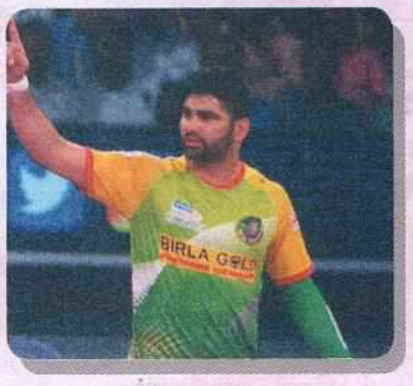

प्रदीप नरवाल

अध्यापन-संकेत—यहाँ भारत के कुछ प्रसिद्ध खिलाड़ियों के चित्र और नाम दिए गए हैं। ये खिलाड़ी किस खेल से जुड़े हैं? इनकी वर्ग में चर्चा कीजिए। अपने पसंदीदा खिलाड़ियों पर लेख या परिच्छेद लिखिए।

1 आओ! हम अच्छे बनें

चिंतन-मनन

देश के प्रति आदर-सम्मान का भाव रखना चाहिए। एक अच्छा नागरिक ही अच्छे भविष्य का निर्माण करता है।

हमारा भारत देश है बड़ा
हम छोटे बनें तो कैसे?
हमारा देश है धनी
हम गरीब बनें तो कैसे?
हमारा देश है नैतिक
हम नीतिहीन हों तो कैसे?
हमारा देश है श्रमजीवियों का
हम कामचोर हों तो कैसे?
हमारी शाला है विवेकियों की
हम अविवेकी बनें तो कैसे?
आओ! हम अच्छे बनें
भारत की शान बढ़ाएँ।

–डॉ. सिद्धया पुराणिक

हिंदी अनुवाद–*डॉ. टी.जी. प्रभाशंकर 'प्रेमी'*

शब्दार्थ–**धनी**–अमीर (rich man), **नैतिक**–जीवन मूल्य (moral), **नीतिहीन**–मूल्यरहित (unethical), **श्रमजीवी**–परिश्रमी (hard worker), **कामचोर**–आलसी (lazy), **विवेक**–बुद्धिमता (wisdom), **अविवेक**–बुद्धिहीन (idiot)

कवि परिचय

डॉ. सिद्धया पुराणिक का जन्म सन् 1918 में कर्नाटक के दयापुर नामक गाँव में हुआ। इनके पिता का नाम कल्लिनाथ तथा माता का नाम दानम्मा था। इन्होंने भारतीय प्रशासनिक सेवा (आई०ए०एस०) के रूप में कार्यभार सँभाला।

अभ्यास के लिए

मौखिक

• **कम-से-कम शब्दों में उत्तर दीजिए–**

(क) हमारा देश कैसा है?

(ख) हम छोटे क्यों नहीं बन सकते?

(ग) हम कामचोर क्यों नहीं बन सकते?

(घ) हम अच्छे बनकर क्या कर सकते हैं?

(ङ) 'आओ! हम अच्छे बनें' कविता के मूल कवि का नाम बताइए।

लिखित

1. भाव स्पष्ट कीजिए–

(क) "हमारी शाला है विवेकियों की
हम अविवेकी बनें तो कैसे?"

(ख) "आओ! हम अच्छे बनें
भारत की शान बढ़ाएँ।"

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) कवि ने किस प्रकार विरोधाभास जताया है?

(ख) शालाएँ देश की प्रगति में साधक हैं, कैसे?

(ग) इस कविता का अन्य शीर्षक क्या हो सकता है?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तारपूर्वक लिखिए–

(क) भारत की महानता के बारे में लिखिए। (**मूल्यपरक प्रश्न**)

(ख) हम अपने देश 'भारत' की शान बढ़ाने के लिए क्या-क्या कर सकते हैं?

भाषा ज्ञान

1. निम्नलिखित शब्दों के सामने लिखिए कि कौन-से शब्द पुल्लिग हैं और कौन-से स्त्रीलिंग–

(क) भारत – पुल्लिग ..... (ख) देश – .....

(ग) कामचोर – ..... (घ) नीति – .....

(ङ) शान – ..... (च) गरीब – .....

2. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए–

(क) विजय – पराजय ..... (ख) नैतिक – .....

(ग) बड़ा – ..... (घ) विवेक – .....

(ङ) धनी – ..... (च) अच्छा – .....

3. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(क) 'बड़ा' शब्द का विपरीतार्थक शब्द ..... है।

(ख) 'गरीब' शब्द का भाववाचक रूप ..... है।

(ग) 'शाला' शब्द का बहुवचन रूप ..... है।

4. निम्नलिखित शब्दों से वाक्य बनाइए–

(क) भारत देश – हमें अपने भारत देश पर गर्व है।.....

(ख) श्रमजीवी – .....

(ग) विवेक – .....

(घ) शान – .....

(ङ) गरीब – .....

विषय संवर्धक क्रियाकलाप

सोचिए और बताइए

- अगर आपको अपनी पाठशाला को सुंदर और अच्छा बनाना हो, तो आप क्या कदम उठाएँगें?

क्रियाकलाप

- इस चित्र को देखकर आपको किस राष्ट्रीय पर्व की याद आती है? उस पर्व की वर्ग में चर्चा कीजिए।

गतिविधि-1

अच्छी आदतें

सुबह जल्दी उठना
Early to Rise

स्वच्छता
Cleanliness

व्यायाम
Exercise

दैनिक स्नान
Daily Bath

प्रार्थना
Prayer

सुबह का नाश्ता
Breakfast

पाठशाला जाना
Go to School

सामाजिक गतिविधि
Social Activity

दूसरों की मदद करो
Help Others

खेल
Playing

पढ़ना और लिखना
Reading & Writing

सोना
Go to Bed

अध्यापन-संकेत–अच्छी आदतें अच्छे नागरिक बनने में सहायक होती हैं। इन चित्रों में कुछ अच्छी आदतें बताई गई हैं। चित्रों को देखकर वर्ग में इस पर संवाद कराया जाए।

2 पंच परमेश्वर

चिंतन-मनन

पंचायत के सामने मित्रता-शत्रुता का कोई भेदभाव नहीं होता। पंचायत हमेशा सच का साथ देती है। सच कभी छिपा नहीं रहता। सच की हमेशा जीत होती है, इसलिए कहते हैं– 'सत्यमेव जयते'।

अलगू चौधरी और जुम्मन शेख दोनों दोस्त थे। उन दोनों में गाढ़ी मित्रता थी। वे दोनों किसान थे। उनकी मित्रता के दूर-दूर तक चर्चे थे। जुम्मन शेख की एक बूढ़ी विधवा मौसी थी। उनके तीन-चार खेत थे। वे बूढ़ी हो गई थीं, खेतों की देखभाल नहीं कर सकती थीं। इसलिए मौसी ने खेत जुम्मन के नाम लिख दिए। इसके बदले जुम्मन ने उन्हें जीवनभर भोजन-वस्त्र देते रहने का वादा किया।

कुछ दिन तक सब कुछ ठीक चलता रहा लेकिन कुछ समय बीत जाने के बाद जुम्मन और उसकी पत्नी के व्यवहार में मौसी के प्रति कड़वाहट आने लगी थी। बात-बात पर उनका अपमान होने लगा। जब उनसे अपमान न सहा गया, तब उन्होंने जुम्मन से कहा, "अब तुम्हारे साथ मेरा निर्वाह नहीं होगा। तुम मुझे रुपया दे दिया करो, मैं अपना अलग प्रबंध कर लूँगी।"

शब्दार्थ–गाढ़ी–घनी मित्रता (close friendship), **विधवा**–जिसका पति मर चुका हो (widow), **वादा**–वचन देना (promise), **व्यवहार**–लेन-देन (transaction), **कड़वाहट**–वैमनस्य (bitterness), **अपमान**–सम्मान न देना (insult), **निर्वाह**–गुजारा (to manage), **प्रबंध**–व्यवस्था (to arrange)

जुम्मन ने कहा, "रुपये क्या यहाँ फलते हैं?"

मौसी ने कहा, "मेरे खेतों से भी तो कुछ कमाई होती होगी?"

तपाक से उत्तर देते हुए जुम्मन ने कहा, "उन खेतों से इतनी कमाई नहीं होती कि मैं तुम्हें अलग से रुपया दे सकूँ।"

तब कठोर होते हुए मौसी ने कहा, "वाह! चार-चार खेत हैं। क्या उनमें इतनी भी कमाई नहीं होती कि एक बुढ़िया का निर्वाह हो सके? अगर तुम मेरी व्यवस्था न करोगे तो मैं पंचायत बैठाऊँगी और उससे निर्णय करवाऊँगी।"

मौसी ने गाँव के लोगों को अपनी दर्दभरी कहानी सुनाई। जुम्मन जानते थे कि गाँव के सभी लोग उनके पक्ष में हैं, उनके विरुद्ध कोई नहीं बोलेगा।

संध्या के समय पेड़ के नीचे पंचायत बैठी। अलगू चौधरी सरपंच बनकर बैठे। उनके आस-पास और पंच बैठ गए। जुम्मन को खुशी हुई कि अलगू चौधरी उसके पक्ष में ही निर्णय देगा लेकिन मौसी की दर्दभरी कहानी सुनकर पंचों और अलगू ने मौसी के पक्ष में निर्णय लिया। अलगू चौधरी ने फ़ैसला सुनाते हुए कहा, "मौसी को माहवार खर्च दिया जाए क्योंकि मौसी की जायदाद से इतना मुनाफ़ा तो अवश्य होता होगा।" पंचायत का निर्णय सुन गाँव के सभी लोगों ने कहा, "इसका ही नाम पंचायत है। दूध का दूध और पानी का पानी कर दिया।" पंचायत ने न्याय को महत्व दिया। मित्रता-शत्रुता का भेद नहीं किया। सच है 'पंच के मुख से परमेश्वर बोलता है।'

शब्दार्थ–कमाई–रुपये कमाना (earning), **तपाक**–तुरंत, झट से बोलना (instanting), **कठोर**–सख्त होना, निर्मम (harsh), **दर्दभरी**–दुख भरी (sorrowful), **पंचायत**–न्याय देने वाले पंच (panchayat), **माहवार**–मासिक आमदनी (monthly), **जायदाद**–संपति (property), **मुनाफ़ा**–फ़ायदा (profit), **दूध का दूध और पानी का पानी कर दिया**–उचित न्याय देना (doing justice (pro verb))

उस घटना के बाद जुम्मन शेख अलगू चौधरी को अपना शत्रु मानने लगा। उसके मन में बदले की भावना भर गई। वह उससे बदला लेने का अवसर ढूँढ़ने लगा।

अलगू चौधरी ने बैल की एक जोड़ी **मोल ली** थी। बैल बड़े सुंदर और स्वस्थ थे। पंचायत के एक माह बाद उनमें से एक बैल मर गया। अलगू चौधरी ने दूसरे बैल को समझू साहू को बेच दिया। समझू साहू उसी गाँव का था। वह एक बैलवाली गाड़ी चलाता था। एक महीने के बाद दाम देने की बात **तय** हुई।

समझू गाँव से गेहूँ, चना **लादकर** शहर ले जाता और शहर से सामान भरकर गाँव में बेचा करता। नए और स्वस्थ बैल से उसने खूब काम करवाया, दिन में तीन-तीन, चार-चार चक्कर लगवाए। वह बैल से काम तो खूब लेता पर उसे **दाना-पानी** नहीं देता था। परिणाम यह हुआ कि बैल की **हड्डियाँ निकल** आईं। एक दिन तो समझू ने बैल पर **दुगना बोझा लादा**। बेचारा जानवर ज़मीन पर बैठ गया और उठा ही नहीं। बैल मर चुका था।

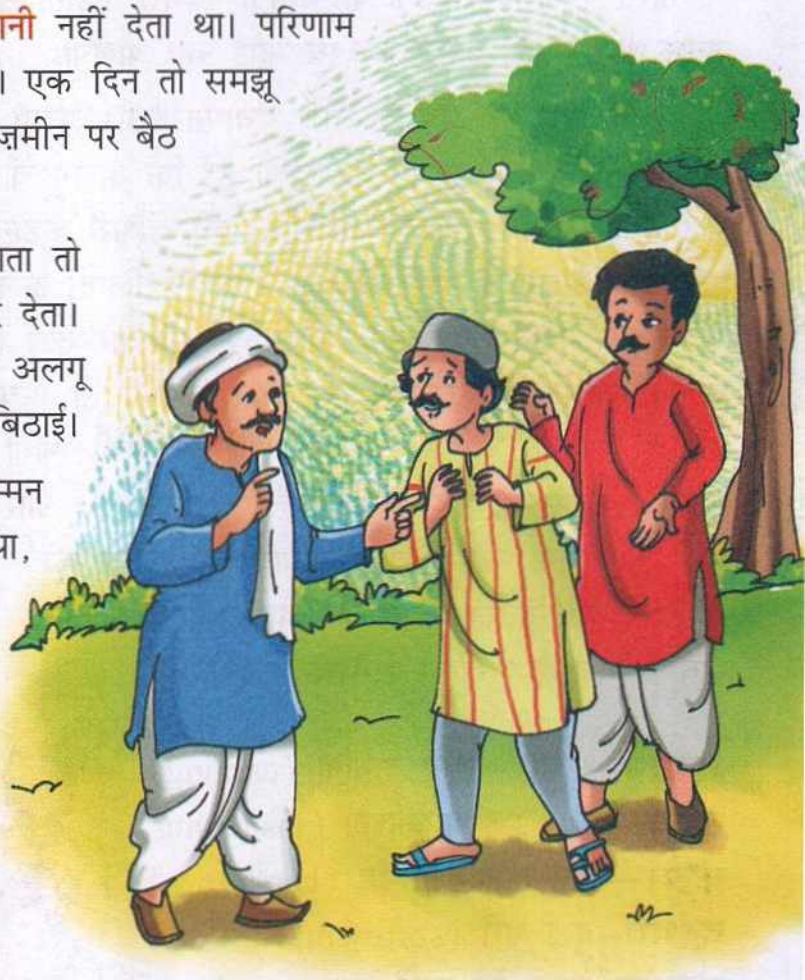

अलगू चौधरी जब भी बैल के दाम माँगता तो समझू क्रोधित होकर रुपये देने से **इंकार** कर देता। अंत में दोनों में लड़ाई होने लगी। तंग आकर अलगू चौधरी ने समझू साहू के **विपक्ष** में पंचायत बिठाई।

पंचायत बैठी। अलगू चौधरी और जुम्मन शेख के **बैर** का **हाल** समझू साहू जानता था, इसलिए अपनी ओर से उसने जुम्मन को पंच चुना। अलगू ने भी कोई आपत्ति नहीं की। उसने कहा, "यह पंचायत का मामला है। पंचायत के सामने मित्रता-शत्रुता का कोई भेद नहीं होता। पंचायत केवल **न्याय** का पक्ष लेती है। पंच के मुख से परमेश्वर बोलता है।"

शब्दार्थ–मोल ली–खरीद लेना (to purchase), **तय**–निश्चय (to decide), **लादना**–बोझ डालना (to load), **दाना-पानी**–जीविका (food/living), **हड्डियाँ निकलना**–कमजोर होना (to become skeleton), **दुगना बोझ**–ज़्यादा वजन (burden), **इंकार**–न मानना (to refuse), **विपक्ष**–अन्य पक्ष का (opposition), **बैर**–दुश्मनी (enmity), **हाल**–जानकारी (condition), **न्याय**–सच का पक्ष लेना (justice)

जुम्मन शेख जब पंच बनकर बैठा तो पिछली सारी बातें भूल गया। बार-बार उसके कानों में यही शब्द गूँजते थे, "पंच के मुख से परमेश्वर बोलता है।" दोनों पक्षों की बातों को सुनने के बाद जुम्मन ने कहा, "जिस समय बैल खरीदा गया, उसे कोई रोग नहीं था। यदि उसी समय उसका मूल्य चुका दिया जाता तो समझू साहू उसे फिर लेने के अधिकारी न होते। इसलिए समझू बैल का पूरा मूल्य दे दें।"

जो लोग पंचायत देखने आए थे, उन्होंने सोचा था कि आज जुम्मन अपना पुराना बदला लेंगे लेकिन निर्णय सुनकर वे चिल्ला उठे– "पंच परमेश्वर की जय, पंच परमेश्वर की जय।"

दोनों मित्र गले मिले और हँसते-हँसते गाँव की ओर निकल पड़े।

–प्रेमचंद

शब्दार्थ–गूँजना–सब तरफ़ फैलना (echo), **बदला लेना**–पलटा देना, प्रत्ययकारन (to take revenge)

लेखक परिचय

भारत के उपन्यास सम्राट प्रेमचंद का जन्म वाराणसी से लगभग चार मील दूर, लमही नाम के गाँव में 31 जुलाई, 1880 को हुआ। जीवन की प्रतिकूल परिस्थितियों में प्रेमचंद ने मैट्रिक पास किया। उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से अंग्रेज़ी साहित्य, पर्सियन और इतिहास विषयों से स्नातक की उपाधि द्वितीय श्रेणी में प्राप्त की थी। प्रेमचंद की रचना-दृष्टि, विभिन्न साहित्य रूपों में, अभिव्यक्त हुई। वह बहुमुखी प्रतिभा संपन्न साहित्यकार थे। उन्होंने कुल 15 उपन्यास, 300 से कुछ अधिक कहानियाँ, 3 नाटक, 10 अनुवाद, 7 बाल-पुस्तकें तथा हज़ारों पृष्ठों के लेख, संपादकीय, भाषण, भूमिका, पत्र आदि की रचना की। 8 अक्टूबर, 1936 को जलोदर रोग से उनका देहावसान हुआ।

अभ्यास के लिए

मौखिक

- **कम-से-कम शब्दों में उत्तर दीजिए–**

(क) पंच परमेश्वर कहानी के लेखक कौन हैं?

(ख) अलगू और जुम्मन शेख क्या करते थे?

(ग) मौसी ने किसके नाम खेत लिख दिए?

(घ) जुम्मन और उसकी पत्नी मौसी के साथ कैसा व्यवहार करते थे?

(ङ) पंचायत कहाँ बैठी?

(च) पंच के मुख से कौन बोलता है?

लिखित

1. किसने कहा, किससे कहा?

(क) "रुपये क्या यहाँ फलते हैं?" ....

(ख) "मैं पंचायत बैठाऊँगी।" ....

(ग) "इसका नाम पंचायत है।" ....

(घ) "पंच के मुख से परमेश्वर बोलता है।" ....

(ङ) "पंचायत केवल न्याय का पक्ष लेती है।" ....

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) मौसी ने खेत जुम्मन के नाम क्यों लिख दिए?

(ख) मौसी ने पंचायत क्यों बुलाई?

(ग) अलगू ने पंचायत में क्या निर्णय दिया?

(घ) समझू ने अलगू चौधरी से क्या खरीदा?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तारपूर्वक लिखिए–

(क) चरित्र चित्रण कीजिए–

(*i*) मौसी (*ii*) जुम्मन शेख (*iii*) अलगू चौधरी

(ख) समझू और अलगू चौधरी के बीच लड़ाई क्यों और कैसे हुई?

भाषा ज्ञान

1. कभी कभी बात को प्रभावशाली बनाने के लिए एक ही शब्द को दो बार बोला या लिखा जाता है। ऐसे शब्दों को **पुनरुक्त शब्दयुग्म** कहते हैं; जैसे–

चार-चार दूर-दूर बार-बार तीन-तीन बात-बात

रिक्त स्थानों को पुनरुक्त शब्दों की सहायता से पूर्ण कीजिए–

(क) उनकी मित्रता के ..... तक चर्चे थे।

(ख) ..... पर उनका अपमान होने लगा।

(ग) वाह! ..... खेत हैं।

(घ) दिन में ....., चार-चार चक्कर लगवाए।

(ङ) ..... उसके कानों में यही शब्द गूँजते थे।

2. वाक्यांशों के लिए एक शब्द लिखिए–

जैसे–पाँच लोगों का समूह .....पंच.....

(क) बैल से चलने वाली गाड़ी .....

(ख) ग्यारह से पंद्रह वर्ष तक का बालक .....

(ग) सोने के आभूषण बनाने वाला .....

(घ) रोगी का आहार .....

3. निम्नलिखित मुहावरों और लोकोक्तियों की अलग-अलग सूची बनाइए–

कड़वाहट आना, दूध का दूध-पानी का पानी, निर्वाह करना, पंचायत बिठाना, अधजल गगरी छलकत जाए, चक्कर लगाना, तंग आना, आप भला तो जग भला

मुहावरे – .....

लोकोक्तियाँ – .....

विषय संवर्धक क्रियाकलाप

सोचिए और बताइए

1. 'सत्यमेव जयते' इस पर अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।
2. अगर आपको एक दिन के लिए न्यायाधीश या सरपंच बनाया जाए तो आप किस तरह का काम करेंगे? एक सूची बनाइए–

(क) .....देशद्रोहियों को सज़ा दिलाएँगे।.....

(ख) .....

(ग) .....

(घ) .....

(ङ) .....

क्रियाकलाप

1. 'न्याय देवता के सामने सभी समान होते हैं', इस विषय पर चर्चा कीजिए और न्याय के महत्व को स्पष्ट करते हुए एक कहानी लिखिए।
2. इस चित्र को देखकर आपके मन में क्या भाव आते हैं? इन दोनों के बीच होने वाले वार्तालाप को लिखिए–

संवाद लेखन–

मौसी .....

.....

अलगू चौधरी .....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

गतिविधि-2

ग्राम्य और शहरी जीवन

कृषि (खेती-बाड़ी)
Agriculture

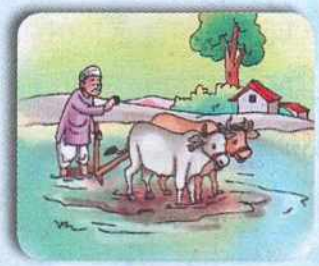

किसान
Farmer

लोक कला
Folk arts

घर (मकान)
House

चौपाल
Meeting Place

नदी
River

मंदिर
Temple

गौशाला
Cow Farms

बैलगाड़ी
Bullock Cart

अध्यापन-संकेत–गाँव के जीवन तथा शहर के जीवन में क्या फ़र्क है? इसकी वर्ग में चर्चा कीजिए। शहरी जीवन के चित्रों का संग्रह कीजिए।

अतिरिक्त पठन

मीनल की चिन्नी

'जीवदया' सबसे श्रेष्ठ है। प्राणियों के प्रति जो प्रेम-भाव जताता है वह 'मानवता' की कद्र करता है। बच्चों के मन में प्राणियों के प्रति प्रेम भाव जगाना इस कहानी का उद्देश्य है।

परीक्षा समाप्त हो चुकी है। छुट्टियाँ शुरू हो गई हैं। गरमी बहुत तेज़ होने लगी है। सारे बच्चे दिन भर अपने घर में दुबके रहते। शाम को ही बाहर खेलने निकलते। मीनल भी दोपहर में ड्राइंग करने और हारमोनियम बजाने में व्यस्त रहती फिर शाम को सोसाइटी के पार्क में अपने दोस्तों के साथ खो-खो, सितोलिया और कभी क्रिकेट खेलती। एक दोपहर वह एक चित्र में रंग भर रही थी तभी उसे आँगन में कुछ गिरने की आवाज़ आई। उसने खिड़की में से झाँककर देखा तो उसे एक गोरैया नीचे गिरी हुई दिखी। वह दौड़कर आँगन में पहुँची। गोरैया नीचे पड़ी हुई तड़प रही थी। उसने जल्दी से उसे उठाया। वह गिरने से घायल हो गई थी। उसे उठाकर वह अंदर मम्मी के पास ले गई।

"माँ! देखो, चिड़िया को कुछ हो गया है।"

"बेटा! ये गरमी से बेहाल है। शायद प्यासी है।"

"माँ ये पानी कहाँ से पीती है?" मीनल उसकी हालत देखकर दुखी थी।

"बेटा! ये नदी-तालाब के किनारे, बारिश का भरा हुआ पानी या कहीं भी, जहाँ इन्हें पानी भरा दिख जाता है उसे पीकर अपनी प्यास बुझाती हैं। इसके लिए बहुत थोड़ा-सा पानी पर्याप्त होता है।" माँ ने समझाया।

"तो फिर इसने आज पानी क्यों नहीं पिया?"

"बेटा! इन दिनों नदी-तालाब सूख जाते हैं। कहीं और भी इन्हें पानी नहीं मिल पाता।"

"ओ माँ! ये तो बड़े दुख की बात है। मैं तो बिना पानी के रह ही नहीं पाती।" उसने चिड़िया को गोद में लिए हुए कहा।

"हाँ बेटा! मैंने भी कभी इस ओर ध्यान हीं नहीं दिया। ये मेरी गलती है। हम इनसान इनके लिए इतना-सा काम भी नहीं कर पाते। ये अपने दाने-पानी के लिए दर-दर भटकती हैं। इसीलिए इनकी संख्या में तेज़ी से गिरावट आई है। पर अब बातें ही करती रहोगी या इसे पानी भी पिलाओगी।" वह जल्दी से पानी लेकर आई। माँ की सहायता से उसकी चोंच में एक-एक बूँद डालने लगी। पानी के कुछ छींटे उसके मुँह पर डाले। पानी पीते ही वह ठीक हो गई। धीरे-धीरे उसने आँखें खोल दी। माँ ने एक प्लेट में कुछ चावल लाकर उसके सामने रख दिए। वह पंख फडफड़ाकर उठी और चावल खाने लगी। मीनल उसे स्वस्थ देखकर खुशी से फूली नहीं समा रही थी।

"माँ यह तो ठीक हो गई।" वह उसे सहलाने लगी। मीनल का प्यार देखकर उसका डर जाता रहा। मीनल माँ से बोली, "माँ अब हम इसे घर में ही रखेंगे। पर पिंजरे में नहीं। इसका नाम रखेंगे– चिन्नी।"

"ठीक है बेटा, इसको दाना-पानी देना तुम्हारा काम है।"

"हाँ मैं अपनी चिन्नी का पूरा ध्यान रखूँगी। आज से हम दोस्त हुए।" वह बहुत खुश थी। शाम को ही पापा के साथ जाकर दो सकोरे ले आई। एक में चावल और दूसरे में पानी भरकर बालकनी की मुँडेर पर रख दिए। अब तो चिन्नी पूरे घर में फुदकती फिरती। जब भी भूख-प्यास लगती सकोरे में से जाकर खा लेती। चिन्नी को देखकर अन्य चिड़ियाँ भी बालकनी में आकर दाना खाने लगीं। गरमी लगती तो वे सकोरे में बैठकर खूब नहातीं। मीनल उन्हें देख-देखकर खुश होती। अगले सप्ताह मीनल का जन्मदिन आ रहा था। माँ तैयारियों में लगी थी। मीनल सबसे अधिक खुश चिन्नी को लेकर थी। उसको अपने सभी दोस्तों से मिलवाने की उसे बड़ी जल्दी थी। नियत दिन शाम को एक-एक करके जब सारे दोस्त आ गए तो मीनल ने उनसे कहा, "आज मैं तुम सभी को एक नए दोस्त से मिलवाऊँगी।"

सारे दोस्त एक-दूसरे का मुँह देखने लगे। उन्हें उत्सुकता थी नए दोस्त से मिलने की। सोनू बोली, "कहाँ है दोस्त? जल्दी मिलवाओ ना।"

बस अभी लाई कहकर मीनल बालकनी में फुदक रही चिन्नी को अपने हाथों में कोमलता से पकड़कर दोस्तों के बीच ले आई। "तो यह है मेरी नई दोस्त, चिन्नी।"

"यह तो बहुत प्यारी है।" सोनू, चिन्नी को सहलाते हुए बोली।

"हाँ सच में बहुत सुंदर है कहाँ मिली? कैसे मिली?" सारे दोस्तों ने प्रश्नों की झड़ी लगा दी। सब उसे छूना चाहते थे।

तभी माँ ने आकर समझाया कि, "बेटा! आप सब एक साथ उस पर टूट पड़ोगे तो वह डर जाएगी। एक-एक करके मिलोगे तो वह सबसे मिल पाएगी।"

"जी आंटी! आप सही कह रही हैं।" सोनू बोली। सारे दोस्तों ने बारी-बारी चिन्नी को प्यार किया। मनु बोला, "मैं भी लाऊँगा ऐसी ही एक दोस्त।"

"और मैं भी।" सोनू के तो मन में चिन्नी बस गई थी। केवल सोनू और मनु ही नहीं सारे दोस्त चिन्नी पर लट्टू थे।

"तुम सब इनके लिए दाना-पानी रखोगे तो ये स्वयं चलकर तुम्हारे पास आएँगी।" मीनल ने कहा।

"कल ही माँ से कहकर सकोरे मँगवा लूँगा।" मनु खुश था।

"सकोरे न भी मँगवाओ तो किसी टीन या प्लास्टिक के डब्बे में भी दाना-पानी रखा जा सकता है। वैसे अभी एक सरप्राइज़ और बाकी है तुम सब के लिए।" मीनल मुसकराते हुए बोली।

"जल्दी बताओ", सभी उत्सुक थे।

"रुको पहले मेरे जन्मदिन कि पार्टी तो हो जाने दो। वैसे भी सब्र का फल मीठा होता है।" सबने मिठाई और नमकीन पर खूब हाथ साफ़ किया। माँ के हाथ के लड्डू सभी को बहुत पसंद आए। बाद में सबने नींबू की शिकंजी पी। बच्चों के साथ चिन्नी भी बड़ी खुश थी। वह सबसे घुल-मिल गई थी। चीं-चीं करके यहाँ-वहाँ फुदक रही थी। जब, सब दोस्त अपने घर जाने लगे तो मीनल ने सबको एक-एक सकोरा रिटर्न गिफ्ट दिया।

"अच्छा तो यह था सरप्राइज़।" दोस्तों ने खुश होकर कहा। वे सब सकोरे लेकर फूले नहीं समा रहे थे। अगले दिन से सभी बच्चों ने अपने-अपने घरों में चिड़ियों के लिए दाना-पानी रखना प्रारंभ कर दिया। सबके घरों में चिड़ियों की चहचहाहट गूँजने लगी। मीनल की चिन्नी तो, यूँ भी बहुत खुश थी। उसे मीनल जैसा दोस्त जो मिल गया था।

–नीना सिंह सोलंकी

3 ईश्वर जो करता है, अच्छा ही करता है

चिंतन-मनन

ईश्वर एक अनदेखी लेकिन अनुभव की जाने वाली शक्ति है। वह संसार का निर्माता है। वह जो भी करता हैं, सोच-समझकर करता है। लेकिन मनुष्य बिना-सोचे समझे भगवान (ईश्वर) पर दोष थोप देता है।

एक बार दो मित्र निखिल और गौरव नगर की ओर गए। निखिल छोटा और गौरव लंबा था। निखिल बोला–"तुम ईश्वर के श्रेष्ठ भक्त हो। तुम उसकी सारी रचना को दोष रहित मानते हो लेकिन मैं देखता हूँ कि ईश्वर की रचना त्रुटिपूर्ण है। इधर ही देखो, तरबूज और पेठा (सीताफल) तो लताओं पर लगे हैं। ये लताएँ कमज़ोर और पतली हैं। ईश्वर ने मोटे और भारी फल तो लताओं पर उगा दिए और मोटे तथा बड़े वृक्षों पर जामुन आदि छोटे-छोटे फल लगा दिए। आश्चर्य है कि ईश्वर की यह रचना दोष से भरी है।"

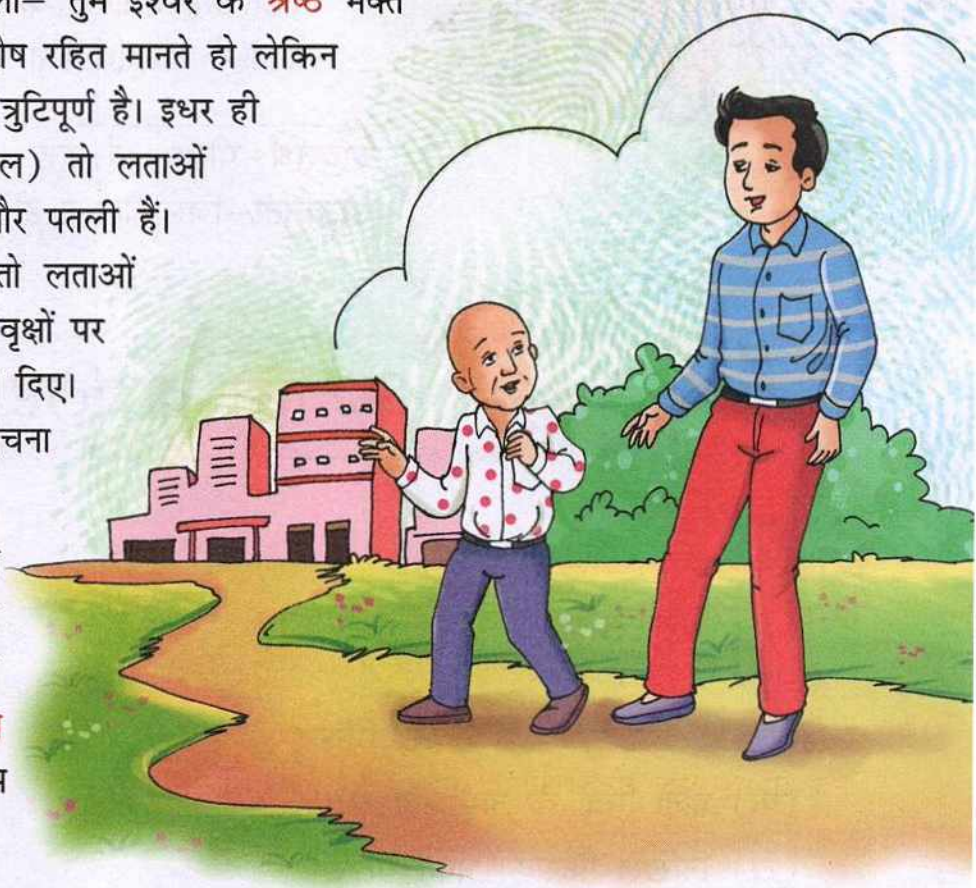

दोषों को देखने वाला निखिल सिर से गंजा था। वह सूर्य की गरमी से व्याकुल होकर मित्र से बोला–"यह हरा-भरा विशाल वृक्ष है। आओ, वृक्ष के नीचे आराम करते हैं।"

शब्दार्थ–मित्र–दोस्त, मीत (Friend), **श्रेष्ठ**–महान (best), **लताएँ**–बेल (climbers), **आश्चर्य**–अचरच (astomish), **गंजा**–सिर पर बाल न होना (bald), **वृक्ष**–पेड़ (tree)

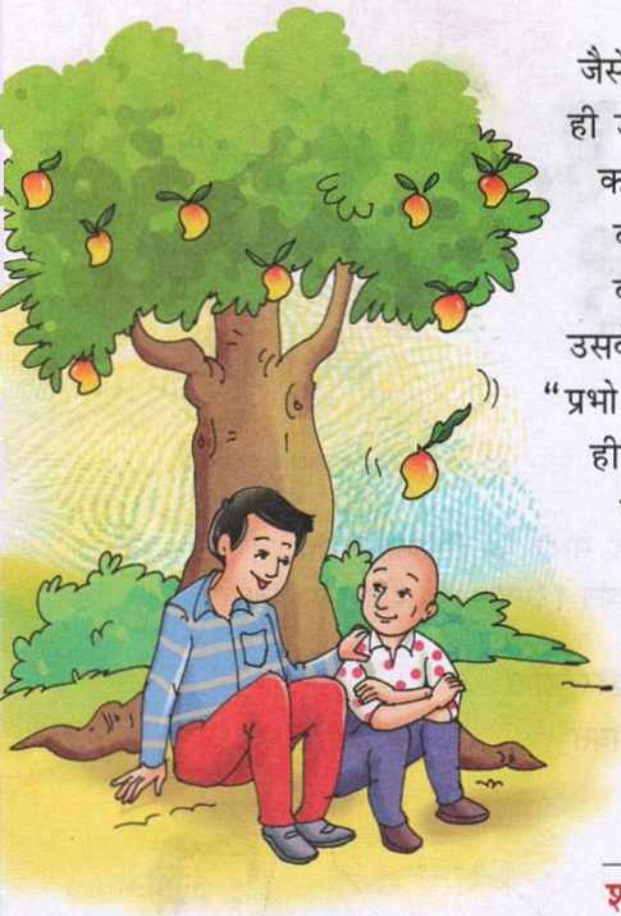

जैसे ही वह वृक्ष के नीचे गया, वैसे ही उसके गंजे सिर पर एक आम का फल गिरा। वह पीड़ा से बोला– "मेरे सिर पर वज्रपात हुआ।" फिर उसके मुख से निकला– "प्रभो! तुम्हारी रचना दोष हीन है। यदि इस वृक्ष पर तरबूज होता, तो मेरे सिर पर काफी चोट लग जाती। अवश्य ही मैं मूर्ख हूँ। सच ही है कि ईश्वर जो करता है, अच्छा ही करता है।"

तब गौरव बोला–"सत्य है कि ईश्वर की रचना दोष रहित है। अज्ञानता के कारण हम सब उसके महत्व को जानने में असमर्थ होते हैं।"

शब्दार्थ–पीड़ा–दर्द, दुख (trouble),
अज्ञानता–जिसे ज्ञान न हो (darkness)

अभ्यास के लिए

मौखिक

- **कम-से-कम शब्दों में उत्तर दीजिए–**

(क) दोनों मित्रों के नाम क्या थे?

(ख) निखिल किसका भक्त था?

(ग) गंजा कौन था?

(घ) मनुष्य कब असमर्थ कहलाता है?

लिखित

1. किसने कहा, किससे कहा?

(क) "तुम ईश्वर के श्रेष्ठ भक्त हो।" ....

(ख) "मेरे सिर पर वज्रपात हुआ।" ....

(ग) "सत्य है कि ईश्वर की रचना दोष रहित है।" ....

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) 'ईश्वर की रचना दोष रहित है' क्या आप इस विचार से सहमत हैं?

(ख) आपको ईश्वर की कौन-कौन सी रचना श्रेष्ठ लगती है?

(ग) संसार को मनुष्य ने बनाया है या ईश्वर ने, तर्क सहित उत्तर लिखिए।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तारपूर्वक लिखिए–

(क) ईश्वर की माया, कहीं धूप कहीं छाया। इस लोकोक्ति का अर्थ सरल भाषा में लिखिए।

(ख) निखिल को ईश्वर की रचना दोष हीन कब और क्यों लगी?

भाषा ज्ञान

1. पाठ में 'मित्र' शब्द का प्रयोग किया गया है। 'मित्र' के लिए सखा, दोस्त आदि शब्दों का भी प्रयोग किया जाता है। ऐसे शब्दों को पर्यायवाची शब्द कहते हैं।

निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची लिखिए–

(क) ईश्वर – ..... (ख) त्रुटि – .....

(ग) वृक्ष – ..... (घ) सूर्य – .....

(ङ) पीड़ा – ..... (च) सत्य – .....

2. किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान या भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं; जैसे– निखिल, गौरव आदि।

पाठ में से कुछ संज्ञा शब्द चुनकर लिखिए–

....

....

विषय संवर्धक क्रियाकलाप

सोचिए और बताइए

- अगर आपके सामने ईश्वर आ जाएँ, तो आप उनसे क्या माँगेगें– विद्या, धन या सद्बुद्धि? इसका कारण भी बताइए।

.....

.....

.....

.....

क्रियाकलाप

- कल्पना शक्ति और शब्द ज्ञान से 'शब्द-सीढ़ी' की कड़ियाँ जोड़िए–

1. 'समुद्र' का पर्यायवाची शब्द
2. जो बहुत रोबीला हो
3. एक सफ़ेद धातु
4. युद्ध में काम आने वाली वस्तु
5. सरदी में ओढ़ने के काम आती है
6. रसयुक्त खाने की चीज़
7. एक छोटा पशु
8. ज़मीन में उगने वाली एक सब्ज़ी

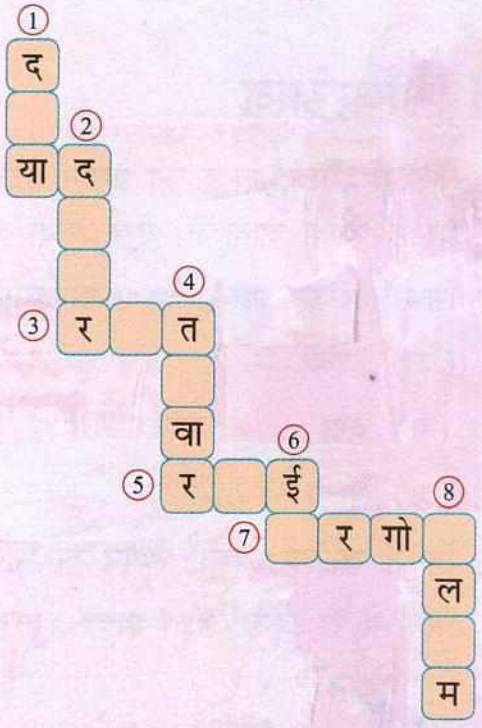

गतिविधि-3

गांधी जी के तीन बंदर

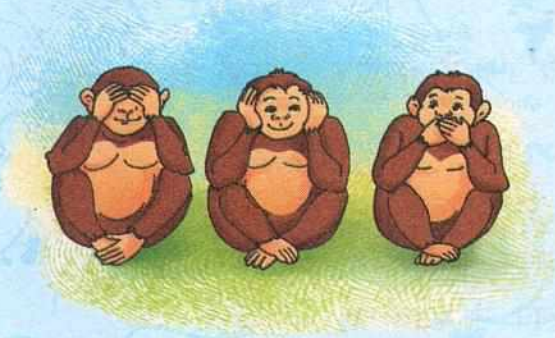

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

अध्यापन-संकेत–बुरा मत देखो, बुरा मत सुनो, बुरा मत बोलो– इन तीन बातों को ध्यान में रखकर कहानी लिखवाइए।

4 नन्हे-मुन्ने प्यारे बच्चे

चिंतन-मनन

आज के बच्चे कल के नागरिक हैं, उन्हीं पर देश का भविष्य निर्भर करता है। वे देश के निर्माता और भाग्य विधाता हैं।

नन्हे-मुन्ने प्यारे बच्चे,
कोमल कुसुम समान।
इनके खिलने से महकेगा,
सारा हिंदुस्तान।।

भोली-भाली प्यारी सूरत,
अमृत-सी मुसकान।
पल में रूठे पल में मानें,
करें न ये अभिमान।।

मीठी मधुर तोतली वाणी,
में है कितना ज्ञान।
निर्मल किलकारी पर इनकी,
ईश्वर भी कुर्बान।।

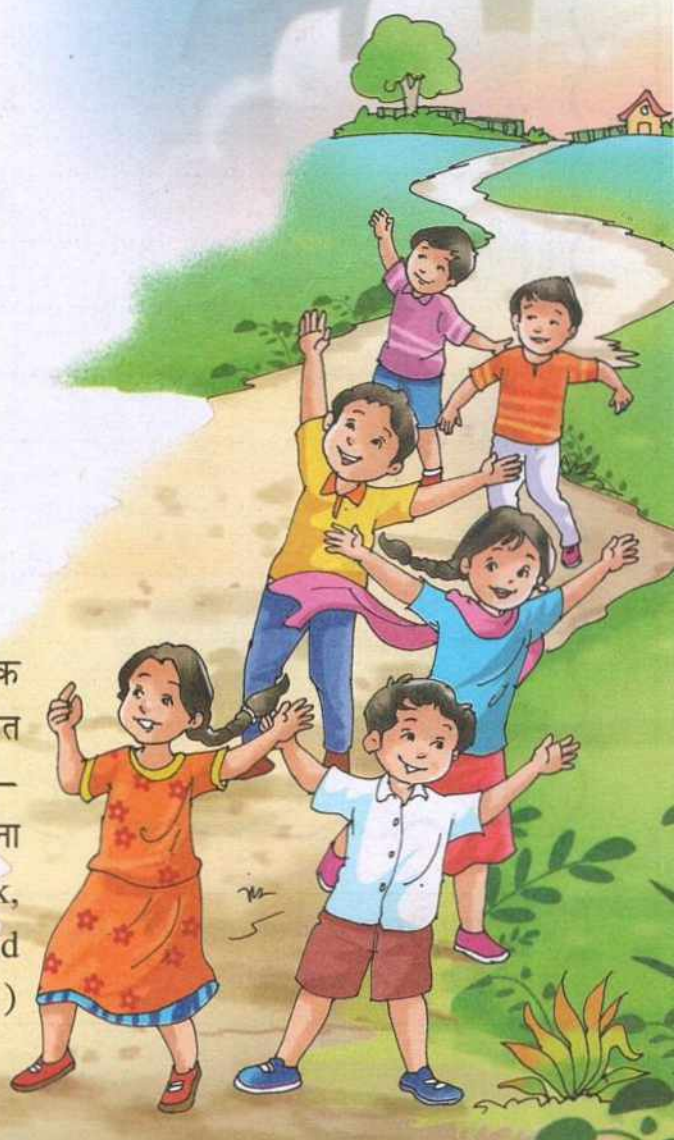

शब्दार्थ–**नन्हे**–छोटे (small children), **कोमल**–नाजुक (delicate), **कुसुम**–पुष्प (flower), **महकना**–सुगंधित (fragrance), **अमृत**–सुधा, मधु (necter), **रूठना**–अप्रसन्न होना (to get angry), **अभिमान**–घमंड करना (proud), **तोतली**–बच्चों की बोली (child talk, stammer), **किलकारी**–बच्चों का चहकना (sound made by child), **कुर्बान**–निछावर करना (to sacrifice)

बच्चे होते सबसे अच्छे,
वे अमूल्य वरदान।
जो आगे चलकर रखते हैं,
देश धर्म का मान।।

ये भारत के भाग्य विधाता,
ये भारत की शान।
इनके खिलने से महकेगा,
सारा हिंदुस्तान।।

–डॉ. परशुराम शुक्ल

('चारों खाने चित' से अवतरित)

शब्दार्थ–अमूल्य–कीमती (precious), **शान**–उत्तम, बढ़िया (glory), **महकेगा**–खुशबू, महक (fragrance)

कवि परिचय

डॉ. परशुराम शुक्ल का जन्म 6 जून, 1947 को कानपुर में हुआ। इन्होंने एम०ए० तथा पीएच०डी० की उपाधि प्राप्त की है। शुक्ल जी सशक्त बाल-साहित्यकार के रूप में प्रसिद्धि पा चुके हैं। इनके लगभग 42 बाल-कविता संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। इन्होंने बाल नाटक, कहानियाँ और दोहे भी लिखे हैं, जो बच्चों की मनोवैज्ञानिक स्थिति को प्रधानता से प्रस्तुत करते हैं। ये एक सहृदयी, कोमल भावना के कवि हैं।

अभ्यास के लिए

मौखिक

- **कम-से-कम शब्दों में उत्तर दीजिए–**

(क) प्यारे बच्चे किसके समान होते हैं?
(ख) बच्चों की मुसकान कैसी है?
(ग) बच्चों की वाणी कैसी होती है?
(घ) बच्चे किसका मान रखते हैं?
(ङ) बच्चों के खिलने से क्या होगा?

लिखित

1. रिक्त स्थान भरिए–

(क) मीठी मधुर ..... वाणी।

(ख) पल में ..... पल में .....।

(ग) ये भारत के भाग्य .....।

(घ) बच्चे होते सबसे .....।

(ङ) वे ..... वरदान।

2. मिलान कीजिए–

(क) नन्हे मुन्ने प्यारे बच्चे	(*i*) ईश्वर भी कुर्बान।
(ख) भोली-भाली प्यारी सूरत	(*ii*) कोमल कुसुम समान।
(ग) निर्मल किलकारी पर इनकी	(*iii*) सारा हिंदुस्तान।
(घ) इनके खिलने से महकेगा	(*iv*) देश धर्म का मान।
(ङ) जो आगे चलकर रखते हैं	(*v*) अमृत-सी मुसकान।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) ईश्वर किस पर कुर्बान होते हैं?

(ख) नन्हे बच्चों की तुलना किससे की गई है?

(ग) बच्चे भगवान का रूप होते हैं, कैसे?

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तारपूर्वक लिखिए–

(क) देश का भविष्य बच्चों पर निर्भर होता है, कैसे?

(ख) आप अपने देश के लिए क्या-क्या करेंगे?

भाषा ज्ञान

1. किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान और भाव के नाम को **संज्ञा** कहते हैं; जैसे–राम, दिल्ली, पुस्तक, बचपन आदि।

संज्ञा के तीन भेद होते हैं–

संज्ञा के भेद

- व्यक्तिवाचक संज्ञा
- जातिवाचक संज्ञा
- भाववाचक संज्ञा

1. **व्यक्तिवाचक संज्ञा**– जिस शब्द से किसी विशेष व्यक्ति, वस्तु अथवा स्थान के नाम का बोध हो; जैसे– आगरा, महात्मा गांधी, ताजमहल आदि।
2. **जातिवाचक संज्ञा**– जिस शब्द से एक जाति के सभी प्राणियों अथवा वस्तुओं का बोध हो; जैसे– मेज़, पक्षी, लड़का आदि।
3. **भाववाचक संज्ञा**– जिस शब्द से किसी व्यक्ति, स्थान अथवा वस्तु के गुण, दोष, दशा आदि का बोध हो; जैसे– सुंदरता, साहस, सरदी आदि।

निम्नलिखित शब्दों को संज्ञा के भेदों के अंतर्गत लिखिए–

बच्चा	हिंदुस्तान	गुलाब	बकरी	भारत	दूध	सेवा	दिल्ली
सत्य	मान	देश	कोमलता	लालच	रामायण	गुजरात	

व्यक्तिवाचक संज्ञा – .....

.....

जातिवाचक संज्ञा – .....

.....

भाववाचक संज्ञा – .....

.....

2. निम्नलिखित वाक्यों में आए संज्ञा शब्दों को रेखांकित कीजिए और उनके भेदों के नाम लिखिए–

(क) बच्चे सबको अच्छे लगते हैं। .....

(ख) ईश्वर सबका साथ देते हैं। .....

(ग) भारत एक विशाल देश है। .....

(घ) अमृत-सी मुसकान है। .....

(ङ) विनय बहुत ही कोमल है। .....

(च) हम सब दिल्ली घूमने जाएँगे। .....

विषय संवर्धक क्रियाकलाप

सोचिए और बताइए

- "ये भारत के भाग्य विधाता,
  ये भारत की शान।
  इनके खिलने से महकेगा,
  सारा हिंदुस्तान।।"

  ऊपर दी गई पंक्तियों के माध्यम से कवि क्या कहना चाहते हैं? 'महकेगा हिंदुस्तान' का तात्पर्य क्या है?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

क्रियाकलाप

- नीचे कुछ शब्द संकेत दिए गए हैं। उनकी सहायता से कविता लिखने का प्रयास कीजिए–

  मैं नन्हा बालक ..... भारतवासी ..... संस्कृति का पुजारी ..... भारत है शान ..... मैं बड़ा बनकर गौरव बढ़ाऊँगा ..... भारत की शान बढ़ाऊँगा।

  कविता का उचित शीर्षक भी दीजिए।

अतिरिक्त पठन

बीरबल की खिचड़ी

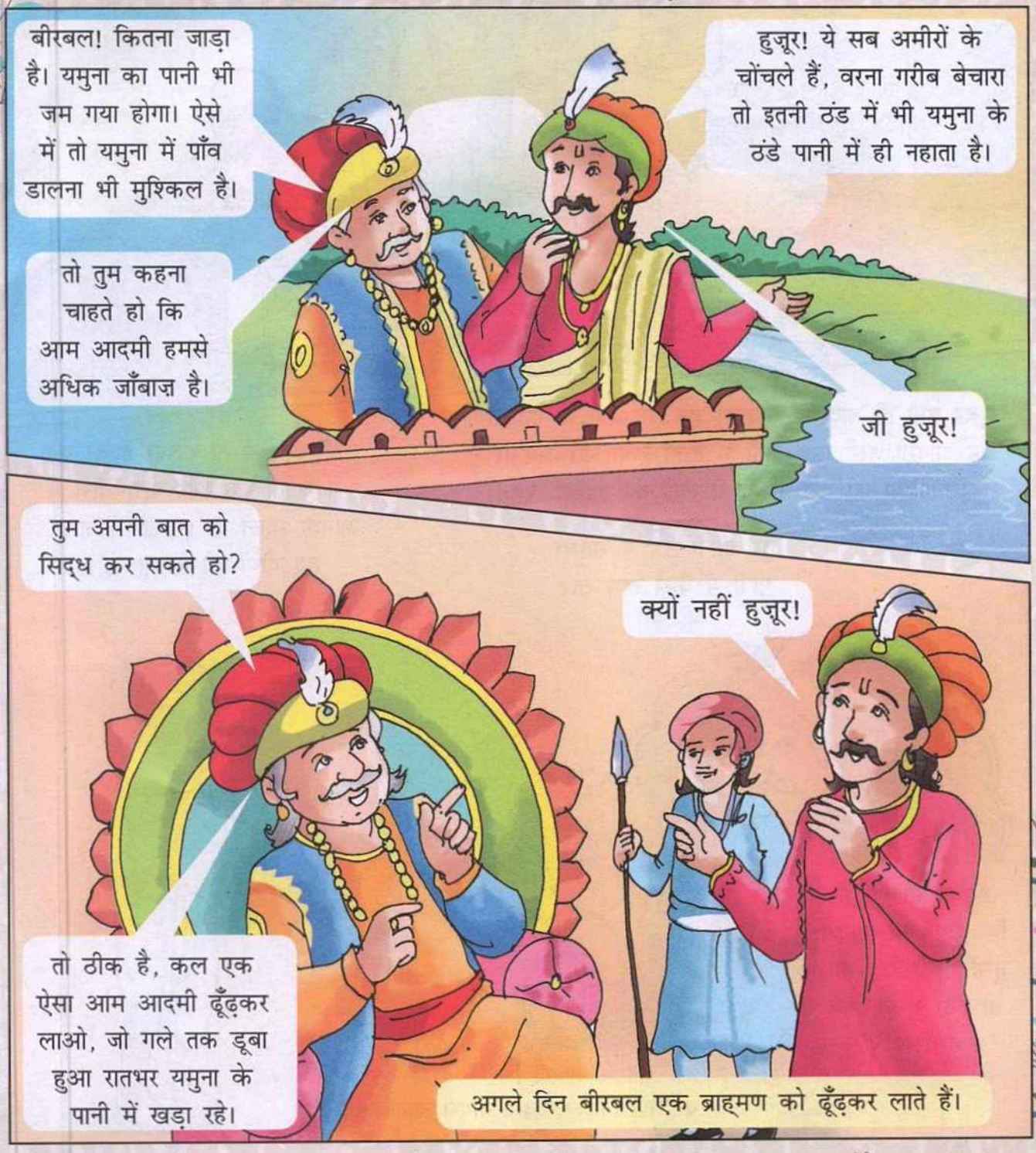

सुबह होते ही बादशाह अकबर छत पर आए तो देखा कि वह आदमी उसी तरह पानी में खड़ा हुआ था। अकबर ने सिपाहियों को उसे दरबार में लाने का आदेश दिया।

तुम इतनी ठंड में रातभर पानी में कैसे खड़े रहे?

जहाँपनाह! मैं तो रातभर ईश्वर का नाम जपता रहा और बीच-बीच में आपके महल के झरोखों में जलते हुए दीयों को देखता रहा।

इसका मतलब है कि दीयों का प्रकाश तुम्हें गरमी देता रहा, तो फिर तुम्हें इनाम किसलिए दूँ?

ब्राह्मण निराश होकर वापस चला जाता है।

अगले दिन बीरबल दरबार नहीं आए। एक दिन बीता, दो दिन बीते, ऐसे कई दिन बीत गए, बीरबल नहीं आए। तब बादशाह अकबर स्वयं पता करने उनके घर पहुँचे।

बीरबल! इतने दिनों से दरबार क्यों नहीं आ रहे हो?

हुजूर आप! देखिए न, मैं कब से खिचड़ी पकाने में लगा हुआ हूँ। पक ही नहीं रही है।

अकबर बरतन की तरफ देखते हैं।

बीरबल, ऐसे खिचड़ी कैसे बनेगी? तुम्हारा बरतन तो आग से इतनी दूर है?

क्यों नहीं हुजूर! जब उस ब्राह्मण को इतनी दूर महल के जलते दीयों से गरमी मिलती रही, तो इस बरतन को भी गरमाहट मिल ही रही होगी!

इतना सुनते ही अकबर को अपनी गलती का अहसास हो गया और उन्होंने बीरबल को गले से लगा लिया।

उस ब्राह्मण को कल दरबार में ले आना। और हाँ, तुम भी कहीं खिचड़ी ही पकाते न रह जाना।

5 तमिलनाडु

चिंतन-मनन

भारत बहुभाषीय देश है। यहाँ कला, संस्कृति, धर्म, भाषा को लेकर हर एक राज्य अपनी अलग-अलग परंपरा लिए खड़ा है। दक्षिण प्रांत में तमिलनाडु का अपना अलग महत्व है। यहाँ की कला, संस्कृति, रहन-सहन की जानकारी देना इस पाठ का प्रमुख उद्देश्य है। भारत के अलग-अलग राज्य की अपनी अनोखी शान है।

धान के लहलहाते खेत, हरी-भरी नीलगिरि पर्वत शृंखलाएँ तथा समुद्र की उठती-गिरती लहरें और प्रकृति से संपन्न भारत के दक्षिणी छोर पर बसा एक राज्य है– तमिलनाडु।

दक्षिण भारत के इस प्रदेश की संस्कृति प्राचीनतम तथा अनूठी है। यहाँ के मूल निवासी 'द्रविड़' हैं तथा भाषा 'तमिल' है। प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर इस राज्य में मूर्ति और भवन-निर्माण के सुंदर नमूनों को देखा जा सकता है। प्राचीन मंदिरों के रूप में यहाँ भारतीय कला तथा वास्तुशिल्प के सुंदर रूप के दर्शन होते हैं। यहाँ के मंदिर देखने योग्य हैं। मदुरै का मीनाक्षी मंदिर, कांचीपुरम का वरदराज मंदिर तथा कामाक्षी मंदिर वास्तुकला और मूर्तिकला का अनोखा संगम लिए खड़े हैं। यहाँ के मंदिरों के कारण तमिलनाडु को 'मंदिरों का राज्य' भी कहा जाता है।

मदुरै का मीनाक्षी मंदिर अत्यंत सुंदर है। यह डेढ़ किलोमीटर लंबी पहाड़ियों को काटकर बनाया गया है। तमिलनाडु के दर्शनीय स्थानों में सबसे ऊपर चिदंबरम नामक स्थान है जहाँ नृत्य मुद्रा में

मीनाक्षी मंदिर

रामेश्वरम

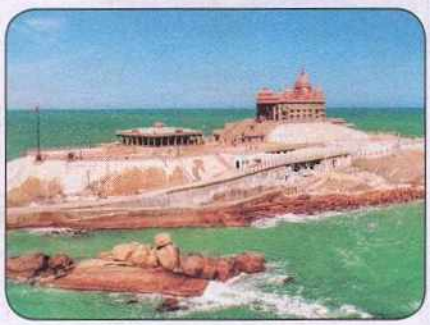

कन्याकुमारी

शब्दार्थ–**शृंखलाएँ**–कतारें (series), **संपन्न**–भरा हुआ (rich), **अनूठी**–विशेष (special)

नटराज शिव की मूर्ति है। इस प्रकार की यह एकमेव मूर्ति है। धार्मिक स्थलों में कन्याकुमारी तथा रामेश्वरम प्रसिद्ध हैं। रामेश्वरम के शिवमंदिर का संबंध रामायण से है। शिल्प की दृष्टि से यह मंदिर भारत में प्रसिद्ध है। मीठे पानी के कुंड यहाँ का आकर्षण हैं। कन्याकुमारी का मंदिर भी दर्शनीय है। समुद्र के किनारे स्थित इस मंदिर के आस-पास की रेत अलग-अलग रंग की है।

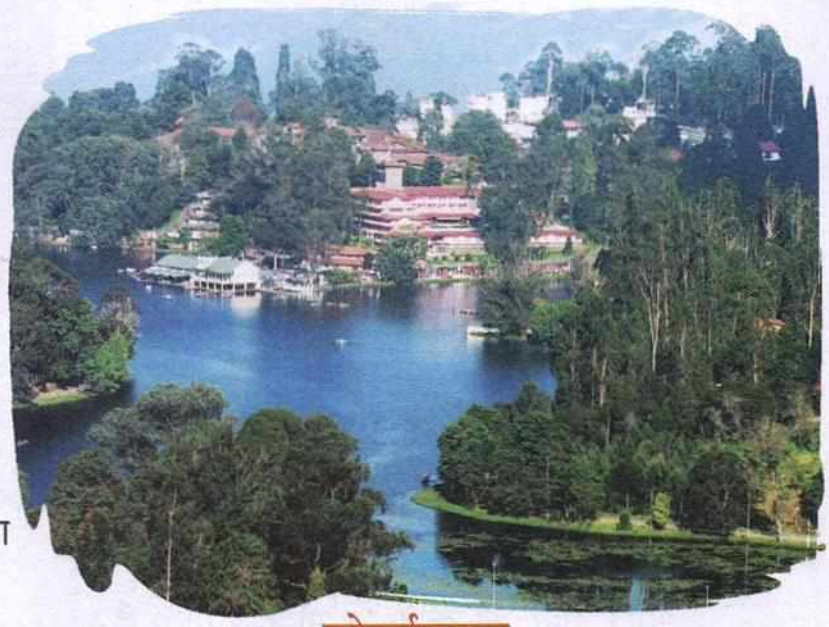

कोडाईकनाल

तमिलनाडु अपनी संस्कृति के लिए प्रसिद्ध है। यह संत कवि तिरुवल्लुवर की जन्मभूमि है। इनकी कृति 'तिरुक्कुरल' को तमिल भाषा के वेद के रूप में मान्यता प्राप्त है। कोडाईकनाल तथा उदकमंडल यहाँ के पर्वतीय स्थल हैं। सात हज़ार फीट की ऊँचाईवाला कोडाईकनाल सैलानियों को अत्यंत प्रिय है।

मदुमलई अभयारण्य

यहाँ के निवासियों का रहन-सहन सीधा-सादा है। नारियल, कॉफ़ी, काजू और चावल यहाँ की प्रमुख उपज हैं। संगीत और नृत्य प्रेमी लोग धार्मिक प्रवृत्ति के हैं। तमिलनाडु का मदुमलई स्थित अभयारण्य देखने योग्य है। यह कहना गलत नहीं होगा कि तमिलनाडु प्राकृतिक, सांस्कृतिक तथा पौराणिक वैभव से संपन्न एक अनूठा प्रदेश है। इसके साथ चेन्नई जैसा औद्योगिक और विकसित शहर भारत के साथ-साथ विश्व के नक्शे पर अपना स्थान बनाए हुए है।

शब्दार्थ–प्रसिद्ध–विख्यात (famous), **आकर्षण**–खिंचाव (attraction), **संस्कृति**–सभ्यता (culture), **सैलानी**–सैर करने वाला (tourist), **धार्मिक**–धर्म से संबंधित (religious), **पौराणिक**–पुराण से संबंधित (mythological), **औद्योगिक**–उद्योग संबंधी (industrial), **नक्शा**–मानचित्र (map)

अभ्यास के लिए

मौखिक

• **कम-से-कम शब्दों में उत्तर दीजिए–**

(क) भारत के दक्षिणी छोर पर कौन-सा राज्य है?

(ख) तमिलनाडु की राज्यभाषा कौन-सी है?

(ग) मदुरै का कौन-सा मंदिर प्रसिद्ध है?

(घ) तमिलनाडु को 'मंदिरों का राज्य' क्यों कहते हैं?

(ङ) नटराज शिव की मूर्ति कहाँ है?

(च) शिव मंदिर का संबंध किससे है?

(छ) तमिल भाषा के वेद की उपमा किसे दी जाती है?

(ज) तमिलनाडु की प्रमुख उपज कौन-सी है?

लिखित

1. रिक्त स्थान भरिए–

(क) तमिलनाडु की संस्कृति ..... तथा अनूठी है।

(ख) तमिलनाडु को ..... राज्य भी कहा जाता है।

(ग) तमिलनाडु में ..... भाषा बोली जाती है।

(घ) नृत्य मुद्रा में ..... शिव की मूर्ति है।

(ङ) यह संत कवि ..... की जन्मभूमि है।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) दक्षिण भारत के 'तमिलनाडु' की संस्कृति के बारे में लिखिए।

(ख) तमिलनाडु के मंदिरों की सूची बनाइए।

(ग) तिरुवल्लुवर के बारे में संक्षिप्त जानकरी दीजिए।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तारपूर्वक लिखिए–

(क) तमिलनाडु एक अनूठा प्रदेश क्यों हैं?

(ख) तमिलनाडु के दर्शनीय स्थलों के विषय में लिखिए।

भाषा ज्ञान

1. निम्नलिखित वाक्यों में संज्ञा को लाल रंग से रेखांकित कीजिए–

(क) कोडाईकनाल सैलानियों के लिए प्रिय है।

(ख) मीनाक्षी मंदिर अति सुंदर है।

(ग) कन्याकुमारी का मंदिर तमिलनाडु में है।

2. दिए गए संज्ञा शब्दों से उचित विशेषण बनाकर लिखिए–

संज्ञा	विशेषण	संज्ञा	विशेषण
चमक	चमकीला	परिवार	.....
झगड़ा	.....	भारत	.....
राष्ट्र	.....	प्यास	.....

3. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर रेखांकित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए–

दक्षिण भारत के इस प्रदेश की संस्कृति प्राचीनतम तथा अनूठी है। यहाँ के मूल निवासी 'द्रविड़' हैं तथा भाषा 'तमिल' है। प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर इस राज्य में मूर्ति और भवन-निर्माण के सुंदर नमूनों को देखा जा सकता है। प्राचीन मंदिरों के रूप में यहाँ भारतीय कला तथा वास्तुशिल्प के सुंदर रूप के दर्शन होते हैं। यहाँ के मंदिर देखने योग्य हैं।

....

4. पाठ के आधार पर वाक्य शुद्ध करके लिखिए–

(क) तमिलनाडु को मंदिरें के राज्य कहते हैं। .....

(ख) यहाँ के मंदिरों देखने योग्य हैं। .....

(ग) यहाँ के निवासियों की रहन-सहन सीधी-सादी है। .....

(घ) मदुरै का मीनाक्षी मंदिर अत्यंत सुंदरी है। .....

विषय संवर्धक क्रियाकलाप

सोचिए और बताइए

1. दक्षिणी राज्यों में आप किस राज्य की सैर करना पसंद करेंगे और क्यों?
2. दक्षिण भारत कला, संस्कृति का सागर है तो उत्तर भारत किन-किन चीज़ों के लिए प्रसिद्ध है, इस पर एक परिच्छेद लिखिए।
3. केरल, कर्नाटक और आंध्र प्रदेश अपनी कला और वास्तुशिल्प के लिए प्रसिद्ध हैं। हर एक प्रांत के एक-एक मंदिर का चित्र चिपकाकर उसकी वर्ग में चर्चा कीजिए।

केरल **कर्नाटक** **आंध्र प्रदेश**

क्रियाकलाप

- तमिलनाडु में महान कवियों ने साहित्य में अनूठा योगदान दिया है। उनके चित्रों का संग्रह कीजिए। जैसे–

भारतीयार

Bhartiyaar

....

गतिविधि-4

माँ

ईश्वर सब जगह नहीं
पहुँच पाया तो उसने माँ
को बनाया।

माँ बच्चे के लालन-पालन में
सर्वस्व न्योछावर करती है।

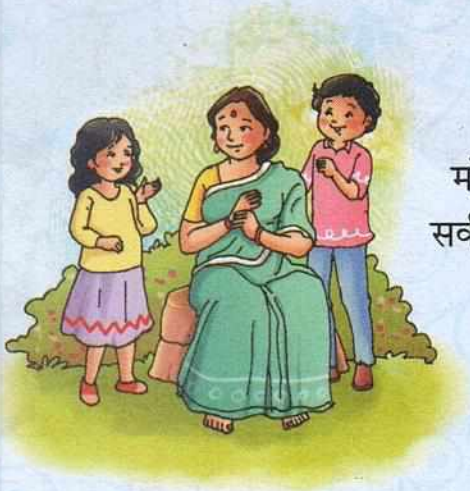

माँ बच्चों की
सर्वप्रथम गुरु है।

माँ सबका स्थान ले सकती
है, लेकिन... माँ का स्थान
कोई नहीं ले सकता।

अध्यापन-संकेत–'माँ' की महानता को लेकर वर्ग में चर्चा करके बच्चों को उस पर विचार प्रकट करने के लिए कहें। इसे संवाद के रूप में करवाएँ अथवा उक्तियों की पुस्तिका बनवाएँ।

6 हमारे प्रेरणा स्रोत- डॉ० अब्दुल कलाम

चिंतन-मनन

हर मनुष्य के जीवन में कोई-न-कोई ऐसा व्यक्ति होता है जिससे वह प्रभावित होता है। उसका हमारे जीवन पर गहरा असर पड़ता है। उसके जीवन से हम बहुत कुछ सीख सकते हैं। आइए, जानते हैं कि एक साधारण व्यक्ति किस प्रकार अपने असाधारण कार्य से महान बनता है।

जीवन में आगे बढ़ना हो तो हमें **प्रेरणा** की आवश्यकता होती है। समाज उन्हीं का अनुकरण करता है जिन्होंने जीवन में कुछ **हासिल** किया हो। ऐसे ही महान व्यक्तियों में से एक श्री अब्दुल कलाम जी हैं। इनका जन्म 15 अक्तूबर, 1931 को तमिलनाडु राज्य के रामेश्वरम कस्बे में एक **मध्यमवर्गीय** मुस्लिम परिवार में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री जैनुलआबिदीन था। पिता से ईमानदारी तथा माता से ईश्वर पर विश्वास और करुणा का उपहार इन्हें विरासत में मिला था। अपनी माँ और दादी से कलाम ने रामायण और मुहम्मद पैगंबर के किस्से सुने थे। इस प्रकार बचपन से ही अब्दुल कलाम ने जाति-भेद को अपने से दूर रखा था।

अध्यापकों के प्रति अब्दुल कलाम के मन में अगाध विश्वास और श्रद्धा थी। आगे चलकर भारत के राष्ट्रपति बनने पर भी उन्होंने इसका श्रेय अपने गुरुओं को दिया। अपने गुरु अयादुरै सोलोमन से वे काफ़ी प्रभावित थे। 'सफलता पाने के लिए जीवन में इच्छा, आस्था और आशा का होना ज़रूरी है', यह गुरु वाक्य अब्दुल कलाम के लिए 'गुरुमंत्र' बना।

शब्दार्थ–**प्रेरणा**–काम में लगने का प्रोत्साहन (inspiration), **हासिल**–प्राप्त करना (to achieve), **मध्यमवर्गीय**–मध्यवर्ग के लोग (middle class)

अब्दुल कलाम महान **वैज्ञानिक** थे। वैज्ञानिक होने के साथ-साथ वे गंभीर **चिंतक** तथा सच्चे इनसान भी थे। इनकी सादगी ही इनकी महानता थी। इनके कार्य को सराहते हुए भारत सरकार ने इन्हें 'पद्म विभूषण' तथा 'भारत रत्न' से सम्मानित किया। 'मिसाइल मैन' नाम से प्रसिद्ध अब्दुल कलाम जी कवि हृदयी तथा **मानवता** के पुजारी थे। श्री अब्दुल कलाम जी सादगी के अवतार थे। ये अनेक भारतीयों के लिए मार्गदर्शक तथा प्रेरणा स्रोत रहेंगे। इस महान प्रेरणा स्रोत ने 27 जुलाई, 2015 को संसार से विदा ली।

शब्दार्थ–**वैज्ञानिक**–विज्ञानी (scientist), **चिंतक**–आलोचक, विवेचक (thinker), **मानवता**–मनुष्यता (humanity)

अभ्यास के लिए

मौखिक

- **कम-से-कम शब्दों में उत्तर दीजिए–**

(क) समाज किसका अनुकरण करता है?
(ख) अब्दुल कलाम का जन्म कब हुआ था?
(ग) कलाम जी ने माता जी से किसकी कहानियाँ सुनी थीं?
(घ) अब्दुल कलाम के गुरु का नाम क्या था?
(ङ) कलाम जी की महानता किसमें थी?
(च) कलाम जी की मृत्यु कब हुई?

लिखित

1. रिक्त स्थान भरिए–

(क) जीवन में आगे बढ़ना हो तो हमें ..... की आवश्यकता होती है।
(ख) अब्दुल कलाम के पिता का नाम ..... था।
(ग) बचपन से ही अब्दुल कलाम ने ..... को अपने से दूर रखा।
(घ) अध्यापकों के प्रति अब्दुल कलाम के मन में अगाध ..... और ..... थी।
(ङ) अब्दुल कलाम महान ..... थे।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) अब्दुल कलाम जी का जन्म कब और कहाँ हुआ?

(ख) कलाम जी को कौन-कौन से पुरस्कारों से सम्मानित किया गया?

(ग) अब्दुल कलाम क्या कार्य करते थे और किस नाम से प्रसिद्ध हुए?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तारपूर्वक लिखिए–

(क) 'यदि लगन हो तो साधारण व्यक्ति भी असाधारण और असाध्य काम कर सकता है'–इस उक्ति से आप कहाँ तक सहमत हैं? अपने विचार लिखिए। **(मूल्यपरक प्रश्न)**

(ख) अब्दुल कलाम का जीवन-परिचय देते हुए गुरु के प्रति उनकी अटूट श्रद्धा एवं विश्वास के कारण लिखिए।

भाषा ज्ञान

1. जिस शब्द से किसी काम का करना या होना पाया जाता है, उसे **क्रिया** कहते हैं; जैसे–

(क) एक दिन बकरी बाड़े से भागी। (ख) रमेश पुस्तक पढ़ता है।

कर्म के आधार पर क्रिया के दो भेद हैं–

(क) अकर्मक क्रिया (ख) सकर्मक क्रिया

(क) **अकर्मक क्रिया–** अकर्मक वे क्रियाएँ हैं जिनके साथ कर्म न लगे तथा क्रिया का व्यापार और परिणाम दोनों कर्ता में रहें; जैसे–

- सोहन हँस रहा है।
- सीता सो रही है।
- आम मीठा है।

इन वाक्यों में क्रमशः सोहन, सीता व आम कर्ता हैं। हँस रहा है, सो रही है तथा है क्रिया है।

(ख) **सकर्मक क्रिया–** सकर्मक वे क्रियाएँ हैं जिनके साथ कर्म लगे तथा क्रिया का प्रभाव कर्म पर पड़े; जैसे–

- कमला ने खाना खाया।
- सीता गीत गा रही है।
- माँ ने चाय बनाई।

विशेष– क्रिया के साथ क्यों, किस और किसको प्रश्न जोड़े जाने पर यदि उचित उत्तर मिले तो क्रिया सकर्मक होती है और यदि उत्तर न मिले तो अकर्मक।

निम्नलिखित रिक्त स्थानों की पूर्ति दिए गए क्रिया शब्दों के सही रूप चुनकर कीजिए–

(क) करुणा का उपहार इन्हें विरासत में .....।

(*i*) मिलता (*ii*) मिला था (*iii*) मिलेगा (*iv*) मिलता रहेगा

(ख) कलाम ने जाति-भेद को अपने से दूर ..... ।

(*i*) रखना है (*ii*) रखना सोचा (*iii*) रख दिया (*iv*) रखा था

(ग) अब्दुल कलाम महान वैज्ञानिक ..... ।

(*i*) हुए (*ii*) थे (*iii*) होते (*iv*) बनेंगे

(घ) रामायण और मुहम्मद पैगंबर के किस्से ..... थे।

(*i*) सुने (*ii*) सुनने (*iii*) सुनी (*iv*) सुनना

(ङ) कलाम जी सदा हमेशा हमारे प्रेरणा स्रोत ..... ।

(*i*) होते हैं। (*ii*) थे (*iii*) रहेंगे (*iv*) रहते हैं।

2. निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

(क) श्रद्धा – .....बड़ों के प्रति मन में श्रद्धा होनी चाहिए।.....

(ख) समर्पित – .....

(ग) महानता – .....

(घ) सम्मानित – .....

(ङ) मानवता – .....

विषय संवर्धक क्रियाकलाप

सोचिए और बताइए

- नीचे दिए गए चित्रों के पर्यायवाची शब्द लिखिए–

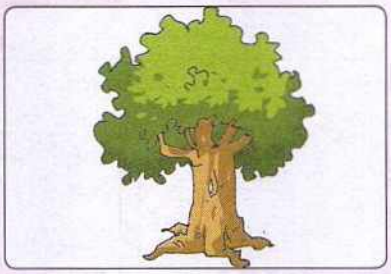

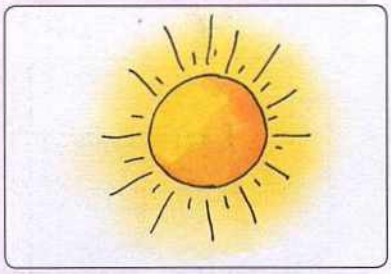

.....बंदर, वानर, कपि, मर्कट..... ....

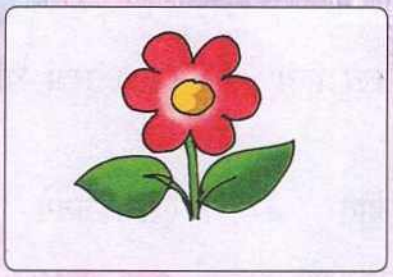

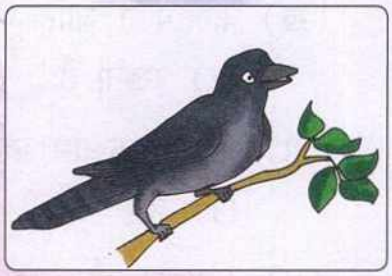

....

क्रियाकलाप

- अब्दुल कलाम जी से पहले कौन-कौन भारत के राष्ट्रपति बने? उनके नामों की सूची बनाइए और चित्र भी चिपकाइए–

1. श्री॰ राजेंद्र प्रसाद
2. ....
3. ....
4. ....
5. ....
6. ....
7. ....
8. ....
9. ....
10. ....
11. ....
12. ....

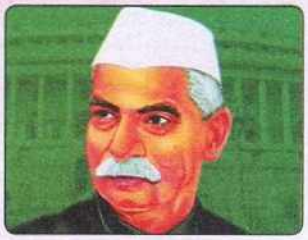

अतिरिक्त पठन

ड्राइवर बन गया लेक्चरर

दो दशक पहले जो पेशे से ड्राइवर था, आज वह लेक्चरर है। यकीन नहीं होता न! पर यह सच है और इसके पीछे हैं हमारे पूर्व राष्ट्रपति डॉ० ए०पी०जे० अब्दुल कलाम के शब्द कभी कलाम के ड्राइवर रहे 47 साल के काथीरेसन, अपनी पीएच०डी० पूरी करने के बाद 6 अगस्त को अरिगनर अन्ना गवर्नमेंट आर्ट कॉलेज में लेक्चरर के पद पर नियुक्त हुए हैं। उन्होंने अपनी पीएच०डी० इतिहास से मनोनमण्यम सुंदरानार विश्वविद्यालय से पूरी की है।

कई साल पहले अपने पिता की मौत के बाद दसवीं की परीक्षा छोड़ने वाले काथीरेसन के मन में कलाम के शब्दों ने ऐसा जादू किया कि आज उनकी ज़िंदगी पूरी तरह से बदल गई है। काथीरेसन को कलाम ने आगे की पढ़ाई पूरी करने की प्रेरणा दी। काथीरेसन को यह प्रेरणा 1980 के दशक में हैदराबाद में रक्षा अनुसंधान एवं विकास प्रयोगशाला में कलाम का ड्राइवर रहते हुए मिली थी। हालाँकि कुछ समय बाद कलाम ने हैदराबाद छोड़कर दिल्ली का रुख कर लिया, पर काथीरेसन कलाम के बताए रास्ते पर ही चलते रहे और आज उन्होंने यह उपलब्धि हासिल कर ली है। काथीरेसन ने कहा कि साढ़े पाँच साल तक मैंने अय्या (सर) के ड्राइवर के तौर पर काम किया। वे बहुत अच्छे व्यक्ति हैं। आज मैं जहाँ हूँ, उसके पीछे सिर्फ़ वही ज़िम्मेदार हैं।

गौरतलब है कि काथीरेसन अकेले ऐसे व्यक्ति नहीं, बल्कि कलाम ने अपने विभाग के सभी कर्मचारियों को भी ऐसी ही प्रेरणा दी। काथीरेसन पर 1979 में पिता की मौत के बाद सेना में भर्ती होने का दबाव भी डाला गया। ड्राइवर के तौर पर काम शुरू करने के बाद काथीरेसन ने अपनी दसवीं, बारहवीं की पढ़ाई पूरी की। बाद में उन्होंने मदुरै कामराज विश्वविद्यालय से बी०ए० (इतिहास) और एम०ए० (इतिहास) की भी डिग्री हासिल कर ली। इसके बाद उन्होंने 1996 में हायर एजुकेशन के लिए नौकरी छोड़ दी और उन्होंने एम०ए० (राजनीति शास्त्र) और तिरुनवेली से पीएच०डी० की।

साभार हिंदुस्तान
15 अगस्त, 2009

गतिविधि-5

गुरु और शिष्य

'गुरु' शब्द का संबंध 'शिक्षा' से है। शिक्षा का अर्थ है– सीखना। मनुष्य जन्म से मृत्यु-पर्यंत सीखता है– कभी माँ से, कभी प्रकृति से, कभी अपने अनुभव से।

नीचे कुछ चित्र दिए जा रहे हैं। उनमें से पहचानिए– कौन गुरु है, कौन शिष्य?

चंद्रगुप्त

.....

विश्वामित्र

.....

द्रोणाचार्य

.....

अर्जुन

.....

एकलव्य

.....

लक्ष्मण

.....

राम

.....

चाणक्य

.....

अध्यापन-संकेत–वर्ग में छात्रों से चर्चा कर यह भी लिखवाइए कि वे किससे प्रभावित हैं और क्यों? उन्होंने उनसे क्या सीखा?

7 खेल पुराने

चिंतन-मनन

आज हम क्रिकेट, फुटबॉल जैसे खेल खेलते हैं लेकिन कुछ भारतीय खेल ऐसे हैं जिन्हें खेलने में काफ़ी मज़ा आता है। बच्चों की शारीरिक क्षमता भी बढ़ती है। उन्हीं खेलों का वर्णन यहाँ किया गया है।

कहाँ गुम हो गए खेल पुराने
कहाँ गुम गई सच्चाई,
क्यों आपस में लड़ते रहते
हम सब भाई-भाई।

बचपन की वह हा-हा, ही-ही
छल कबड्डी आले,
आँख मिचौली गोली-गुप्पल
लँगड़ी के वह पाले।

मेल-जोल का गुल्ली-डंडा
गुट्टों वाला खेल,
आइस-पाइस, कहाँ गुम गया
वह आपस में मेल।
अपने और पराये से न
कोसों तक था नाता,

शब्दार्थ–**गुम**–खो जाना (lost), **आँख मिचौली**–आँख पर पट्टी बाँधकर खेला जाने वाला खेल (blindfold game), **गुट्टों**–पाँच या छह कंकड़ों से खेला जाने वाला खेल (game played with small stones), **आइस-पाइस**–इस खेल में बच्चे छिप जाते हैं और एक खिलाड़ी उन्हें ढूँढ़कर लाता है। (hide and seek)

जो भी आया साथ खेलने
वह बन जाता था भ्राता।
अब तो खेल अकेले वाले
गेम विडियो आए,
स्क्रीन से प्यार हो गया,
अपने हुए पराए।
है तकनीक ज़रूरी पर
यदि अच्छा हो उपयोग,
तुम तो खेलो मैदानों में
छोड़ो यह सब ढोंग।

–सतीश मिश्र
(देवपुत्र में प्रकाशित)

शब्दार्थ– **भ्राता**–भाई (brother), **तकनीक**–शिल्प विज्ञान (technique)

कवि परिचय

सतीश मिश्र का जन्म 20 अगस्त, 1969 को हुआ। सतीश जी को बचपन से ही कविताएँ लिखने का शौक था। बाल मानस को पहचानकर उसे सशक्त रूप से लिखने का इनका प्रयास रहा। इनकी रचनाओं का प्रमुख स्वर पर्यावरण संरक्षण का है। इनकी अनेक बाल कविताएँ विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी हैं।

अभ्यास के लिए

मौखिक

- **कम-से-कम शब्दों में उत्तर दीजिए–**

(क) कवि के अनुसार क्या गुम हो गया है?

(ख) भाई-भाई क्या कर रहे हैं?

(ग) बचपन में कौन-कौन से खेल-खेले जाते थे?

(घ) आज के खेल कैसे हैं?

(ङ) अपने क्यों पराए हो गए हैं?

(च) कवि क्या छोड़ने के लिए कह रहे हैं?

लिखित

1. भावार्थ लिखिए–

(क) "अपने और पराये से न
कोसों तक था नाता,
जो भी आया साथ खेलने
वह बन जाता था भ्राता।"

(ख) "है तकनीक ज़रूरी पर
यदि अच्छा हो उपयोग,
तुम तो खेलो मैदानों में
छोड़ो यह सब ढोंग।"

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) कौन से पुराने खेल गुम हो रहे हैं?

(ख) आँख मिचौली और आइस-पाइस खेल कैसे खेलते हैं?

(ग) गुट्टों वाला खेल क्या होता है?

(घ) बच्चे अब घर में बैठकर कौन-सा खेल खेलते हैं?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तारपूर्वक लिखिए–

(क) देसी और विदेशी खेलों की तुलना कीजिए।

(ख) देसी खेलों को कैसे बचाया जा सकता है?

(ग) 'खेल' जीवन को अनुशासित बनाते हैं, कैसे? स्पष्ट कीजिए।

भाषा ज्ञान

1. अशुद्ध पद को शुद्ध करके दुबारा लिखिए–

- मेरे को उनका बैट पसंद नहीं आया। ....मुझे उनका बैट पसंद नहीं आया।.....

(क) चारों बच्चा खेल रहा था। .....

(ख) क्या आप यह खेल खेले हैं? .....

(ग) बचपन का दिन बीत गया। .....

(घ) आपस में मिल-जुलकर रहने चाहिए। .....

2. वचन बदलिए–

(क) आँख – ..... (ख) पाला – .....

(ग) गुट्टा – ..... (घ) खेल – .....

3. 'कबड्डी' शब्द में द्वित्व व्यंजन का प्रयोग हुआ है। इसी प्रकार के कुछ शब्द लिखिए–

....

4. निम्नलिखित वाक्यों में लिंग परिवर्तन कर वाक्य दुबारा लिखिए–

(क) भाई आपस में लड़ रहे हैं।

.....

(ख) बच्चा खेल रहा है।

.....

(ग) लड़कियाँ कबड्डी खेल रही हैं।

.....

(घ) सभी मित्र बनकर रहो।

.....

(ङ) विकास माता जी के साथ पार्क में गया।

.....

विषय संवर्धक क्रियाकलाप

सोचिए और बताइए

- अंतर पहचानिए–

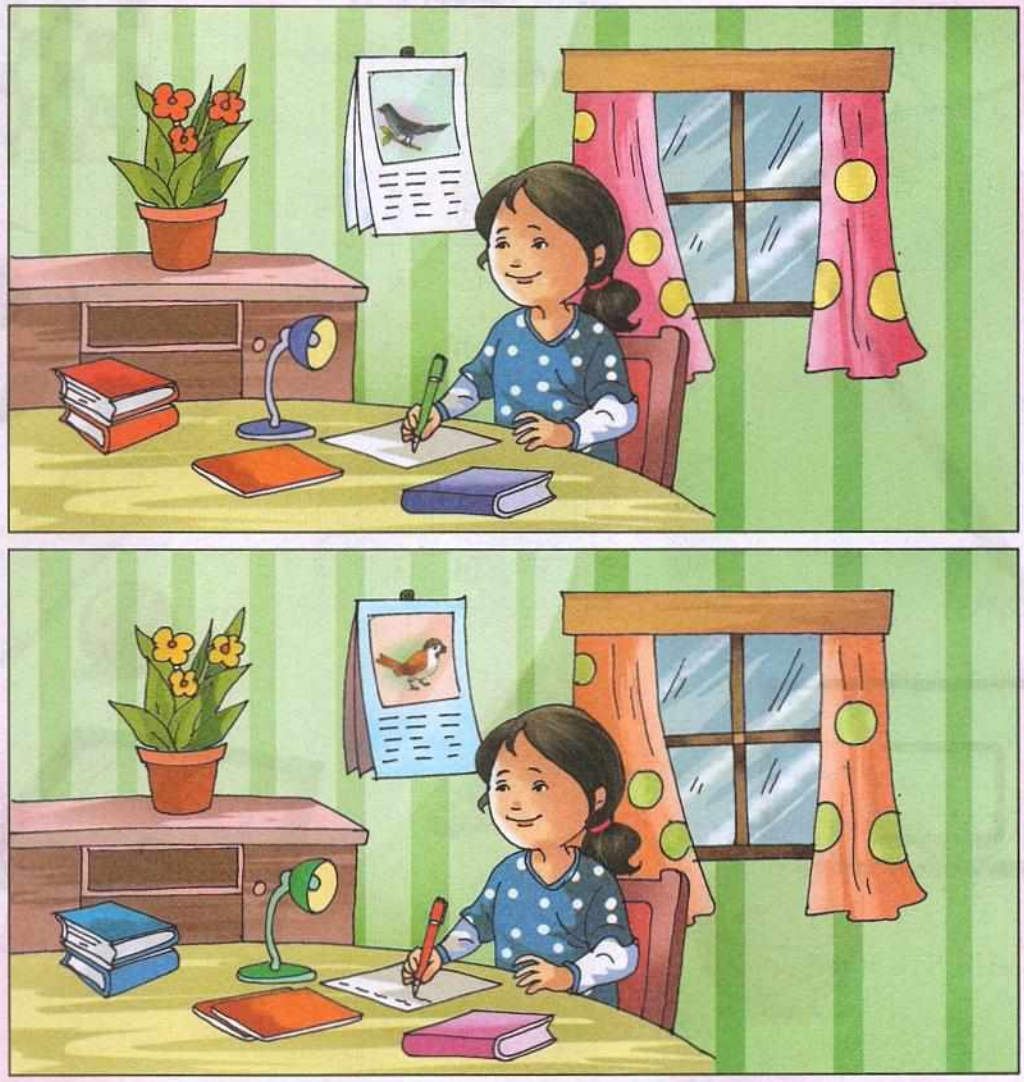

बच्चो यहाँ पर दो चित्र दिए गए हैं, जो दिखने में तो एक से लगते हैं लेकिन उनमें दस अंतर हैं। यदि आप उन्हें पाँच मिनट में ढूँढ लेते हैं, तो आप अति बुद्धिमान हैं।

....

....

क्रियाकलाप

- नीचे दी गई तालिका में कुछ खेलों के नाम छिपे हैं, उन्हें ढूँढ़िए–

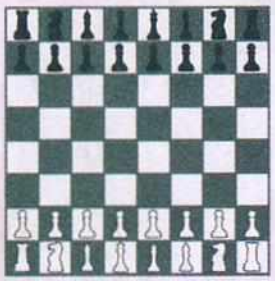

स	अ	क्रि	वॉ	टे	म
कै	ल	के	ली	ब	स
र	फु	ट	बॉ	ल	श
म	क	हॉ	ल	टे	त
तै	रा	की	ट	नि	रं
व	ज	टे	नि	स	ज

अतिरिक्त पठन

पेड़ नहीं काटो

रो-रो कहती गौरैया
पेड़ नहीं काटो भैया।
पेड़ अगर कट जाएँगे
कहो कहाँ हम जाएँगे।
पेड़ न होंगे धरती पर
हवा कहाँ होगी सर-सर?
क्या जानोगे पुरवैया?
ये सबका ही कहना है
पेड़ प्रकृति का गहना है।
बहुत बड़े उपहार हैं ये
धरती का शृंगार हैं ये।
ना रूठे धरती मैया।
ईंधन वर्षा देते हैं
बदले में क्या लेते हैं।
मिले मुफ़्त में शुद्ध हवा
जीवन की अनमोल दवा।
स्वस्थ रहो ता-ता थैया
सबसे कहती गौरैया।

–डॉ० नागेश पांडेय 'संजय'

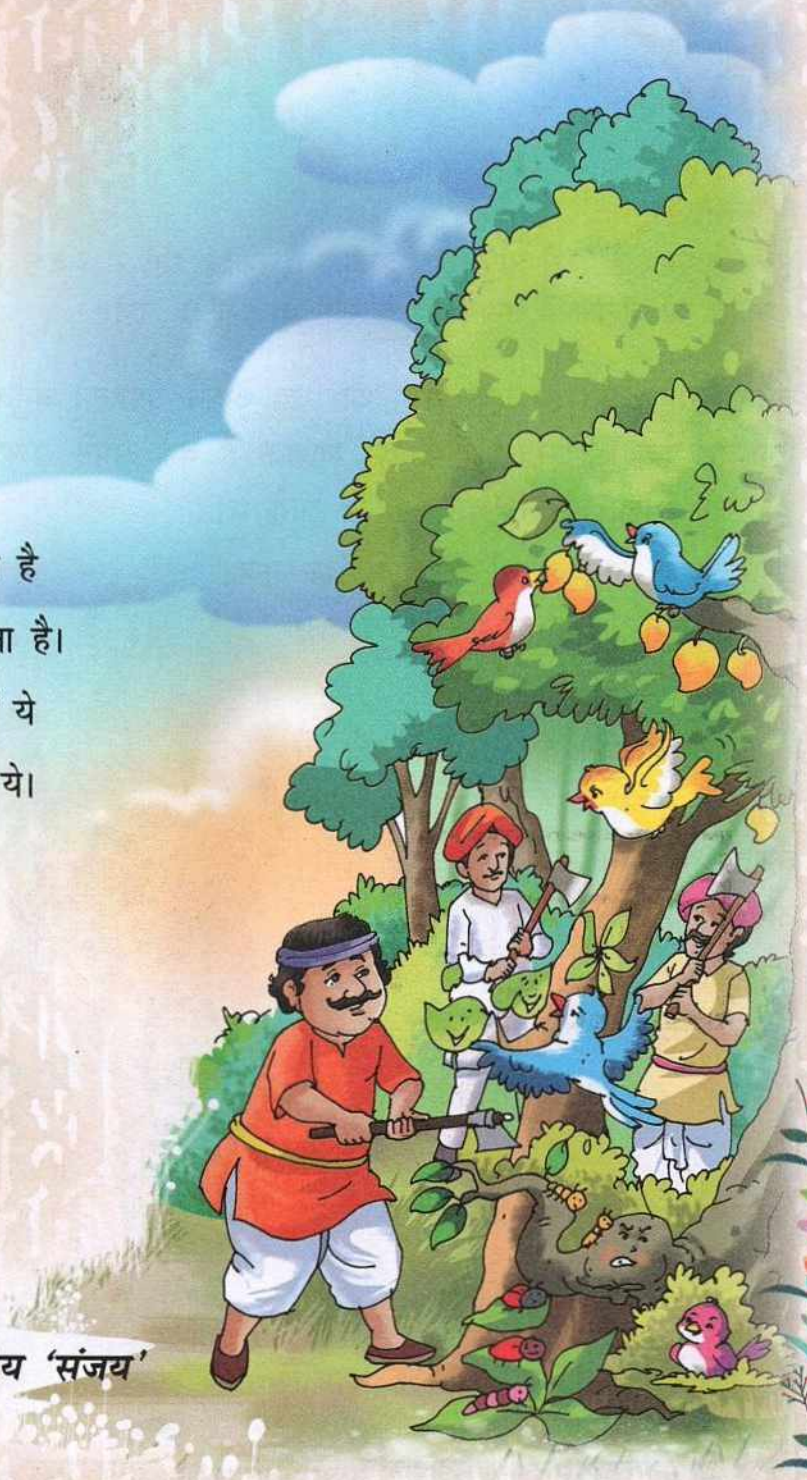

8 नमक का मोल

चिंतन-मनन

प्रेम अमूल्य है। उसे नापा-तौला नहीं जा सकता। प्रेम से जीवन सुखद होता है, रुपये-पैसों से नहीं। प्रेम के महत्व को जानना है, रुपयों या कीमती वस्तुओं के नहीं।

बहुत पुरानी बात है। एक राजा था। वह अपने-आपको बहुत अकलमंद समझता था। उसे लगता था कि वह देश का सबसे ताकतवर शासक है वह अपने राज्य में उन चापलूस लोगों को पसंद करता था, जो हमेशा उसकी बड़ाई करते रहते थे।

राजा के तीन बेटियाँ थीं। एक दिन राजा ने तीनों बेटियों से पूछा कि वे उसे कितना प्यार करती है?

पहले बेटी ने कहा, "पिता जी, मैं आपको अपनी जान से भी ज़्यादा प्यार करती हूँ। मेरा प्यार सोने के समान अनमोल है।"

दूसरी बेटी ने कहा, "पिता जी, आपके लिए मेरा प्यार समुद्र की तरह गहरा है। वह हीरे-मोती की तरह शुद्ध है।"

तीसरी बेटी बहुत शर्मीली थी। जब राजा ने उससे पूछा, तो वह बोली– "पिता जी, मेरा प्यार आपके लिए ऐसा है, जैसा एक बेटी का बाप के लिए।"

शब्दार्थ–**अकलमंद**–समझदार (intelligent), **ताकतवर**–शक्तिशाली (powerful)

राजा ने तीसरी बेटी से फिर पूछा, "तुम मुझसे कितना प्यार करती हो?"

बेटी बोली–"मैं आपसे उतना ही प्यार करती हूँ, जितना कि नमक से?"

यह सुनकर राजा अपनी छोटी बेटी से बहुत नाराज़ हो गया। उसे लगा कि राजकुमारी ने उसकी बेइज़्ज़ती की है। उसने अपनी दोनों बड़ी बेटियों की शादी दो राजाओं से कर दी, परंतु जब छोटी बेटी की शादी की बात आई, तो राजा ने उसकी शादी एक भिखारी से कर दी। राजकुमारी बहुत बहादुर थी। उसने खुशी-खुशी अपने पिता का फ़ैसला मान लिया और भिखारी के साथ चली गई।

राजकुमारी ने अपने पति के बारे में जानने की कोशिश की। उसके पति ने उसे बताया कि वह कोई भिखारी नहीं है। वह तो इस राज्य में काम ढूँढ़ने के लिए आया था। काफ़ी दिन से कोई काम नहीं मिला, तो वह खाना माँगने लगा। इसी कारण राजा ने उसे भिखारी समझ लिया।

वह लड़का बहुत मेहनती था। इतनी समझदार पत्नी पाकर उसने ज़िंदगी की नई शुरुआत की।

राजकुमारी ने अपने गहने बेचकर एक ज़मीन का टुकड़ा खरीद लिया। वह अपने पति के साथ उस ज़मीन के टुकड़े पर खूब मेहनत से खेती करने लगी। दोनों की मेहनत रंग लाई। उनके खेत में खूब अच्छी फ़सल हुई। अनाज बेचकर उन्हें खूब रुपया मिला। इस रुपये से उन्होंने और ज़मीन खरीद ली। धीरे-धीरे उस गाँव की सारी ज़मीन उनकी हो गई। उन्होंने एक बड़ा-सा मकान भी बना लिया। उनका घर किसी महल से कम नहीं लगता था। अब वे दोनों राजा-रानी की तरह ज़िंदगी बिताने लगे थे।

शब्दार्थ–मेहनती–परिश्रमी (hard working)

एक दिन उन्होंने राजा को खाने पर बुलाया। राजकुमारी ने अपने पिता को बहुत प्यार से बिठाया। राजा अपनी बेटी को पहचान नहीं पाए, क्योंकि राजकुमारी के चेहरे पर घूँघट था। राजकुमारी ने राजा की थाली में तरह-तरह के पकवान परोसे। जब राजा खाना खाने लगे, तो उन्होंने देखा कि सारा खाना बिना नमक का बना हुआ था।

यह देखकर राजा को बहुत गुस्सा आया। वह गुस्से से बोले, "क्या तुमने मेरी बेइज़्ज़ती करने के लिए मुझे यहाँ बुलाया है? यह कैसा मज़ाक है? बिना नमक का खाना भला कौन खा सकता है?"

राजकुमारी अपने घूँघट उठाकर राजा से बोली, "तो आपको नमक बहुत पसंद है? हीरे-मोती और सोने से भी ज़्यादा?"

अब राजा को समझ में आया कि नमक की कीमत तो हीरे-मोती से भी ज़्यादा है। उसने अपने व्यवहार के लिए अपनी बेटी से माफ़ी माँगी। उसने अपना सारा राज्य बेटी और दामाद को दे दिया। अब उसे नमक का मोल समझ में आ गया था।

शब्दार्थ– **पकवान**–विभिन्न प्रकार के स्वादिष्ट खाद्य पदार्थ (dishes), **गुस्सा**–क्रोध (anger), **बेइज़्ज़ती**–अपमान (insult)

अभ्यास के लिए

मौखिक

- **कम-से-कम शब्दों में उत्तर दीजिए–**

(क) राजा अपनी बेटियों से क्या जानना चाहते थे?

(ख) किस बेटी की बात सुनकर राजा नाराज़ हो गए थे?

(ग) राजा ने तीसरी बेटी को क्या सज़ा दी थी?

(घ) भिखारी से शादी करके राजकुमारी ने क्या किया?

लिखित

1. रिक्त स्थान भरिए–

(क) मेरा प्यार ..... के समान है।

(ख) राजा अपनी छोटी बेटी से बहुत ..... हो गया।

(ग) वह लड़का बहुत ..... था।

(घ) दोनों की ..... रंग लाई।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) आप अपने माता-पिता से कितना प्यार करते हैं? एक परिच्छेद लिखिए।

(ख) राजा की तीनों बेटियों ने अपना प्यार किसके समान बताया?

(ग) तीसरी राजकुमारी ने अपने पति के साथ मिलकर किस प्रकार मेहनत की?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तारपूर्वक लिखिए–

(क) आप अपने माता-पिता से अत्यधिक प्रेम करते हैं और उसकी तुलना किससे करेंगे?

(ख) राजकुमारी ने राजा को खाने पर क्यों बुलाया होगा?

भाषा ज्ञान

1. काल से समय का बोध होता है। काल तीन प्रकार के होते हैं–भूतकाल, वर्तमान काल तथा भविष्यत् काल। यदि क्रिया बीते हुए समय में हो चुकी हो, तो भूतकाल कहलाता है। यदि क्रिया वर्तमान समय में संपन्न हो रही है, तो वर्तमान काल और यदि आने वाले समय में संपन्न होगी, तो भविष्यत् काल कहलाता है।

उदाहरण–

(क) अध्यापिका हमें पढ़ा रही है। – वर्तमान काल

(ख) बच्चों ने गीत गाया था। – भूतकाल

(ग) मैं कल पाठशाला नहीं जाऊँगा। – भविष्यत् काल

नीचे दिए गए वाक्यों के सामने उनके काल का भेद लिखिए–

वाक्य	काल
(क) राजा अपने-आप को अकलमंद समझता था।	.....
(ख) राजा की तीन बेटियाँ थीं।	.....
(ग) आपके लिए मेरा प्यार समुद्र की तरह गहरा है।	.....
(घ) बिना नमक के खाना स्वादिष्ट नहीं होगा।	.....
(ङ) राजा को नमक का मोल समझ में आ गया था।	.....

2. लिंग बदलिए–

(क) राजा – ..... (ख) बेटा – .....

(ग) राजकुमार – ..... (घ) पति – .....

(ङ) भिखारी – ..... (च) माता – .....

3. पर्यायवाची शब्द लिखिए–

(क) राजा – ..... (ख) सोना – .....

(ग) बेटी – ..... (घ) समुद्र – .....

(ङ) पिता – ..... (च) महल – .....

4. निम्नलिखित वाक्यों को दुबारा पाठानुसार शुद्ध रूप में लिखिए–

- राजा के पाँच बेटियाँ थीं।

...राजा की तीन बेटियाँ थीं।.....

(क) राजकुमारी ने अपने कपड़े बेचकर एक ज़मीन का टुकड़ा खरीद लिया।

.....

(ख) सारे खाने में बहुत नमक भरा था।

.....

(ग) बिना चीनी का खाना भला कौन खा सकता है?

.....

(घ) अब राजा को सोने का मोल समझ में आ गया।

.....

विषय संवर्धक क्रियाकलाप

सोचिए और बताइए

1. "मातृ देवो भव, पितृ देवो भव, आचार्य देवो भव" सूक्ति पर चर्चा कीजिए।
2. नमक समुद्र से प्राप्त होता है। उसे बनाने की प्रक्रिया की चर्चा करके नमक से होने वाले लाभ और हानियों को लिखिए; जैसे–

(क) ......नमक से रक्तचाप बढ़ता है।...................... ......हानि......

(ख) ......आयोडिन नमक बुद्धिशक्ति को बढ़ाता है।...................... ......लाभ......

(ग) ....

(घ) ....

(ङ) ....

(च) ....

क्रियाकलाप

- **चालीस साल में देश की जनसंख्या हो जाएगी 200 करोड़**

  अभी से नहीं चेते तो हालात होंगे काबू से बाहर

  वर्ष 2051 तक भारत की जनसंख्या 201.8 करोड़ तक पहुँच जाने की अपेक्षा की जा रही है, जिनमें 82.7 करोड़ शहरी जनसंख्या होगी अर्थात कुल आबादी के 41 प्रतिशत लोग शहरों में होंगे।

बढ़ती जनसंख्या भारत की समस्या है। विभिन्न अखबारों से इस प्रकार की खबरों की कतरनों का संग्रह करके उसे कोलाज के रूप में तैयार कीजिए। समूह क्रिया (Group work) करके विभिन्न पोस्टरों की सहायता से 'जागृति अभियान' भी करवाया जा सकता है।

गतिविधि-6

चित्र-वर्णन

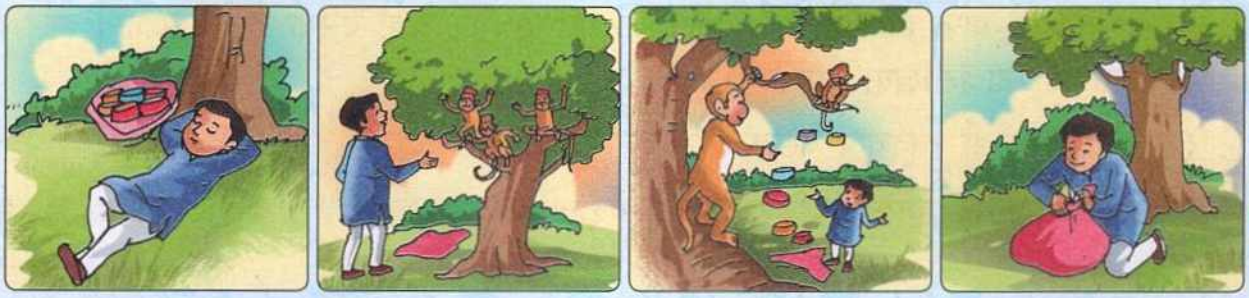

रामू टोपीवाला, टोपियाँ बेचना, नींद, बक्सा, पेड़ पर बंदर, नींद खुलना, युक्ति, टोपी फेंकना, टोपियाँ पाना।

शीर्षक .....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

अध्यापन-संकेत–छात्रों को चित्रों को ध्यानपूर्वक देखने का निर्देश दें। सहायक शब्दों की सहायता से चित्र-वर्णन करने को कहिए।

9 महान नरेंद्र

चिंतन-मनन

कोई भी व्यक्ति जन्म से महान नहीं होता; अपने कार्यों एवं कर्तव्यनिष्ठता से महान बनता है। बचपन से साधारण बालकों के समान सहज-सुलभ हरकतें करने वाला 'नरेंद्र' आगे चलकर अपनी निर्भीकता, साहस और एकाग्रता के बल पर स्वामी विवेकानंद कहलाया। महान व्यक्तियों की जीवनियाँ समाज के लिए प्रेरणादायी होती हैं।

"भागो, भागो! इस पेड़ पर भूत है, भूत।" माली की यह बात सुनते ही सभी बच्चे तुरंत पेड़ से नीचे कूद पड़े और भाग खड़े हुए। माली ने चैन की साँस ली। तभी पेड़ से आवाज़ आई, "माली भैया! कहाँ है भूत? मुझे तो ढूँढ़ने पर भी नहीं मिला। भूत हो तो दिखाई दे न।" माली बालक की निर्भीकता देखकर आश्चर्यचकित था। बालक का नाम था–नरेंद्र। यही नरेंद्र आगे चलकर 'स्वामी विवेकानंद' के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

नरेंद्र बचपन से ही बहुत होनहार थे। उनकी माता भुवनेश्वरी देवी एक सुसंस्कृत तथा धार्मिक विचारों वाली महिला थीं। वे कथा-कहानियाँ सुनाकर नरेंद्र में उच्च संस्कार भरती रहती थीं। नरेंद्र भी अपनी माता का बहुत आदर करते थे। नरेंद्र के पिता विश्वनाथ दत्त कलकत्ता (कोलकाता) के उच्च न्यायालय में वकील थे। नरेंद्र को अपने पिता से तीव्र बुद्धि और माता से धार्मिक विचार विरासत में मिले थे।

शब्दार्थ–प्रसिद्ध–मशहूर (famous),
सुसंस्कृत–अच्छा आचरण (good behaviour)
धार्मिक–धर्म के मुताबिक (religious)

जब वे छह वर्ष के थे तो उन्हें पास के स्कूल में भरती करा दिया गया। उनके पिता उन्हें घर पर भी पढ़ाते थे। बाद में उन्हें पढ़ने के लिए कलकत्ता भेज दिया गया। दसवीं की परीक्षा में पूरे स्कूल में अकेले नरेंद्र ही प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए। देखने में स्वस्थ और सुंदर नरेंद्र कुश्ती, घुड़दौड़ और तैराकी सभी में प्रवीण थे। संगीत से भी उन्हें बड़ा प्रेम था। नरेंद्र का शरीर जितना स्वस्थ था, बुद्धि भी उतनी ही प्रखर थी। वे जिस बात को एक बार सुन या पढ़ लेते, उसे कभी नहीं भूलते थे।

कहानी सुनाने में नरेंद्र का कोई जवाब न था। जब वे कहानी सुनाना शुरू करते, उनके सहपाठी सब कुछ भूलकर उनकी कहानी सुनने लगते।

एक बार नरेंद्र अपने कुछ सहपाठियों को कहानी सुना रहे थे। इसी बीच शिक्षक ने कक्षा में आकर पढ़ाना शुरू कर दिया लेकिन नरेंद्र कहानी सुनाने में मग्न रहे। कुछ देर बाद शिक्षक का ध्यान उस तरफ़ गया तो वे एक-एक करके सबसे प्रश्न पूछने लगे। नरेंद्र को छोड़कर कोई भी शिक्षक के प्रश्नों का उत्तर नहीं दे सका। शिक्षक ने पूछा, "वहाँ बातें कौन कर रहा था?" सभी ने नरेंद्र की ओर इशारा कर दिया, लेकिन शिक्षक को इस बात पर विश्वास नहीं हुआ क्योंकि नरेंद्र ने सभी प्रश्नों के जवाब दे दिए थे। इसलिए उन्होंने नरेंद्र को छोड़कर बाकी सभी लड़कों को खड़े रहने का दंड दिया। सभी के साथ नरेंद्र भी उठ खड़े हुए। शिक्षक ने कहा, "नरेंद्र! तुम्हें खड़ा होने की ज़रूरत नहीं है।" नरेंद्र ने इसके जवाब में कहा, "मैं ही तो कहानी सुना रहा था।" ऐसी थी सच्चाई के प्रति नरेंद्र की निष्ठा।

नरेंद्र को किताबें पढ़ने का भी बड़ा शौक था। जब वे मेरठ में थे तो प्रतिदिन पुस्तकालय से एक किताब लाया करते थे। एक ही दिन में पढ़कर उसे लौटा देते थे और दूसरी पुस्तक ले आते। जब लगातार कुछ दिनों तक यही क्रम चला तो पुस्तकालय के अधिकारी को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने सोचा–नरेंद्र पुस्तकें पढ़ता भी है या केवल पढ़ने का ढोंग ही करता है। एक दिन अधिकारी ने नरेंद्र से पूछ ही लिया। नरेंद्र ने कहा, "मैंने आपके यहाँ से ली सभी पुस्तकों को अच्छी तरह पढ़ा है। आप चाहें तो मुझसे किसी भी किताब से प्रश्न पूछ सकते हैं।" अधिकारी ने नरेंद्र की लौटाई किताब उठाई और एक पृष्ठ खोलकर प्रश्न पूछना शुरू किया। नरेंद्र ने उनके सभी प्रश्नों के सही-सही उत्तर दे दिए। अधिकारी के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। उसने नरेंद्र से पूछा, "ऐसा कैसे हो सकता है?"

नरेंद्र ने कहा, "एक छोटा बच्चा जब पढ़ता है, तब वह एक-एक अक्षर को जोड़-जोड़कर पढ़ता है। तब उसकी दृष्टि एक-एक अक्षर पर रहती है। लेकिन कुछ दिन बाद वह एक-एक अक्षर जोड़कर नहीं पढ़ता। तब उसकी नज़र रहती है एक-एक शब्द पर। फिर लगातार अभ्यास के बाद, वह एक ही दृष्टि में एक वाक्य को पढ़ने लगता है। धीरे-धीरे भाव-ग्रहण करने की क्षमता बढ़ती जाती है और एक नज़र में पूरा पृष्ठ पढ़ा जा सकता है। मैं इसी तरह पढ़ता हूँ।" नरेंद्र ने आगे कहा, "यह सिर्फ़

शब्दार्थ– **प्रखर**–तेज़ (sharp), **कक्षा**–वर्ग (class), **आश्चर्य**–अचरज (surprise)

अभ्यास है, एकाग्रता है। मन लगाकर पढ़ने से यह सब संभव है।"

बड़े होकर नरेंद्रनाथ ने संन्यास ले लिया और धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन करने लगे। उन्हें अपने देश और देशवासियों से बहुत प्यार था। उन्होंने हमेशा देश को संगठित और शक्तिशाली बनाने का संदेश दिया। देश से अज्ञानता और अंधविश्वास को दूर हटाने का प्रयत्न किया। अपने देशवासियों को जगाने के लिए सिंह गर्जना करते हुए उन्होंने कहा, "उठो! जागो! आगे बढ़ो और लक्ष्य प्राप्ति तक रुको नहीं।"

–संकलित

शब्दार्थ– **लक्ष्य**–निश्चित उद्देश्य (aim)

अभ्यास के लिए

मौखिक

• **कम-से-कम शब्दों में उत्तर दीजिए–**

(क) बालक का नाम क्या था?

(ख) नरेंद्र के माता-पिता का नाम क्या था?

(ग) नरेंद्र को किस बात का शौक था?

(घ) नरेंद्रनाथ ने संन्यास लेकर क्या किया?

(ङ) नरेंद्र ने सिंह गर्जन करते हुए क्या कहा?

लिखित

1. **रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–**

(क) नरेंद्र ..... से ही बहुत होनहार थे।

(ख) नरेंद्र को पढ़ने के लिए ..... भेज दिया गया।

(ग) छोटा बच्चा जब पढ़ता है तो ..... जोड़कर पढ़ता है।

(घ) उन्होंने देश को ..... बनाने का संदेश दिया।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) नरेंद्र के माता-पिता का क्या नाम था?

(ख) नरेंद्र पढ़ाई और खेल-कूद में कैसे थे?

(ग) नरेंद्र को किसका शौक था और वह किस तरह से सब याद रखते थे?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तारपूर्वक लिखिए–

(क) 'सतत परिश्रम से सब कुछ साध्य हो सकता है।' परिश्रम का महत्व बताते हुए इस विषय पर अपने विचार प्रकट कीजिए। **(मूल्यपरक प्रश्न)**

(ख) नरेंद्र द्वारा कक्षा में कहानी सुनाने की घटना को अपने शब्दों में लिखिए।

भाषा ज्ञान

1. जो शब्दांश मूल शब्द के प्रारंभ में जुड़कर उनके अर्थ में परिवर्तन कर देते हैं, उन्हें उपसर्ग कहा जाता है।

उदाहरण– उपसर्ग	+	मूल शब्द	उपसर्ग युक्त शब्द
अ	+	शिक्षा	अशिक्षा
अन्	+	आदर	अनादर

ध्यान रखें 'उपसर्ग' हमेशा शब्दों के प्रारंभ में जोड़े जाते हैं। उनका अपना स्वतंत्र प्रयोग नहीं होता, इनके प्रयोग से मूल शब्द का अर्थ बदल जाता है।

निम्नलिखित शब्दों में प्रयुक्त उपसर्गों पर गोला ◯ लगाइए–

(क) सुसंस्कृत	– (*i*) सु	(*ii*) सुस	(*iii*) उ	(*iv*) सुसस्
(ख) प्रखर	– (*i*) प	(*ii*) र	(*iii*) प्र	(*iv*) प्रख
(ग) प्रसिद्ध	– (*i*) प्र	(*ii*) प्रसि	(*iii*) प्रा	(*iv*) ध
(घ) सुलभ	– (*i*) अ	(*ii*) सुल	(*iii*) स	(*iv*) सु

2. जो शब्दांश शब्दों के अंत में लगकर उनके अर्थ में परिवर्तन कर देते हैं, उन्हें प्रत्यय कहा जाता है।

उदाहरण–	मूल शब्द	+	प्रत्यय	प्रत्ययुक्त शब्द
	सब्ज़ी	+	वाला	सब्ज़ीवाला
	श्रद्धा	+	आलु	श्रद्धालु

ध्यान रखें प्रत्यय का अपना विशेष अर्थ नहीं होता, इनका स्वतंत्र प्रयोग नहीं होता। शब्द के अंत में जुड़कर ये उनका अर्थ बदल देते हैं।

निम्नलिखित शब्दों में प्रयुक्त प्रत्ययों पर गोला ◯ लगाइए–

(क) निर्भीकता – (*i*) कता (*ii*) ता (*iii*) आ (*iv*) नि

(ख) धार्मिक – (*i*) क (*ii*) इक (*iii*) रमिक (*iv*) ध

(ग) तैराकी – (*i*) ई (*ii*) इ (*iii*) आकी (*iv*) की

(घ) सच्चाई – (*i*) आई (*ii*) ई (*iii*) अई (*iv*) इ

विषय संवर्धक क्रियाकलाप

सोचिए और बताइए

- 'अनुशासन' जीवन में आवश्यक है। आपके अनुसार अनुशासन से क्या-क्या हासिल किया जा सकता है?

जैसे–

(क) ....अनुशासन के कारण जीवन में नियमितता आती है।.....

(ख) .....

(ग) .....

(घ) .....

(ङ) .....

क्रियाकलाप

- शब्द पूरे कीजिए–

1.

2.

अतिरिक्त पठन

मलयालम ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता– गोविंद शंकर कुरूप

साहित्य का सर्वोच्च पुरस्कार ज्ञानपीठ पुरस्कार है। हर भारतीय भाषा में साहित्य के क्षेत्र में महान योगदान देने वाले लेखकों को यह पुरस्कार दिया जाता है। मलयालम भाषा में श्री गोविंद शंकर कुरूप इस उपाधि से सम्मानित हुए हैं। गोविंद कुरूप का जन्म 5 जून, 1901 में केरल के एक गाँव 'नायतोट्ट' में हुआ। उनके पिता का नाम शंकर था और माता का नाम लक्ष्मीकुट्टी था। पिता के देहांत के बाद इनका लालन-पालन उनके मामा ने किया। उनके मामा ज्योतिषी और पंडित थे और संस्कृत में रुचि रखते थे। यही संस्कार गोविंद को मिले। गोविंद पर उनके गुरु श्री आर०सी० शर्मा और श्री एस०एन० नायर का गहरा प्रभाव पड़ा। उन्होंने कोचीन राज्य की 'पंडित' परीक्षा पास की। बांगला भाषा पर इनकी पकड़ थी। बचपन से ही इनकी स्मरण शक्ति तेज़ थी। अमरकोश, सिद्धरूपम तथा श्रीरामोदन्तम आदि ग्रंथ उन्हें कंठस्थ थे। उनकी पहली रचना 'आत्मपोषिणी' नामक मासिक पत्रिका में प्रकाशित हुई। 'नाले' (आगामी कल) कविता से उनकी पहचान साहित्य क्षेत्र में और भी बढ़ी। महाराजा कॉलेज एर्नाकुलम में इन्होंने प्राध्यापक पद पर और आकाशवाणी में सलाहकार के रूप में कार्य किया।

रचनाएँ

कविता संग्रह – साहित्य कौतुकम्, सूर्यकांति पूजा पुष्पमा, निभिषम्, वनगायकन, विश्वदर्शनम् आदि।
नाटक – इरूट्टिनु, सान्ध्य, अगस्त 15।
बाल साहित्य – इलम् चंचुकल्, ओलप्पीप्पि।
अनुवाद – बांगला, संस्कृत, अंग्रेज़ी, फ़ारसी कृतियों का अनुवाद।

गोविंद जी को उनके उत्कृष्ट साहित्य के लिए 1965 में ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उनकी पुरस्कृत कृति का नाम 'ओटक्कल्ल' (बाँसुरी) है। इनके स्मरणार्थ डाक-विभाग ने डाक-टिकट भी जारी किया है। सर्वोच्च ज्ञानपीठ पुरस्कार के बाद उन्हें 1967 में 'सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। 1968 में भारत सरकार ने 'पद्म भूषण' से सम्मानित किया। 1968 से 1972 तक वे राज्य सभा के सदस्य रहे। इस महान साहित्यकार की मृत्यु सन् 1978 में हुई। संसार से विदा होने के बाद भी गोविंद जी साहित्य जगत में अपनी रचनाओं के रूप में अमर हैं।

10 फूल और काँटा

चिंतन-मनन

प्रकृति गुरु है। अपने आपको श्रेष्ठ समझने वाला मानव प्रकृति से बहुत कुछ सीख सकता है। एक ही पौधे में फूल और काँटे दोनों होते हैं। उनका व्यवहार अलग-अलग होता है, लेकिन दोनों का अपना महत्व होता है।

हैं जन्म लेते जगह में एक ही,
एक ही पौधा उन्हें है पालता।
रात में उन पर चमकता चाँद भी,
एक ही-सी चाँदनी है डालता।।

मेह उन पर बरसता एक-सा,
एक-सी उन पर हवाएँ हैं बहीं।
पर सदा ही यह दिखाता है हमें,
ढंग उनके एक-से होते नहीं।।

छेदकर काँटा किसी की उँगलियाँ,
फाड़ देता है किसी का वर-वसन।
प्यार में डूबी तितलियों का पर कतर,
भौंर का है बेध देता श्याम तन।।

शब्दार्थ–**जन्म**–पैदा होना (to be born), **मेह**–बादल (cloud), **वसन**–कपड़े (cloth), **कतर**–काटना (to cut), **भौंर**–भौंरा (bee)

फूल लेकर तितलियों को गोद में,
भौंर को अपना अनूठा रस पिला।
निज सुगंधों और निराले ढंग से,
है सदा देता कली जी का खिला।।

है खटकता एक सबकी आँख में,
दूसरा है सोहता सुर शीश पर।
किस तरह कुल की बड़ाई काम दे,
जो किसी में हो बड़प्पन की कसर।।

–अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

शब्दार्थ–अनूठा–अनोखा (unique), **सोहता**–शोभित (adorn), **बड़ाई**–प्रशंसा (praise)

कवि परिचय

अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' का जन्म सन् 1865 में उत्तर प्रदेश स्थित निज़ामाबाद, जिला आजमगढ़ में हुआ। इन्होंने अपना सारा जीवन साहित्य को समर्पित किया। काव्य के साथ-साथ इन्होंने उपन्यासों की भी रचना की। इनकी रचनाएँ युगानुरूप हैं। यह 'सार्वभौम' कवि के नाम से पहचाने जाते हैं। इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं– प्रिय प्रवास, प्रेम प्रपंच, वैदेही-वनवास आदि। इनकी मृत्यु सन् 1947 में हुई।

अभ्यास के लिए

मौखिक

- **कम-से-कम शब्दों में उत्तर दीजिए–**

(क) किनके ढंग एक-से नहीं होते?
(ख) काँटा क्या करता है?
(ग) फूल तितलियों को गोद में लेकर क्या करता है?
(घ) काँटा आँखों में क्यों खटकता है?
(ङ) फूल किसका प्रतीक है?
(च) काँटा किसका प्रतीक है?

लिखित

1. निम्न पंक्तियों का भावार्थ लिखिए–

(क) "हैं जन्म लेते जगह में एक ही
एक ही पौधा उन्हें है पालता।"

.....

.....

(ख) "प्यार डूबी तितलियों का पर कतर,
भौंर का है बेध देता श्याम तन"

.....

.....

(ग) "है खटकता एक सबकी आँख में,
दूसरा है सोहता सुर शीश पर।"

.....

.....

(घ) "किस तरह कुल की बड़ाई काम दे,
जो किसी में हो बड़प्पन की कसर।"

.....

.....

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) प्रकृति फूल और काँटे को क्या-क्या देती है?
(ख) फूल और काँटे दोनों के गुण या व्यवहार को लिखिए।
(ग) कविता का मूल भाव स्पष्ट कीजिए।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तारपूर्वक लिखिए–

(क) 'जीवन में सुख-दुख समान रीति से आते हैं' इस उक्ति के अनुसार सुख-दुख के कारण तथा समाधान के उपाय पर अपने विचार प्रस्तुत कीजिए। **(मूल्यपरक प्रश्न)**
(ख) 'फूल और काँटा' कविता का अन्य शीर्षक देकर उसकी सार्थकता सिद्ध कीजिए।

भाषा ज्ञान

1. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(क) 'फूल' का समानार्थक शब्द ..... है।

(ख) 'सुगंध' का विलोम शब्द ..... है।

(ग) 'श्याम' का एक अन्य अर्थ ..... भी है।

(घ) 'आँख में खटकना' इस मुहावरे का अर्थ ..... है।

2. जोड़कर लिखिए–

रात	अक्षि	.....	.....
मेह	चंद्र	.....	.....
वसन	काटना	.....	.....
कतर	वस्त्र	.....	.....
आँख	रात्रि	.....	.....
चाँद	मेघ	.....	.....

विषय संवर्धक क्रियाकलाप

सोचिए और बताइए

- फूल अच्छाई का प्रतीक है। फूल के कौन-से गुण आप अपने जीवन में अपनाओगे? उनकी सूची बनाइए; जैसे–

(क) ....फूलों से हँसना सीखेंगे।.....

(ख) ....अपने व्यवहार की सुरभि बाँटेंगे।.....

(ग) .....

(घ) .....

(ङ) .....

(च) .....

क्रियाकलाप

- नन्हे-मुन्ने बच्चे किसी फूल से कम नहीं होते। बच्चों को देखने के बाद आपके मन में कौन-से भाव उठते हैं? बच्चों और फूलों की तुलना कीजिए–

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

11 पदावली

चिंतन-मनन

मीराबाई श्रीकृष्ण की अनन्य उपासिका थीं। श्रीकृष्ण के प्रेम में लीन होकर इन्होंने पदों की रचना की। प्रेम से परिपूर्ण होने के कारण इनकी भक्ति माधुर्य भाव की कहलाई। मीराबाई श्रीकृष्ण के प्रेम की अमर-गायिका थीं।

पायो जी म्हैं तो राम रतन धन पायो।
वस्तु अमोलक दी मेरे सतगुरु, किरपा कर अपनायो।।
जनम-जनम की पूँजी पाई, जग में सभी खोवायो।
खरचै नहिं कोई चोर न लेवै, दिन-दिन बढ़त सवायो।।
सत की नाव खेवटिया सतगुरु, भवसागर तर आयो।।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, हरख-हरख जस गायो।।

× × ×

पग घुँघरू बाँध मीरा नाची रे।
लोग कहें मीरा हो गई बावरी, सास कहे कुलनासी रे।।
विष का प्याला राणाजी भेज्या, पीबत मीरा हाँसी रे।।
तन-मन वार्‌या हरि चरण में, अमरित दरसण प्यासी रे।।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, धरी शरण तुम्हारी रे।।

× × ×

शब्दार्थ–**अमोलक**–अमूल्य (priceless), **खोवायो**–खोना (lost), **खरचै**–खरचना (expend), **खेवटिया**–नाव चलाने वाला (sailor), **भवसागर**–संसार, जगत (world), **पग**–पैर (foot), **बावरी**–पगली (crazy), **पीबत**–पीना (drinking), **वार्‌या**–न्योछावर करना (to devote)

जोगी मत जा पाय परूँ, मैं तेरी चेरी हौं।
प्रेम भगति की पैड़ो हो न्यारो, हमको गैल बता जा।।
अगर चँदण की चिता बणाऊँ, अपणो हाथ जला जा।।
जल-जल भई भस्म की ढेरी, अपणे अंग लगा जा।।
मीरा कहै प्रभु गिरधर नागर, जोत से जोत मिला जा।।

शब्दार्थ–**चेरी**–दासी (maidservant), **गैल**–गली (lane), **जोत**–ज्योति (illumination)

कवयित्री परिचय

हिंदी की कवयित्रियों में मीराबाई का अप्रतिम स्थान है। इन्होंने कृष्ण-भक्ति के बहुत सुंदर गीत लिखे हैं। इनका जन्म सन् 1498 में जोधपुर (राजस्थान) के कुड़की गाँव में राव रत्नसिंह राठौर के परिवार में हुआ था। इनके पितामह कृष्ण के परमभक्त थे। उनकी कृष्ण-भक्ति से प्रभावित होकर मीरा बचपन से ही कृष्ण-भक्ति में रत हो गईं।

मीरा का विवाह मेवाड़ के राणा साँगा के सबसे बड़े पुत्र भोजराज से हुआ था। पति के दिवंगत होने के बाद मीरा ने मेवाड़ छोड़ दिया और वृंदावन में रहने लगीं। कालांतर में वृंदावन छोड़कर वे द्वारका में बस गईं। वहीं पर सन् 1546 में उनकी मृत्यु हो गई। मीरा के पदों का संग्रह *मीरा पदावली* के नाम से मिलता है।

अभ्यास के लिए

मौखिक

- **कम-से-कम शब्दों में उत्तर दीजिए–**

(क) मीरा ने कौन-सा धन पाया?
(ख) भवसागर को कैसे पार किया जा सकता है?
(ग) मीरा ने पैरों में क्या बाँधा है?
(घ) राणा जी ने क्या भेजा?
(ङ) विष का असर मीरा पर क्यों नहीं हुआ?

लिखित

1. निम्नलिखित पंक्तियों का भावार्थ लिखिए–

(क) "मीरा के प्रभु गिरधर नागर, हरख-हरख जस गायो।"

(ख) "जोगी मत जा पाय परूँ, मैं तेरी चेरी हौं।"

(ग) "अगर चँदण की चिता बणाऊँ, अपणो हाथ जला जा।"

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) मीरा क्यों कहती हैं कि 'राम रतन धन' श्रेष्ठ है?

(ख) मीरा पर किसने और क्या आरोप लगाए?

(ग) मीरा किस प्रकार श्रीकृष्ण के साथ मिल जाना चाहती हैं?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तारपूर्वक लिखिए–

(क) राम नाम रूपी धन की क्या विशेषता है?

(ख) मीरा की भक्ति पर टिप्पणी कीजिए।

भाषा ज्ञान

1. निम्नलिखित शब्दों के हिंदी मानक रूप लिखिए–

(क) किरपा – ....कृपा.....

(ख) भेज्या – .....

(ग) लेवै – .....

(घ) बणाऊँ – .....

(ङ) तर – .....

(च) अपणे – .....

(छ) हरख – .....

(ज) जोत – .....

2. जब अर्थ में विशेषता लाने के लिए उसी अनुपात का एक और शब्द लगाकर प्रयोग किया जाता है, तो ऐसे शब्द को **शब्द-युग्म** कहते हैं। युग्म का अर्थ है–'जोड़ा'।

जैसे– हरख-हरख, जनम-जनम, जल-जल

नीचे दिए गए शब्दों के शब्द-युग्म वर्ग में दिए गए हैं। इनको छाँटकर खाली स्थान पर लिखिए–

आदान	– प्रदान	चाय	– .....
आशा	–	.....	– तरीका
.....	– पराजय	चटक	– .....
.....	– रिवाज़	शाम	– .....

प्र	नि	रा	शा
दा	तौ	पा	नी
न	र	म	स
ज	री	ट	वे
य	ति	क	रे

विषय संवर्धक क्रियाकलाप

सोचिए और बताइए

1. अगर आपको मीरा के भजन गाने के लिए कहा जाए तो आप कौन-सा भजन सुनाएँगे?
2. 'नेकी कर कुएँ में डाल' अर्थात् कर्म करो और फल की अपेक्षा कभी न करो, यह उक्ति भगवान श्री कृष्ण की थी। क्या आज भी यह संभव है? विचार प्रस्तुत कीजिए।
3. 'जैसे करम करेगा, वैसा फल देगा भगवान' यह पंक्ति भगवतगीता की है। इस विषय पर एक प्रस्ताव लिखिए।

क्रियाकलाप

- इन चित्रों को देखकर आपको कौन-सा पद याद आता है? उसे लिखिए।

गतिविधि-7

नोबेल पुरस्कार विजेता

नोबेल पुरस्कार क्या है?

.....

.....

.....

.....

.....

नोबेल पुरस्कार विजेता का चित्र

.....

.....

.....

नोबेल पुरस्कार विजेता का परिचय एवं कार्यक्षेत्र–

.....

.....

.....

.....

.....

.....

अध्यापन-संकेत–नोबेल पुरस्कार की चर्चा करके किसी एक नोबेल पुरस्कार विजेता का चित्र चिपकवाइए।

12 तेनालीराम

चिंतन-मनन

हर व्यक्ति में कुछ-न-कुछ विशेषताएँ होती हैं। इन्हीं विशेषताओं के कारण वह व्यक्ति अलग और नई पहचान बनाता है। इसलिए किसी को आगे बढ़ता देखकर उसके लिए मन में ईर्ष्या, जलन, चिढ़ आदि रखना अच्छी बात नहीं है।

नाटक के पात्र – महाराजा कृष्णदेव राय, तेनालीराम, पाँच अन्य दरबारी, दो सेवक तथा एक नाई, वाचक और बच्चों के दो सहगान।

परदा उठता है

वाचक – महाराजा कृष्णदेव राय के दरबारी तेनालीराम

सहगान – बड़े चतुर थे हँसते-गाते करते थे बुद्धि से काम
कथा तेनालीराम की बता रहे हैं आज
लगे नहीं गर **गाथा** अच्छी मत होना नाराज़

(वाचक और गाने वाले बच्चे चले जाते हैं, बगीचे में कई दरबारी टहल रहे हैं)

पहला दरबारी – (अन्य दरबारियों से) भाई साहब, इस तेनालीराम से हम सब बड़े परेशान हैं।

दूसरा दरबारी – क्यों भला? तेनालीराम से आप क्यों परेशान हैं? क्या तेनालीराम ने आपसे कुछ कहा? क्या कोई कड़वी बात कह दी?

तीसरा दरबारी – आप भाई साहब की बात नहीं समझ पाए। महाराजा कृष्णदेव राय के हम भी दरबारी हैं और तेनालीराम भी, पर अपने महाराज तेनालीराम की **प्रशंसा** करते हैं और हमें घास भी नहीं डालते।

दूसरा दरबारी – तेनालीराम अपनी **योग्यता** से प्रशंसा पाते हैं, आप भी **योग्य** बन जाइए, आपको भी प्रशंसा मिलेगी।

शब्दार्थ–**गाथा**–कथा (story), **प्रशंसा**–तारीफ़ (appriciation), **योग्यता**–काबिलियत (ability), **योग्य**–काबिल (able)

चौथा दरबारी – लगता है तेनालीराम ने आपको कुछ दिया है, तभी आप तेनालीराम की इतनी प्रशंसा कर रहे हैं।

तीसरा दरबारी – (दूसरे दरबारी से) श्रीमान जी, आपका रास्ता अलग है, हमारा रास्ता अलग। आपको जो करना है, कीजिए और हमें जो करना है, वह हम करेंगे।

दूसरा दरबारी – ठीक है, पर ध्यान रखना, तेनालीराम बहुत होशियार हैं, उनसे उलझकर आपको ही मुँह की खानी होगी!

चौथा दरबारी – होशियार होंगे आपके लिए, हमारे लिए नहीं और अब आप देखना, कौन मुँह की खाता है?

दूसरा दरबारी – मैं आप लोगों के साथ नहीं रहना चाहता। मुझे क्षमा करें, मैं अपने घर जाता हूँ।

अन्य सभी दरबारी – जाइए, जाइए तुरंत जाइए।

(दूसरा दरबारी चला जाता है)

पहला दरबारी – चलो, चला गया, तेनालीराम की पूँछ चला गया।

चौथा दरबारी – हाँ मित्रो, अब तो सब **बरदाश्त** के बाहर हो गया है। अब तो कुछ ऐसा करना चाहिए जिससे कि तेनालीराम को महाराज के सामने नीचा दिखना पड़े।

तीसरा दरबारी – तेनालीराम को शतरंज खेलना नहीं आता है!

चौथा दरबारी – हाँ, यह सच है पर अपना काम कैसे बनेगा?

तीसरा दरबारी – इसकी ज़िम्मेदारी हमपर छोड़िए, दरबार में आप सब लोग मेरे साथ रहिए और मैं जो कहूँ, उसका **समर्थन** करते जाइए, बाकी मैं सब सँभाल लूँगा।

पाँचवाँ दरबारी – ठीक है।

(दृश्य बदलता है। महाराजा कृष्णदेव राय का दरबार लगा है। दरबार में तेनालीराम भी उपस्थित हैं।)

तीसरा दरबारी – महाराज, आप सब कुछ करते हैं, पर शतरंज नहीं खेलते।

पहला दरबारी – शतरंज तो राजाओं का खेल है, आप भी शतरंज खेला करें।

महाराज – किसके साथ खेलूँ? दरबार में किसी को शतरंज आती नहीं है।

तीसरा दरबारी – कैसी बातें करते हैं महाराज, हमारे तेनालीराम जी बड़ी अच्छी शतरंज खेलते हैं।

शब्दार्थ–**बरदाश्त**–सहन (tolerance), **समर्थन**–पक्ष (favour)

पाँचवाँ दरबारी – बिलकुल सही बात है, शतरंज के अच्छे-अच्छे खिलाड़ी तेनालीराम से मात खा चुके हैं।

चौथा दरबारी – कितनों ने तो तेनालीराम के साथ शतरंज खेलना ही छोड़ दिया।

महाराज – (तेनालीराम की ओर देखकर) तब हो जाए एक-दो बाज़ी!

तेनालीराम – नहीं महाराज, मुझे शतरंज नहीं आती। ये लोग ऐसे ही कह रहे हैं, मुझे बिलकुल शतरंज नहीं आती।

एक दरबारी – तेनालीराम जी, आप महाराज का विरोध कर रहे हैं। महाराज के अनुरोध को ठुकरा रहे हैं।

तेनालीराम – महाराज, क्षमा करें। मैं आपका आदेश नहीं ठुकरा रहा हूँ पर...।

महाराज – शतरंज लाई जाए, तेनालीराम के साथ हम शतरंज खेलेंगे।

(सेवक तुरंत शतरंज लाता है। राजा और तेनालीराम शतरंज खेलते हैं। दरबारी अगल-बगल बैठकर शतरंज देखते हैं और आपस में इशारे करते हैं। मानो कह रहे हैं कि हम लोग जीत गए हैं)

तेनालीराम – महाराज, मैं खेल तो रहा हूँ, पर मैं हार जाऊँगा।

महाराज – हारोगे क्यों? मन से खेलोगे, तो नहीं हारोगे।

(तेनालीराम थोड़ी देर खेलकर हार जाता है)

तेनालीराम – देखिए महाराज, मैंने पहले ही कहा था कि मैं हार जाऊँगा।

एक दरबारी – तेनालीराम, मन से खेलो। तुम तो बहुत बड़े खिलाड़ी हो।

चौथा दरबारी – महाराज, तेनालीराम से कहिए कि ठीक से खेलें। ये बहुत अच्छा खेलते हैं।

महाराज – (गुस्से से) तेनालीराम यह हमारी आज्ञा है, तुम ठीक से खेलो। यदि अबकी बार हारे, तो भरे दरबार में तुम्हारा मुंडन किया जाएगा।

(तेनालीराम और महाराज शतरंज खेलने लगते हैं। दरबारी फिर आपस में व्यंग्यपूर्वक इशारे करते हैं और शतरंज से अनभिज्ञ तेनालीराम फिर हार जाता है)

महाराज – (नाराज़ होकर) तेनालीराम तुम जानबूझकर हार गए हो। तुमने हमारे आदेश का उल्लंघन किया है।

तेनालीराम – नहीं महाराज, मेरा विश्वास कीजिए। मैं जानबूझकर नहीं हारा हूँ।

शब्दार्थ–अनुरोध–निवेदन (request), **अनभिज्ञ**–अपरिचित, किसी बात को न जानने वाला (unaware), **उल्लंघन**–आदेश को न मानना (disobey), **विश्वास**–भरोसा (trust)

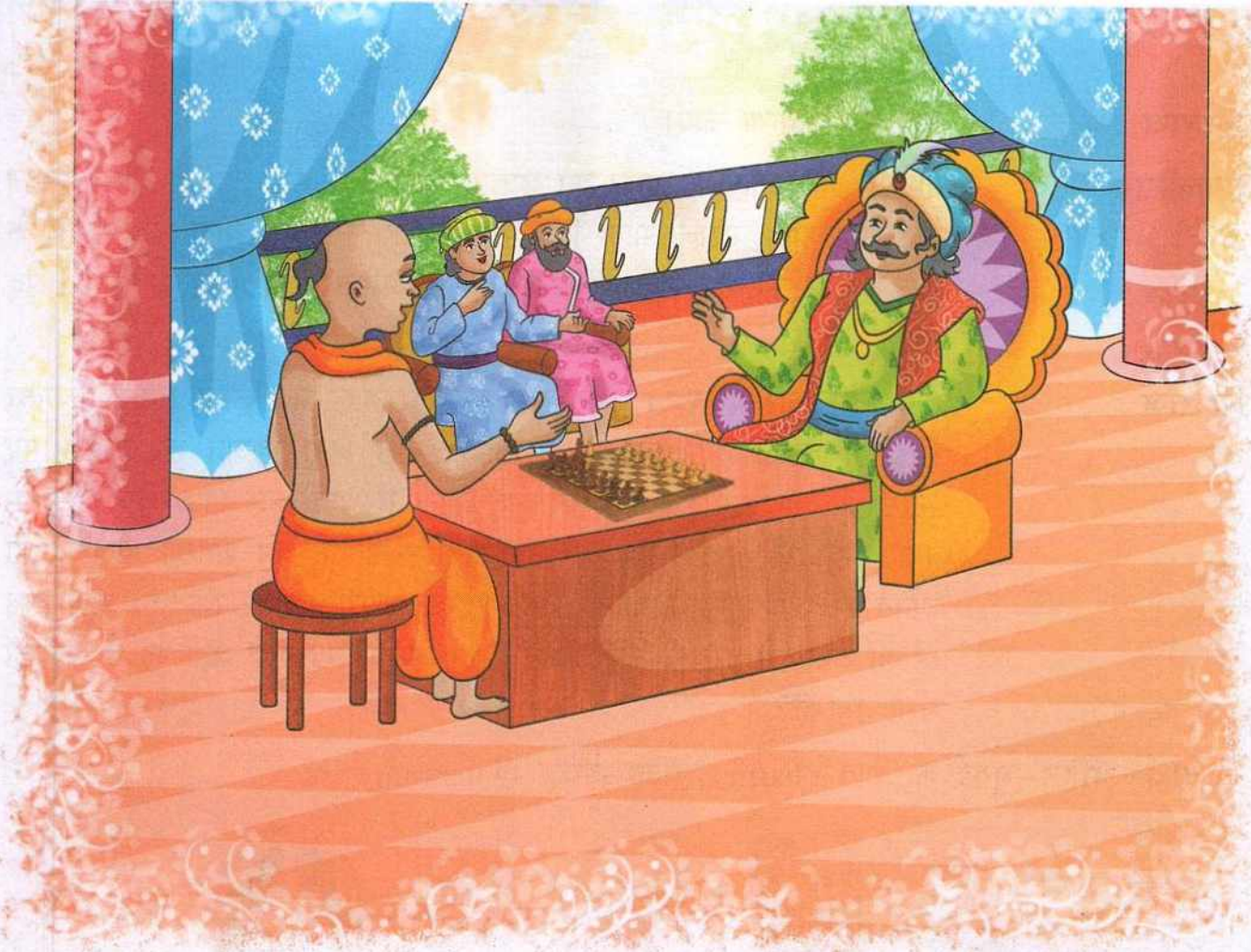

महाराज – नहीं, नाई को बुलाओ। इनका मुंडन होगा। इनको दंड मिलेगा।

(दरबारियों के चेहरे पर प्रसन्नता झलकती है। इसी समय नाई आकर प्रणाम करता है। नाई उस्तरे की धार पैनी करता है और बाल बनाने को होता है)

तेनालीराम – महाराज!

महाराज – क्या बात है?

तेनालीराम – मेरी एक बात सुन लीजिए, फिर मेरा मुंडन करा दीजिए।

महाराज – बोलो।

तेनालीराम – मैंने एक आदमी से 5000 रुपये उधार लिए हैं। बदले में मैंने यह बाल गिरवी रख दिए हैं, क्योंकि मेरे पास गिरवी रखने को कुछ नहीं था, इसलिए ये बाल अब मेरे नहीं हैं।

महाराज – तेनालीराम के घर 5000 रुपये भेजे जाएँ।

एक सेवक – जी महाराज मैं रुपये लेकर जाता हूँ।

शब्दार्थ– दंड–सज़ा (punishment), **पैनी**–तेज़ (sharp)

महाराज – अब मुंडन किया जाए।

तेनालीराम – महाराज, मैं अनाथ हूँ, पत्नी को छोड़कर मेरा और कोई नहीं है और जिसका कोई नहीं होता, उसके माता-पिता राजा ही होते हैं और बाल माता-पिता के मरने पर ही कटवाए जाते हैं। आपका कोई **अहित** न हो, इसलिए मैं मंत्र पढ़ रहा हूँ।

महाराज – (नाई की ओर देखकर) ठहरो ऐसा है, तब बाल मत काटो (कुछ रुककर थोड़ा मुसकराते हुए) तेनालीराम, जाओ तुम्हें क्षमा किया। हम समझ गए शतरंज में चाहे तुम हार गए, पर बुद्धिमानी में थोड़ी हार मान लोगे और तुम क्या समझ रहे थे कि हमें यह नहीं पता चला कि तुम शतरंज खेलना नहीं जानते हो। हम तुम्हारी पहली चाल से ही समझ गए थे कि तुम सच कह रहे हो और जो दरबारी तुम्हें शतरंज का अच्छा खिलाड़ी बता रहे हैं, उनकी **मंशा** क्या है?

शब्दार्थ–अहित–बुराई का भाव (harm), **मंशा**–इच्छा (intention)

(दरबारियों के चेहरों पर उदासी है। तेनालीराम कृतज्ञता में सिर नवाकर महाराज का आभार प्रकट करते हैं)

सभी दरबारी – क्षमा महाराज, अब आगे ऐसी गलती नहीं होगी।

महाराज – क्षमा हमसे नहीं, तेनालीराम से माँगिए।

सभी दरबारी – तेनालीराम जी, क्षमा कर दीजिए। आगे ऐसा नहीं होगा।

(दूसरा दरबारी सभी को तेनालीराम से **क्षमा** माँगते देख मुसकराता है, उससे नज़र मिलते ही सभी **झेंप** जाते हैं। तेनालीराम सभी को मुसकराते हुए क्षमा करने का **संकेत** करते हैं। इसके साथ ही सभी पात्र स्थिर रह जाते हैं।)

वाचक – नाटक खत्म हुआ है, जिसमें जीत गए तेनाली जी।
मुँह की खाकर सब गुमसुम हैं, वार गया यह खाली जी।।

(सभी कलाकार दर्शकों का हाथ जोड़कर अभिवादन करते हैं)

परदा गिरता है

–डॉ. श्रीप्रसाद

शब्दार्थ–क्षमा–माफ़ (pardon), **झेंप**–लज्जित होने का भाव (shyness), **संकेत**–इशारा (sign)

लेखक परिचय

श्रीप्रसाद जन्म का जन्म 5 जनवरी, 1932 को पराना, आगरा, उत्तर प्रदेश में हुआ। इन्होंने पर्याप्त मात्रा में बाल साहित्य, अनुवाद तथा संपादन कार्य किया। इनकी मुख्य कृतियाँ हैं– मेरा साथी घोड़ा, खिड़की से सूरज, ढम ढमाढम, मेरी प्रिय बाल कविताएँ (बालकाव्य संग्रह), चिड़ियाघर की सैर, फूलों के गीत, झिलमिल तारे, खेलो और गाओ, तकतकधिन, गीत गीत में गिनती, मीठे मीठे गीत, अक्षर गीत, सीखो अक्षर गाओ गीत, मेरे प्रिय शिशुगीत, मेरी प्रिय गीत पहेलियाँ (शिशुगीत संग्रह), रेल की सीटी, पिकनिक और अन्य कहानियाँ, आजा री सुखनींदरिया, नई राह, सर्कस और अन्य हास्य कहानियाँ, फ्लोरेंस नाइटिंगेल, बेताल पचीसी, दादी का पंचतंत्र, मेरी प्रिय बाल कहानियाँ, डॉ० श्रीप्रसाद की चुनिंदा बाल कहानियाँ (बाल कहानी संग्रह), कृष्ण कथा, गुड्डे का जन्मदिन, एक थाल मोती से भरा, ढोल बजा, पंचतंत्र के नाटक (बाल नाटक संग्रह), शाबाश श्यामू, अंतू की आत्मकथा (बाल उपन्यास), बनारस से बल्गारिया : मेरी डायरी (यात्रा वृत्तांत) इन्हें समय-समय पर अनेक सम्मान प्राप्त हुए हैं। इनका निधन 12 अक्टूबर, 2012 को वाराणसी में हुआ।

अभ्यास के लिए

मौखिक

• **कम-से-कम शब्दों में उत्तर दीजिए–**

(क) तेनालीराम किस राजा के दरबार में रहा करते थे?

(ख) तेनालीराम के कोई दो गुण बताइए।

(ग) कौन-से दरबारी ने तेनालीराम की योग्यता की प्रशंसा की?

(घ) शतरंज के खेल में किसकी हार हुई?

(ङ) तेनालीराम से उलझकर किनको मुँह की खानी पड़ी?

लिखित

1. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(क) तेनालीराम की ..... की महाराजा कृष्णदेव राय प्रशंसा किया करते थे।

(ख) तेनालीराम को ..... खेलनी नहीं आती थी।

(ग) चिढ़ने वाले चारों दरबारियों ने ..... को दरबार में अपमानित करवाने के लिए महाराजा कृष्णदेव राय के साथ शतरंज खिलवाने की योजना बनाई।

(घ) महाराजा कृष्णदेव राय ने उन दरबारियों की ..... भाँप ली थी।

(ङ) अंत में महाराजा कृष्णदेव राय ने उन दरबारियों को तेनालीराम से ..... माँगने का आदेश दिया।

2. सही वाक्य के सामने (✓) तथा गलत वाक्य के सामने (✗) का निशान लगाइए–

(क) दूसरा दरबारी तेनालीराम की काबिलियत से बहुत प्रभावित था। उसने चारों दरबारियों को तेनालीराम से न उलझने की बहुत सलाह दी। ☐

(ख) तेनालीराम शतरंज के बहुत बेहतरीन खिलाड़ी थे। ☐

(ग) तेनालीराम की पहली चाल से ही महाराजा कृष्णदेव राय उन दरबारियों की मंशा भाँप गए, जिन्होंने उन्हें तेनालीराम के साथ शतरंज खेलने के लिए उकसाया था। ☐

(घ) शतरंज की पहली बाज़ी महाराजा कृष्णदेव राय ने जीती, किंतु दूसरी बाज़ी तेनालीराम ने जीती। ☐

(ङ) तेनालीराम के घर 5000 रुपये भेजे गए। ☐

(च) अंत में चारों दरबारियों को तेनालीराम से क्षमा माँगनी पड़ी। ☐

3. किसने, किससे कहा?

कथन	किसने कहा?	किससे कहा?
(क) "चलो, चला गया, तेनालीराम की पूँछ चला गया।"	.....	.....
(ख) "ठहरो, ऐसा है, तब बाल मत काटो।"	.....	.....
(ग) "क्षमा हमसे नहीं, तेनालीराम से माँगिए।"	.....	.....

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) पहला दरबारी तेनालीराम के बारे में क्या कह रहा था? उसका विरोध किस दरबारी ने किया?

(ख) दूसरे दरबारी ने तीसरे दरबारी को क्या जवाब दिया?

(ग) तेनालीराम से चिढ़ने वाले दरबारी उन्हें महाराज के साथ शतरंज की बाज़ी क्यों खिलवाना चाहते थे?

(घ) सब कुछ जानते हुए महाराजा कृष्णदेव राय ने तेनालीराम के साथ शतरंज क्यों खेली?

(ङ) अंत में दूसरे दरबारी से नज़र मिलते ही चारों दरबारी क्यों झेंप गए?

5. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तारपूर्वक लिखिए–

(क) कुछ दरबारी तेनालीराम से क्यों परेशान थे? दरबारियों ने तेनालीराम को दरबार में अपमानित करने के लिए क्या किया?

(ख) महाराज कृष्णदेव राय ने मुंडन की सज़ा किसे और क्यों दी? तेनालीराम कौन-सी युक्ति अपनाकर सज़ा से बच गए?

भाषा ज्ञान

1. नीचे लिखे वाक्यों में रेखांकित शब्द का विलोम लिखकर रिक्त स्थान भरिए–

(क) इस ऑफ़िस के कुछ कर्मचारी तो <u>योग्य</u> हैं, तो कुछ बिलकुल .....।

(ख) उसके हर बात में <u>अक्लमंदी</u> झलकती है, एक तुम हो जो बात-बात में ..... करते हो।

(ग) ईमानदारी से कार्य करने में सबका <u>हित</u> है, बेईमानी में तो ..... ही है।

(घ) हर कोई उसकी <u>प्रशंसा</u> करता है, तुम क्यों उसकी ..... कर रहे हो?

(ङ) हमें भ्रष्टाचारी को <u>समर्थन</u> न देकर उसका ..... करना चाहिए।

2. नीचे लिखे शब्दों के दो-दो पर्यायवाची लिखिए–

(क) राजा – ....

(ख) हार – ....

(ग) चतुर – ....

(घ) बुद्धि – ....

(ङ) प्रणाम – ....

(च) ईर्ष्या – ....

3. नीचे दिए गए वाक्यांशों के लिए एक शब्द लिखिए–

जैसे– सप्ताह में एक बार होने वाला ....साप्ताहिक.....

जो कभी बूढ़ा न हो ....अजर.....

(क) जिसके माता-पिता न हों .....

(ख) किए गए उपकार को मानना .....

(ग) साथ में मिलकर गाया जाने वाला गान .....

(घ) आज्ञा का पालन न करना .....

4. नीचे दिए गए मुहावरों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

(क) घास न डालना – महत्व न देना

.....

(ख) नीचा दिखना – अपमानित होना

.....

(ग) मुँह की खाना – पराजय मिलना

.....

विषय संवर्धक क्रियाकलाप

सोचिए और बताइए

1. किसी को आगे बढ़ता देखकर उसके लिए मन में ईर्ष्या, जलन, चिढ़ आदि रखना अच्छी बात नहीं है। यह गलत क्यों है? ऐसा करके व्यक्ति को क्या मिलता है? इससे क्या नुकसान होता है? इस बारे में अपने समूह के साथ मिलकर बातचीत कीजिए।
2. तेनालीराम ने एक युक्ति कामयाब न होने पर भी हार नहीं मानी और अगले ही पल ऐसी युक्ति सामने रख दी कि राजा को उनको दिया गया दंड वापस लेना पड़ा। आप यदि तेनालीराम की जगह होते, तो सज़ा से बचने के लिए क्या उपाय करते?
3. सोचकर बताइए कि राजा ने उन चारों दरबारियों को मुंडन की सज़ा क्यों नहीं सुनाई?

क्रियाकलाप

1. प्रसिद्ध विदूषक बीरबल, तेनालीराम, गोनू झा आदि में से किसी एक के बारे में जानकारी जुटाकर उनसे जुड़ी कोई एक कहानी कक्षा में सुनाइए।
2. 'तेनालीराम' नाटक को कहानी के रूप में प्रस्तुत कीजिए।

13 ट्राम

चिंतन-मनन

विज्ञान ने अपने पंख पसारे और मनुष्य जहाँ बैलगाड़ी से यातायात करता था, उसकी जगह ट्राम जैसे आधुनिक साधनों ने ले ली, लेकिन मनुष्य मुख्य बात भूल गया, वह है 'मानवता' अर्थात् एक दूसरे के दुखों को समझना। कवि के अनुसार यह ठीक नहीं है। चाहे कितनी भी प्रगति हो जाए, मानवता श्रेष्ठ है।

हम ठीक तरह चढ़ भी न सके
घर-घर घर-घर चल पड़ी ट्राम!
दुबले-मोटे लंबे-नाटे
यात्री बेंचों पर अड़े हुए,
कुछ अपनी जेब सम्हाले थे
कुछ बने-ठने थे, जाली थे!
आने वालों, जाने वालों
की मची हुई थी धूम-धाम।
हम ठीक तरह चढ़ भी न सके
घर-घर घर-घर चल पड़ी ट्राम!
रुक गई ट्राम झटका खाकर
दरवाज़े पर आँखें घूमीं,
मदमाती इठलाती युवती
नयनों ने उसकी छवि चूमी।
आई उछाह की एक लहर
हँसकर मन की मस्ती झूमी,

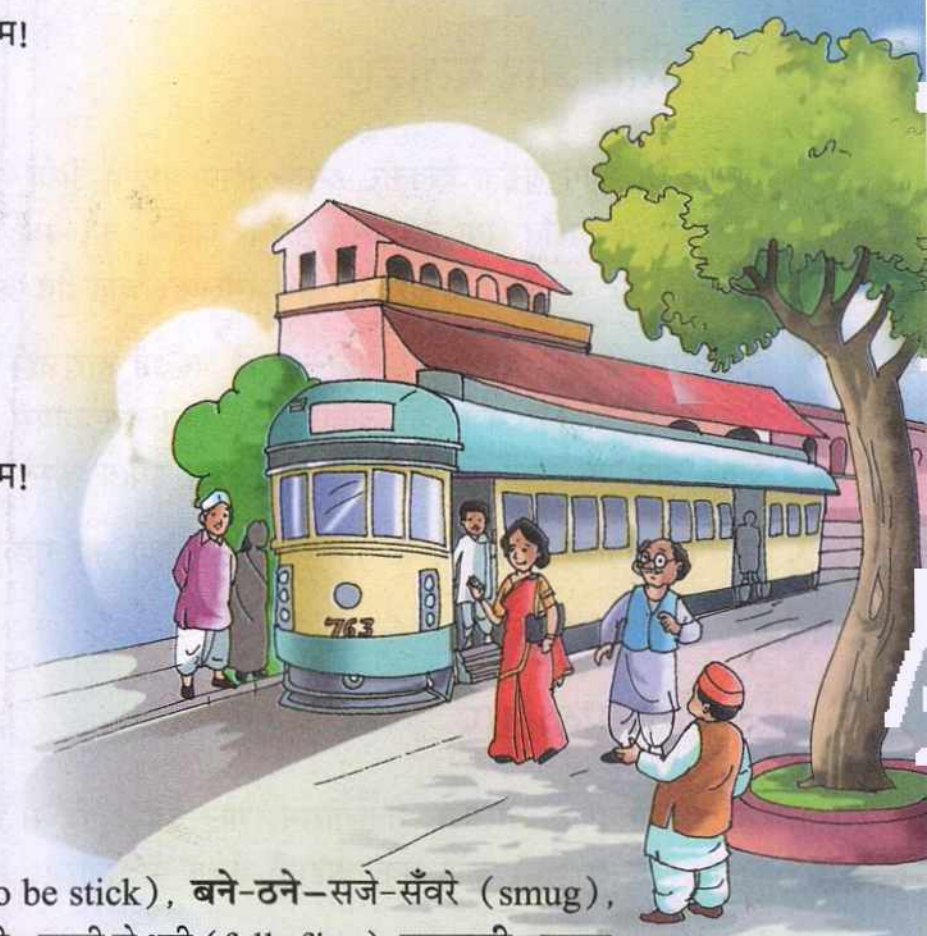

शब्दार्थ–**अड़े**–अटकना, रुकना (to be stick), **बने-ठने**–सजे-सँवरे (smug), **जाली**–नकली (artificial), **मदमाती**–मस्ती से भरी (full of joy), **इठलाती**–नखरा करती (affectedly), **छवि**–रूप (sight), **उछाह**–उत्साह (enthusiasm)

थी एक अप्सरा या कि परी
रह गए सभी दिल थाम-थाम।
कंधे से कंधे भिड़े हुए
थी भरी खचाखच ट्राम कहाँ,
औ, नहीं दिखाई देता था
तिल रखने का भी ठौर जहाँ।
हँसती-सी बाँकी चितवन पर
बेंचें खाली हो गई वहाँ,
आदर से युवती बैठ गई
कुछ बल खाकर, कुछ झूम-झाम!
फिर चौराहे पर ट्राम रुकी
अब चढ़ी एक बुढ़िया जर्जर,
थीं शिथिल पिंडलियाँ काँप रहीं
थी हाँफ़ रही, था उसको ज्वर।

वे सभ्य और मनचले लोग
चुप बैठे थे बनकर पत्थर!
धन और रूप के भिखमंगों को
था दुखिया से कौन काम?
हमने सोचा अनियंत्रित रव
से भरा हुआ यह कलकत्ता,
कितना विशाल इसका वैभव
कितनी महान इसकी सत्ता!
कितनी गंभीर इसकी गुरुता
पर एक बात है अलबत्ता,
पशु बनकर मानव भूल गया
है मानवता का नाम-ग्राम!
हम ठीक तरह चढ़ भी न सके
घर-घर घर-घर चल पड़ी ट्राम!

–भगवतीचरण वर्मा

शब्दार्थ–ठौर–स्थान (place), **बाँकी**–टेढ़ी (attractive), **चितवन**–दृष्टि (look), **जर्जर**–जीर्ण (decrepit), **मनचला**–मनमौजी (flirtatious), **रव**–ध्वनि (sound), **गुरुता**–महत्व, गौरव (importance), **अलबत्ता**–बेशक, निस्संदेह (undoubtedly)

कवि परिचय

हिंदी के प्रसिद्ध साहित्यकार भगवतीचरण वर्मा का जन्म 30 अगस्त, 1903 को शफीपुर गाँव (उन्नाव जिला, उत्तर प्रदेश) में हुआ। इन्होंने बी०ए०, एल०एल०बी० की परीक्षा उत्तीर्ण की थी। ये लेखन व पत्रकारिता के क्षेत्र में सक्रिय थे। ये राज्यसभा के सदस्य भी रहे। इनका निधन 5 अक्तूबर, 1981 को हुआ।

रचनाएँ–उपन्यास–तीन वर्ष, रेखा, भूले बिसरे चित्र, सीधी सच्ची बातें आदि।

कहानी संग्रह–राख और चिंगारी, इंस्टालमेंट।

संस्मरण–अतीत की गर्त से

सम्मान–साहित्य अकादमी पुरस्कार, पद्मभूषण।

अभ्यास के लिए

मौखिक

- **कम-से-कम शब्दों में उत्तर दीजिए–**

(क) ट्राम कैसे चल पड़ी?

(ख) ट्राम कैसे रुकी?

(ग) किसे देखकर सभी ने दिल थाम लिया?

(घ) दूसरी बार ट्राम कहाँ रुकी?

(ङ) बुढ़िया क्यों हाँफ़ रही थी?

लिखित

1. निम्नलिखित पंक्तियों का भावार्थ लिखिए–

(क) धन और रूप के भिखमंगों को
था दुखिया से कौन काम?

.....

.....

(ख) पशु बनकर मानव भूल गया
मानवता का नाम-ग्राम!

.....

.....

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) ट्राम में कैसे-कैसे लोग चढ़े?

(ख) मन की मस्ती क्यों झूमी?

(ग) तिल रखने का भी ठौर न होने का क्या अर्थ है?

(घ) 'चुप बैठे थे बनकर पत्थर!' के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है?

(ङ) 'हम ठीक तरह चढ़ भी न सके' पंक्ति के द्वारा कवि क्या कहना चाहता है?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तारपूर्वक लिखिए–

(क) ट्राम में चढ़ने वाले यात्रियों का चरित्र चित्रण कीजिए।

(ख) ट्राम या मैट्रो से यात्रा करते समय यात्रियों को कैसा व्यवहार करना चाहिए?

भाषा ज्ञान

1. निम्नलिखित शब्द-समूह में से बेमेल शब्दों पर गोला ◯ लगाइए–

(क) स्त्री	वनिता	नारी	खरी
(ख) स्कूटर	खेल	रेल	बस
(ग) अध्यापक	पेंसिल	मस्तक	पुस्तक
(घ) आँख	नाक	पैर	बैर
(ङ) तुलसी	कबीर	अमीर	सूर

2. दुबले, मोटे, लंबे, नाटे–ये शब्द विशेषण हैं। ये संज्ञा के बारे में अधिक जानकारी देते हैं। इस कविता में आए हुए सभी विशेषण शब्दों की सूची बनाइए–

.....

.....

.....

3. मुहावरे वाक्यों के अंश होते हैं। ये भाषा को प्रभावशाली बनाते हैं। इनके अर्थ साधारण नहीं, विशेष होते हैं; जैसे–

जेब सँभालना	–	पैसा सँभालना
दिल थाम लेना	–	मन के भावों को बाहर न आने देना
कंधे से कंधा भिड़ना	–	बहुत भीड़ होना
पत्थर बनना	–	ऐसा दिल जिसमें करुणा, दया आदि कोमल भावों का उदय न हो
तिल रखने का भी ठौर न होना	–	थोड़ा-सा भी स्थान खाली न होना

उपर्युक्त मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

.....

.....

.....

.....

.....

4. **निम्नलिखित पंक्तियों को गद्य रूप में लिखिए–**

(क) आई उछाह की एक लहर ...उछाह की एक लहर आई.....

(ख) थी एक अप्सरा या कि परी .....

(ग) आदर से युवती बैठ गई .....

(घ) थी शिथिल पिंडलियाँ काँप रहीं .....

(ङ) चुप बैठे थे बनकर पत्थर! .....

विषय संवर्धक क्रियाकलाप

सोचिए और बताइए

1. 'आज का मानव संवेदनहीन होने लगा है' आपके विचार से इसका क्या कारण हो सकता है? इस विषय पर एक परिच्छेद लिखिए।

2. 'अनाथों, कुपोषितों पर दया करना मानव धर्म है' इस विषय पर चर्चा कीजिए। **(मूल्यपरक प्रश्न)**

3. ट्राम और मेट्रो की सवारी में क्या अंतर है?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

क्रियाकलाप

- अपने अध्यापक और घर के बड़ों से अथवा इंटरनेट से ट्राम के बारे में जानकारी प्राप्त कीजिए कि ट्राम कहाँ-कहाँ चलती थी और कैसी थी?

अतिरिक्त पठन

आचार्य देवो भव

गुरुकुल में जाकर शिक्षा प्राप्त करना प्राचीन काल की पद्धति थी। गुरुओं के आश्रम को 'गुरुकुल' कहते थे। गुरुकुल के मुख्य को 'आचार्य' कहते थे। धनी-निर्धन, राजा-रंक सभी गुरुकुल में पढ़ते थे। सभी विद्यार्थी गुरु तथा गुरुमाता की आज्ञा का पालन करते थे और वेदों का अध्ययन करते थे।

महर्षि अयोद्धौम्य एक महान आचार्य थे। वे बड़े विद्वान थे। उनकी छत्रछाया में अनेक छात्र गुर सीखते थे। वे अपने शिष्यों से बहुत प्रेम करते थे और उनकी कठोर परीक्षा भी लिया करते थे। महर्षि अयोद्धौम्य के आश्रम में एक शिष्य था जिसका नाम आरुणि था। वह बहुत आज्ञाकारी और तीक्ष्ण बुद्धिवाला था।

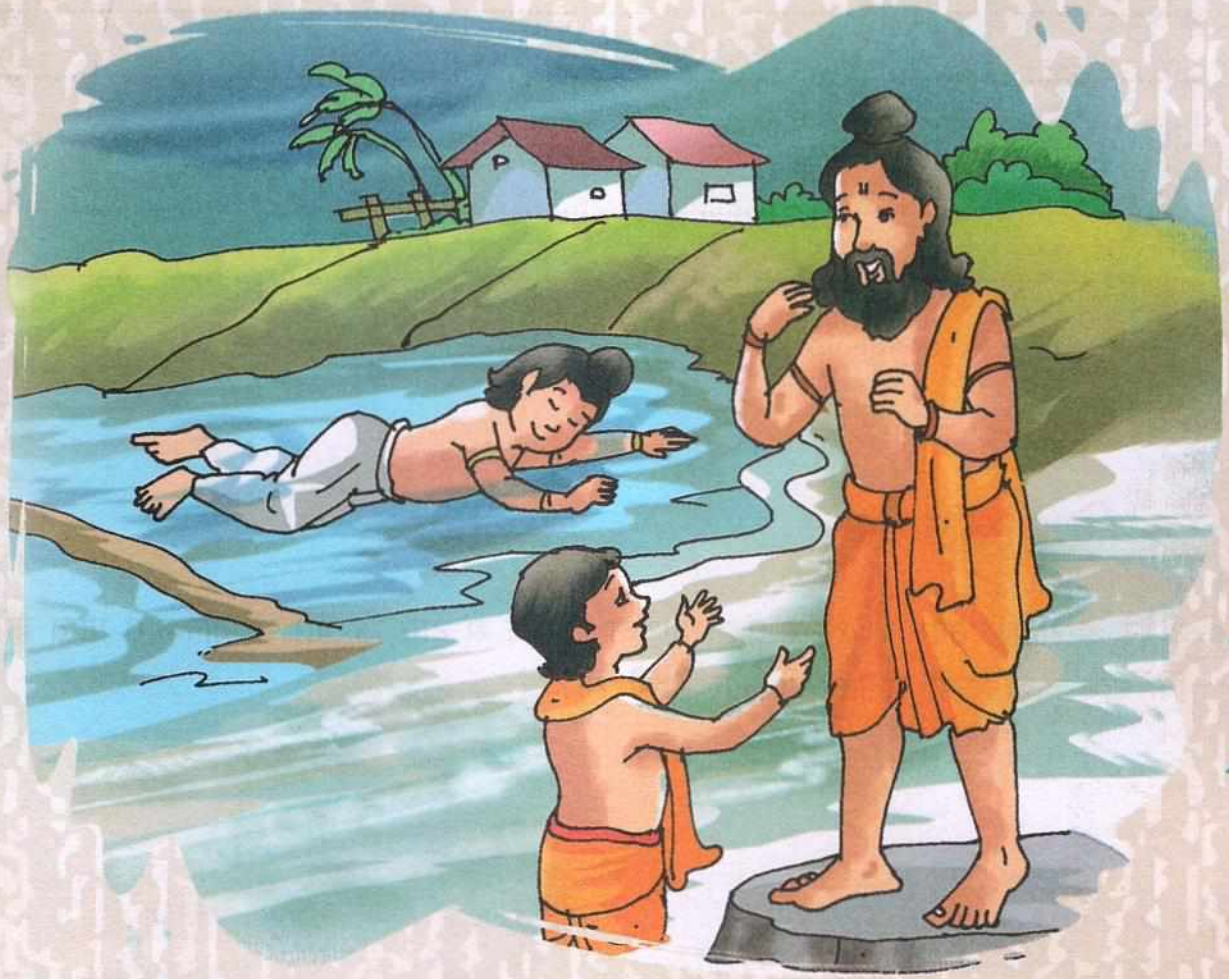

एक दिन अतिवृष्टि हुई। अतिवृष्टि के कारण गुरुकुल के खेतों में खूब सारा पानी जमा हो गया। पानी के वेग के कारण एक खेत की मेड़ टूट गई और मिट्टी बहने लगी। गुरु जी ने आरुणि को मेड़ को ठीक करने के लिए खेत में भेज दिया।

आरुणि ने देखा कि तीव्र वेग के कारण मिट्टी टिक नहीं रही है। मिट्टी को रोकने के लिए वह उस स्थान पर लेट गया, जहाँ से पानी बह रहा था। वह दिनभर वहीं लेटा रहा क्योंकि उठने से खेत की मिट्टी बह जाने का डर था। प्राणों की चिंता न कर उसने गुरु की आज्ञा का पालन करना अपना कर्तव्य समझा। कुछ समय बाद वर्षा के थमने से पानी और मिट्टी का बहना रुक गया।

गुरु जी को याद ही नहीं रहा कि उन्होंने आरुणि को खेत में भेजा है। सायंकाल के संध्या वंदन के समय गुरु जी को आरुणि की अनुपस्थिति का पता चला, तब उन्हें याद आया और वे अपने अन्य शिष्यों के साथ धुँधले प्रकाश में खेत की ओर बढ़ चले। एक तरफ़ उनके मन में आरुणि के प्रति प्रेम भर रहा था तो दूसरी तरफ़ उन्हें डर भी लग रहा था। खेतों में पहुँचकर स्नेहपूर्ण हृदय से उन्होंने पुकारा, "बेटा आरुणि! तुम कहाँ हो?" गुरु जी की वाणी सुनकर आरुणि ने लेटे-लेटे उत्तर दिया, "गुरु जी! जल के प्रवाह को रोकने के लिए मैं स्वयं यहाँ लेटा हुआ हूँ।" गुरु जी घबराकर तत्काल आरुणि की ओर बढ़े। उन्होंने अपने आज्ञाकारी शिष्य को जल में से उठाकर छाती से लगा लिया।

आज भी कर्तव्यपरायण गुरु भक्त आरुणि का नाम बड़े आदर से लिया जाता है।

14 घमंडी डाली

चिंतन-मनन

पाठ में नन्ही चिड़िया के माध्यम यह बताने का प्रयास किया गया है कि हमेशा निरपेक्ष भाव से एक-दूसरे की मदद करनी चाहिए। पेड़, पक्षी के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि हमेशा कार्य करते रहो। एक-दूसरे के भावों को समझने और समझाने का प्रयास करो। नए आयाम के रूप में लिखी यह कहानी विचारों को अलग दिशा में ले जाती है।

एक नन्ही चिड़िया बहुत दूर से उड़ते हुए आ रही थी। तेज़ गरमी थी। वह प्यास से बेहाल थी। उसके नन्हे पंखों में अब और अधिक दूर तक उड़ने की ताकत नहीं बची थी। तभी थोड़ी दूरी पर उसे एक घना पेड़ दिखा। चिड़िया ने अपनी बची-खुची ताकत समेटी और उस पेड़ की तरफ़ उड़ने लगी। जल्दी ही वह उस पेड़ पर पहुँच गई। गरमी से बचने के लिए वह पेड़ की पत्तियों के बीच घुसने लगी। डाल-डाल पर फुदकते हुए वह एक घनी पत्तियों से भरी मज़बूत डाली तक पहुँची। यह पेड़ के बीचोंबीच थी। चारों तरफ़ से पत्तियों से घिरी हुई। यहाँ ठंडी छाँव थी क्योंकि चारो तरफ़ ढेर सारी पत्तियाँ होने के कारण सूरज की गरमी यहाँ तक पहुँच नहीं पाती थी। चिड़िया उस डाली पर बैठ गई। डाली ने देखा कि चिड़िया गरमी और थकान से सुस्त हो रही है तो उसे दया आ गई। डाली ने तुरंत उसे एक रसभरा फल खाने को दिया और अपने पत्ते हिलाकर उसे हवा करने लगी।

शब्दार्थ–**नन्ही**–छोटी (small child), **बेहाल**–बुरा हाल (bad condition), **रसभरा**–रस से भरा (juicy)

चिड़िया ने उसे धन्यवाद कहा और फल खा लिया। फल खाकर उसे राहत मिली और ताकत आई।

"तुम्हारा घर कहाँ है? तुम कहाँ से आई हो?" जब चिड़िया फल खा चुकी तो डाली ने सहानुभूति से पूछा।

"मेरा घर बहुत दूर है। एक शिकारी **बाज** मेरे पीछे लगा था। उससे बचते हुए मैं बहुत दूर उड़ आई हूँ। मुझे अब याद ही नहीं आ रहा कि मेरा घर कहाँ है," नन्ही चिड़िया रोते हुए बोली।

"प्यारी चिड़िया रो मत। तुम मेरे पास आराम से रह सकती हो। यहाँ तुम्हें खाने को ढेर सारे फल मिलेंगे। मेरे पत्तों के बीच तुम सुरक्षित होकर चैन से रह सकती हो", डाली ने स्नेह भरे स्वर में कहा। डरी, थकी चिड़िया को डाली की स्नेह भरी बातों से बड़ा आराम और भरोसा मिला। वह अपने पंख लपेटकर डाली पर सो गई। डाली बड़े प्यार से अपने पत्तों से उसे थपकियाँ देने लगी। डाली के स्नेह ने चिड़िया के घाव भर दिए। अब वह **निडर** होकर वहाँ रहने लगी। आस-पास उड़ती, चहकती और फिर आकर डाली पर बैठ जाती। उसके आने से डाली का **अकेलापन** भी दूर हो गया। दिन भर चिड़िया के चहकने का मधुर संगीत उसके आस-पास गूँजता रहता। चिड़िया भी उसका खूब मान रखती। हमेशा उसकी सहृदयता और बड़प्पन की प्रशंसा करती। धीरे-धीरे डाली में घमंड आने लगा कि वह बहुत महान है, उसने चिड़िया की मदद नहीं की होती तो वह बाज का शिकार बन जाती। चिड़िया सिर्फ़ उसी के कारण जीवित है, वह अपने फल खिलाकर उसे पाल रही है और बदले में चिड़िया उसे कुछ नहीं दे सकती।

डाली का स्वभाव बदलने लगा। वह चिड़िया को ताने मारने लगी। उसकी प्यारी चहचहाहट अब डाली को शोर लगती। अब वह उससे पहले की तरह प्यार से भी नहीं बोलती। हमेशा उसे डाँटती रहती। चिड़िया के पंजे उसे चुभने लगे, चिड़िया बेचारी डरी सहमी रहने लगी। अब तो डाली को उसका बैठना भी बोझ लगने लगा। उसका फल खाना भी अखरने लगा। वह हर समय कड़वा बोलने लगी। चिड़िया बेचारी **रुआँसी** हो गई। आखिर एक दिन डाली ने चिड़िया को डाँटकर भगा दिया। चिड़िया रोती हुई पास लगी एक झाड़ी में छुपकर रहने लगी। वह कीड़े खाकर गुज़ारा करने लगी। पेट तो भर जाता लेकिन डाली का पहले का स्नेह उसे बहुत याद आता। रात भर उसे डाली की थपकियाँ याद आती और वह उदास हो जाती। दिन भर वह आशा में डाली की तरफ़ देखती रहती कि उसे अपने पास बुला लेगी।

शब्दार्थ–**बाज**–एक शिकारी पक्षी (hawk), **निडर**–बिना डरे, धैर्यशाली (brave), **अकेलापन**–अकेले रहना (loneliness), **रुआँसी**–रोना (to cry)

इधर जैसे ही चिड़िया चली गई डाली पर कीड़ों ने हमला कर दिया। वे उसके रसीले फल खाने उस पर चढ़ने लगे। कीड़ों ने उसके पत्तों में भी छेद कर दिए। फल खराब कर दिए। कई कीड़ों ने डाली पर जगह-जगह छेद करके अपने घर बना लिए। वे बेवजह भी डाली को खूब परेशान करते, उसे काटते। डाली दर्द से कराह उठती। चिड़िया थी तो वह कीड़ों को पास नहीं फटकने देती थी। कीड़ों को मार देती थी। अब डाली को अहसास हुआ की नन्ही चिड़िया उसके लिए क्या करती थी। चिड़िया की वजह से ही वह फल-फूल रही थी। अब कीड़े उसके फूलों को भी नष्ट कर रहे थे, तो फल कहाँ से आएँगे।

दु:ख और **पश्चाताप** से डाली सूखने लगी। उसे चिड़िया की खूब याद आती। लेकिन अब किस मुँह से उसे वापस बुलाए। इधर चिड़िया भी देख रही थी कि डाली सूखती जा रही है। उसका मन तड़प उठता, लेकिन हिम्मत नहीं हो रही थी उसके पास जाने की। कुछ ही दिनों में डाली पूरी तरह मुरझा गई। उसके सारे फूल-पत्ते झड़ गए। अब चिड़िया से नहीं रहा गया। वह डाली के पास गई।

"प्यारी डाली यह तुम्हें क्या हो गया, तुम **मुरझा** क्यों रही हो?" चिड़िया ने स्नेह से पूछा।

डाली की आँखों में आँसू भर आए। "यह सब तुम्हारे साथ किए बुरे व्यवहार का परिणाम है। देखो कीड़ों ने मेरा क्या हाल कर दिया है। मुझे माफ़ कर दो, मैंने तुम्हें बहुत दु:ख दिए। मुझे मेरे घमंड की सज़ा मिल गई।"

"ऐसा मत कहो प्यारी डाली, तुमने मेरी जान बचाई, मुझे घर दिया, इतना प्यार दिया, इन बदमाश कीड़ों को तो मैं अभी मज़ा चखाती हूँ। तुम चिंता मत करो।" कहते हुए चिड़िया ने कीड़ों को मारना शुरू कर दिया। दो दिन में ही चिड़िया ने सारे कीड़ों को मार दिया। अब वह डाली के घावों पर पंखों से हवा करती रहती। उसके स्नेह ने डाली को बहुत जल्दी स्वस्थ कर दिया। वह फिर से **हरी-भरी** हो गई, फूल-फल से लद गई। डाली और चिड़िया दोनों खुशी तथा प्यार से साथ रहने लगीं। चिड़िया के मधुर गीत फिर से डाली के आस-पास **गूँजने** लगे।

–डॉ० विनिता राहुरिकर

शब्दार्थ–पश्चाताप–पछताना (repentence), **मुरझाना**–सूख जाना (driedup), **हरी-भरी**–खुशहाल (greenery), **गूँजना**–फैलना (echoing)

लेखिका परिचय

डॉ० विनिता राहुरिकर का जन्म 1 दिसंबर, 1980 के दिन हुआ। इन्होंने 'वनस्पति विज्ञान' में एम०एससी० का अध्ययन किया, पर इनका रुझान हिंदी की ओर रहा है। बाल-मानस पर संस्कार देने वाली इनकी कई कहानियाँ और कहानी संग्रह पुरस्कृत हैं। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में इनकी रचनाएँ प्रकाशित हुई हैं।

इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं– पराई ज़मीन पर उगे पेड़ (कहानी संग्रह), घर-आँगन की छाँव में (कविता संग्रह), सृजन, ऊँचे दरखतों की छाँव में (कविता संग्रह) आदि। इन्हें साहित्य शिरोमणि, साहित्य वाचस्पति, मध्य प्रदेश भूषण पुरस्कार, देवी स्मृति बाल साहित्य पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। इनकी कहानियों का अंग्रेज़ी सहित 10–12 भारतीय भाषाओं में अनुवाद हुआ है।

अभ्यास के लिए

मौखिक

• **कम-से-कम शब्दों में उत्तर दीजिए–**

(क) नन्ही चिड़िया किससे बेहाल थी?

(ख) थोडी दूरी पर उसे क्या दिखाई दिया?

(ग) चिड़िया ने पेड़ पर सहारा क्यों लिया?

(घ) पेड़ ने चिड़िया की आवभगत कैसे की?

लिखित

1. संदर्भ सहित आशय स्पष्ट कीजिए–

(क) तुम्हारा घर कहाँ है? तुम कहाँ से आई हो?

(ख) प्यारी डाली तुम्हें क्या हो गया, तुम मुरझा क्यों रही हो?

(ग) ऐसा मत कहो प्यारी डाली, तुमने मेरी जान बचाई है।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) डाली के स्नेह से चिड़िया के जीवन में क्या बदलाव आया?

(ख) डाली के स्वभाव में क्या अंतर आया?

(ग) चिड़िया के चले जाने से क्या हुआ?

(घ) चिड़िया ने वापस आकर क्या किया?

(ङ) कहानी के अंत में क्या हुआ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तारपूर्वक लिखिए–

(क) डाली को अपने ऊपर घमंड क्यों हुआ और उसने क्या किया?

(ख) चिड़िया के जाने के बाद डाली का क्या हुआ और उसकी दशा में सुधार कैसे हुआ?

भाषा ज्ञान

1. कोष्ठक में दिए गए शब्दों में से उचित शब्द चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(क) पत्तियों से ..... मज़बूत डाली तक पहुँची। (भारी/भरी)

(ख) तुम सुरक्षित होकर ..... से रह सकती हो। (चैन/चेन)

(ग) गरमी ..... थकान से सुस्त हो रही है। (और/ओर)

(घ) अपने फल खिलाकर उसे ..... रही है। (पाल/पल)

(ङ) ..... भर वह आशा में डाली की तरफ़ देखती रहती। (दीन/दिन)

2. पाठ में प्रयुक्त विशेषण शब्दों से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(क) एक ..... चिड़िया बहुत दूर से आई।

(ख) पत्तियों से भरी ..... डाली तक पहुँची।

(ग) डाली से उसे एक ..... फल खाने को दिया।

(घ) ..... संगीत उसके आस-पास गूँजता रहता।

(ङ) ..... डाली, तुमने मेरी जान बचाई।

3. निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ बताकर वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

- आग बबूला होना – क्रोधित होना

बच्चों की शरारतें देखकर दादी आग बबूला हो गईं।

(क) प्यास से बेहाल – .....

.....

(ख) घाव भरना – .....

.....

(ग) ताने मारना – .....

.....

(घ) मन तड़प उठना – .....

.....

(ङ) हरा-भरा होना – .....

.....

(च) आँखों में आँसू भरना – .....

.....

4. पढ़िए और जानिए–

काला अक्षर भैंस बराबर।

अब पछताए क्या होत है, चिड़िया चुग गई खेत।

यह लोकोक्तियाँ हैं। लोगों द्वारा कही बात को लोकोक्ति कहते है।

इसी प्रकार की कुछ लोकोक्तियाँ लिखिए–

.....

.....

.....

.....

विषय संवर्धक क्रियाकलाप

सोचिए और बताइए

1. चिड़िया को भगाने के पीछे डाली का क्या उद्देश्य हो सकता है? इस विषय पर अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।
2. मान लीजिए कि आप डाली हैं और आपकी सहेली चिड़िया, तो आप उसकी मदद कैसे करते?

क्रियाकलाप

- रंग भरिए–

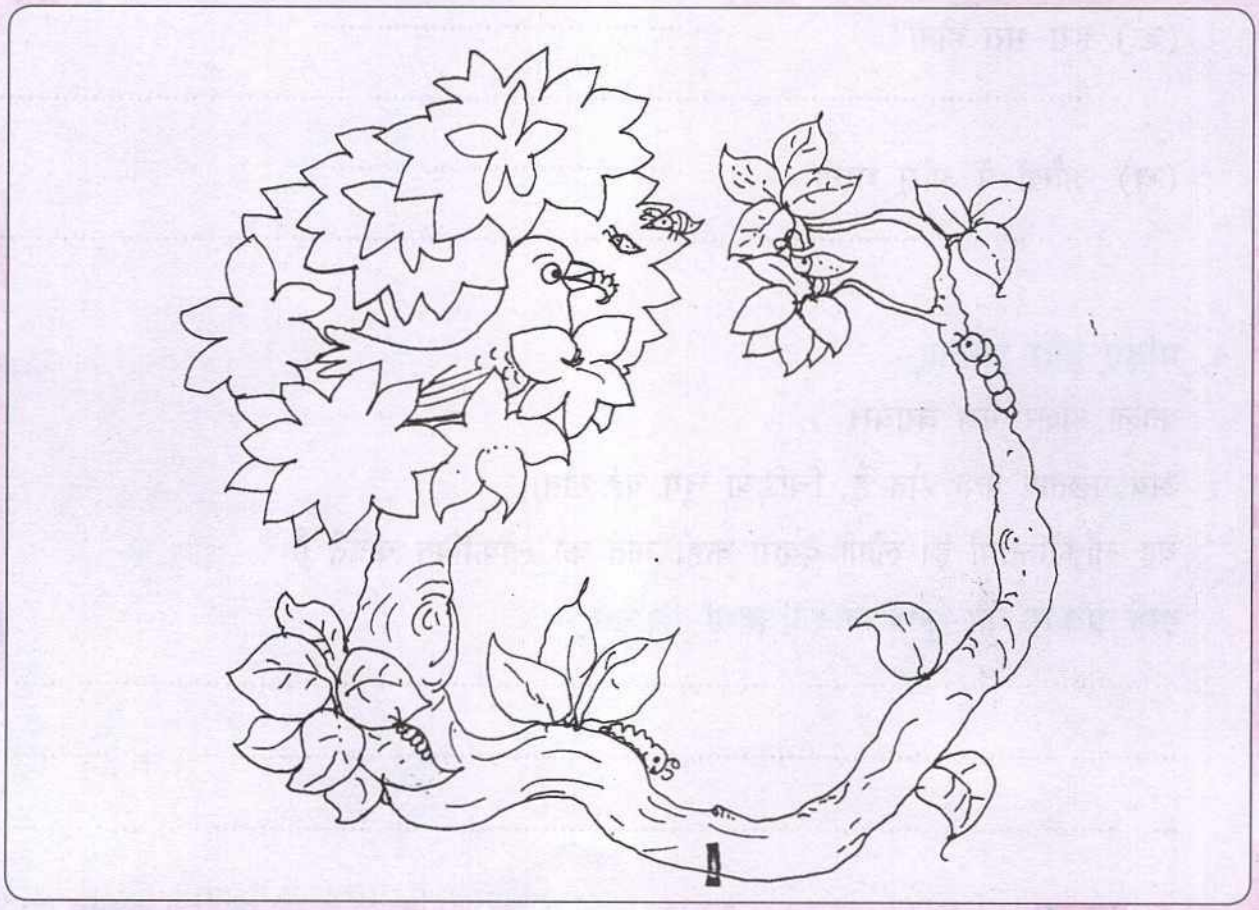

यह भी जानिए

- **क्या आप जानते हैं?**

हमारे शरीर को सुचारू रूप से चलाने के लिए कई पोषक तत्वों की आवश्यकता होती है और ये सारे तत्व यदि एक ही जगह मिल जाएँ तो कहना ही क्या! बच्चो, गन्ना सभी पोषक तत्वों की खान है। इसमें वो सारे तत्व मौजूद हैं जो हमारे शरीर के लिए ज़रूरी हैं।

हमारे शरीर के अंगों जैसे– हृदय, दिमाग, दाँत, आँख, गला, हाथ, पैर, पेट आदि के लिए गन्ना बहुत फ़ायदेमंद साबित होता है। इसके द्वारा शरीर के सभी अंगों में शक्ति का संचार होता है। इसलिए आयुर्वेद में गन्ने को 'रसायन' माना जाता है। यह रसों का भंडार है। इसके सेवन से हमारे शरीर में रक्त की पूर्ति होती है। गन्ना हमारे शरीर को संक्रामक रोगों से बचाता है और उसके विकास में सहायता करता है। यह ऐसा उपयोगी पदार्थ है, जो रस बनकर गरमी दूर करता है और गुड़ बनकर सरदी को दूर भगाता है।

गन्ने का ताज़ा रस पौष्टिक और स्वादिष्ट होता है। इसमें प्रचुर मात्रा में विटामिन 'पी', 'बी', 'सी' और 'के' पाया जाता है, जो दुर्बल शरीर में रक्त, माँस एवं मज्जा को बढ़ाता है। कैल्सियम के कार्बनिक लवण, फास्फोरस, लोहा और मैंगनीज आदि पोषक खनिज लवण इसमें भरपूर मात्रा में मौजूद हैं।

आजकल हम 'कोल्ड ड्रिंक' के पीछे भागते हैं। क्या आपको पता है कि इनके सेवन से हमारे शरीर को कोई भी पोषक तत्व नहीं मिलता है और न ही ये फ़ायदेमंद हैं। ताज़े गन्ने के रस की पौष्टिकता और स्वाद की बराबरी में ये सारे ब्रांड के कोल्ड ड्रिंक फेल हैं। गन्ना दाँतों का व्यायाम भी करता है, उसे चूसने से दाँत मज़बूत बनते हैं। गन्ना दाँतों से छीलकर चूसने वालों के दाँत मोतियों जैसे चमकते हैं। गन्ने के रस के सेवन से चेहरे पर रौनक, आँखों में रोशनी और शरीर में चुस्ती-फुर्ती आती है। गन्ने का ताज़ा रस पीने से खून साफ़ रहता है।

जो लोग विज्ञापन देखकर अपने फ्रिज़ में कोल्ड ड्रिंक की बोतलों का भंडार रखने लगे हैं, वे जाने-अनजाने कई बीमारियों को बुला रहे हैं। पलभर के स्वाद और दिखावे के कारण शरीर में लंबे समय के लिए रोग को न्योता देना क्या उचित है?

कोल्ड ड्रिंक के सेवन के बजाय ताज़ा गन्ने के रस में थोड़ा-सा अदरक और नींबू के रस की दस बूँद मिलाकर पीजिए, यह कई रोगों से छुटकारा दिला देगा। अब तो दक्षिण भारत में गन्ने की ऐसी किस्म भी पैदा होने लगी है, जो सालभर और हर मौसम में आपके लिए उपलब्ध हो सकती है। है ना पते की बात!

–प्रीति प्रवीण

परियोजना-1

चित्र-वर्णन

दिए गए चित्र को देखकर उसका वर्णन अपने शब्दों में कीजिए–

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

अध्यापन-संकेत–चित्र को ध्यानपूर्वक देखकर मन में उभरने वाले विचारों को लिखने को कहें।

परियोजना-2

अनुच्छेद-लेखन

जल प्रदूषण

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

अध्यापन-संकेत–उपरोक्त चित्र जल प्रदूषण के उदाहरण हैं। इसी प्रकार के प्रदूषणों की वर्ग में चर्चा करके उन्हें कैसे रोकें, इस विषय पर चर्चा कीजिए।

परियोजना-3

सार-लेखन

उदाहरण–

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर इसका सार लिखिए और एक उपयुक्त शीर्षक भी दीजिए–

राष्ट्रीय ध्वज राष्ट्र की स्वतंत्रता, संपन्नता, एकता और गौरव का प्रतीक होता है। इसमें राष्ट्र का गौरव झलकता है। इसके सम्मान में देश के प्रत्येक नागरिक का अपना सम्मान सन्निहित रहता है। राष्ट्रीय ध्वज के सम्मान की रक्षा के लिए देश के सभी नागरिक अपने प्राणों की आहुति देने के लिए तैयार रहते हैं। इसी दृष्टि से हमारे स्वतंत्रता-सेनानियों ने राष्ट्र के ऊपर थोपे गए अंग्रेज़ी झंडे 'यूनियन जैक' के विरुद्ध अपने राष्ट्रीय ध्वज की आवश्यकता का अनुभव किया और तिरंगे झंडे का निर्माण किया किंतु पराधीन भारत में इस तिरंगे झंडे को प्रतिष्ठित करना आसान नहीं था। उसके लिए अंग्रेज़ी शासन की बर्बरता और यातनाओं का डटकर सामना करना पड़ता था। कभी-कभी बलिदान देने के लिए तत्पर रहना पड़ता था। स्वतंत्रता संग्राम के दिनों में तिरंगे के सम्मान के लिए स्वतंत्रता-सेनानियों द्वारा किए गए बलिदानों के एक नहीं, अनेकानेक ज्वलंत उदाहरण इतिहास के पृष्ठों पर स्वर्ण अक्षरों में अंकित हैं।

उत्तर– सार– राष्ट्र-ध्वज राष्ट्र की स्वतंत्रता, संपन्नता, एकता तथा गौरव का प्रतीक होता है। ध्वज राष्ट्र का गौरव प्रकट करता है। परतंत्र भारत में स्वतंत्रता-सेनानियों ने अंग्रेज़ी झंडे 'यूनियन जैक' के मुकाबले भारतीय तिरंगे को प्रतिष्ठित करने के लिए अंग्रेज़ी शासकों के अत्याचार सहकर अपने प्राण तक निछावर किए।

शीर्षक– राष्ट्र-ध्वज

अभ्यास

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर इसका सार लिखिए तथा उपयुक्त शीर्षक भी दीजिए–

समय जीवन की अमूल्य निधि है। समय का महत्व समझना चाहिए और समय के साथ चलना चाहिए। समय को गँवाना अपनी हीनता और अवनति को आमंत्रित करना है। समय का सदुपयोग करके कई महापुरुषों ने नए-नए कीर्तिमान स्थापित किए और सफलता के झंडे लहराए। जो समय को ठीक परखता है, सफलता उसके कदम चूमती है। पाश्चात्यों की उन्नति का मूलमंत्र यही है कि उन्होंने समय का ठीक प्रकार मूल्यांकन करके उसका सदुपयोग किया। विद्यार्थियों के लिए तो समय का महत्व और भी बढ़कर है। उसे अपने प्रत्येक कार्य के लिए समय निश्चित कर लेना चाहिए और किसी भी क्षण को व्यर्थ नहीं गँवाना चाहिए। एक अच्छा विद्यार्थी कभी खाली नहीं बैठता और न किसी कार्य को करना भूलता है। उसका मन कभी गलत काम करने की ओर प्रवृत्त नहीं होता। इसलिए सफलता के शिखर पर पहुँचने के लिए प्रत्येक क्षण का सदुपयोग करना आवश्यक है। इसके महत्व को जानकर ही जीवन में अपने लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है।

सार– .....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

शीर्षक– .....

अध्यापन-संकेत–उदाहरण के तौर पर एक गद्यांश हल सहित दिया गया है। इसी के अनुसार सार-लेखन करवाइए।

परियोजना-4

अपठित पद्यांश

उदाहरण–

निम्नलिखित अपठित पद्यांश को ध्यान से पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

जिसका गौरव भाल हिमालय,
स्वर्ण धरा हँसती चिर श्यामल,
ज्योति ग्रथित गंगा-यमुना जल,
बहु जन-जन के हृदय में बसी।
जिसे राम, कृष्ण और सीता,
बना गए पद धूलि पुनीता,
जहाँ कृष्ण ने गाई गीता,
बजा अमर प्राणों में वंशी।

प्रश्न–

1. **कवि ने हिमालय को क्या कहा है?**
2. **स्वर्ण धरा कैसी दिखाई देती है?**
3. **जन-जन के हृदय में कौन बसी है?**
4. **यहाँ की धूलि को किन्होंने पवित्र बनाया?**
5. **श्रीकृष्ण ने कौन-सा गीत गाया?**

उत्तर–

1. कवि ने हिमालय को भारत माता का भाल कहा है।
2. स्वर्ण धरा चिर श्यामला दिखाई देती है।
3. जन-जन के हृदय में गंगा-यमुना बसी है।
4. यहाँ की धूलि को राम, कृष्ण और सीता ने पवित्र बनाया।
5. श्रीकृष्ण ने गीता (भगवत् गीता) का गीत गाया।

अभ्यास

निम्नलिखित अपठित पद्यांश को ध्यान से पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

कुछ भी बन, बस कायर मत बन!
ठोकर मार! पटक मत माथा!
तेरी राह रोकते पाहन!
ले-देकर जीना क्या जीना?
कब तक गम के आँसू पीना?
मानवता ने सींचा तुझको,
बहा युगों तक खून-पसीना।
कुछ न करेगा, किया करेगा,
रे मनुष्य–बस कातर क्रंदन?

1. प्रस्तुत कविता में किसे संबोधित किया गया है?

.....

2. मानव की राह कौन रोक रहे हैं?

.....

3. 'गम के आँसू' का क्या अर्थ है?

.....

4. 'खून-पसीना बहाना' इस मुहावरे का क्या अर्थ है?

.....

5. प्रस्तुत काव्यांश से कवि क्या प्रेरणा देना चाहते हैं?

.....

.....

अध्यापन-संकेत–उदाहरण के तौर पर एक पद्यांश हल सहित दिया गया है। उसी के अनुसार हल करवाइए।

परियोजना-5

मौखिक अभिव्यक्ति

कविता, भाषण, समाचार वाचन

मृग घूमते हैं वन-उपवन में
शाकाहारी इनका जीवन
उछलते-कूदते यह मतवाले
भोला-भाला है इनका जीवन।

इनकी आँखें है चंचल
टाँगें हैं फुर्तीली
दौड़ लगाते ऐसी लगता
मानो ज़मीन पर चमकी बिजली।

नहीं किसी को दुख देते हैं
घास-पात को खाकर
अपना जीवन बिताते हैं
मृगनयनी नज़रों से सबको
प्यार सिखाते हैं।

अध्यापन-संकेत–उपरोक्त कविता का वर्ग में वाचन करें, छात्रों को इस कविता का मनन करने के लिए कहकर प्रश्न पूछें। इसी प्रकार परिच्छेद, संवाद, समाचार पत्र आदि पढ़कर अभिव्यक्ति कौशल को बढ़ावा दें।

परियोजना-6

विज्ञापन लेखन

खुशहाली और समृद्धि की
राह पर बढ़ते हमारे गाँव
यही है हमारे भारत की शान

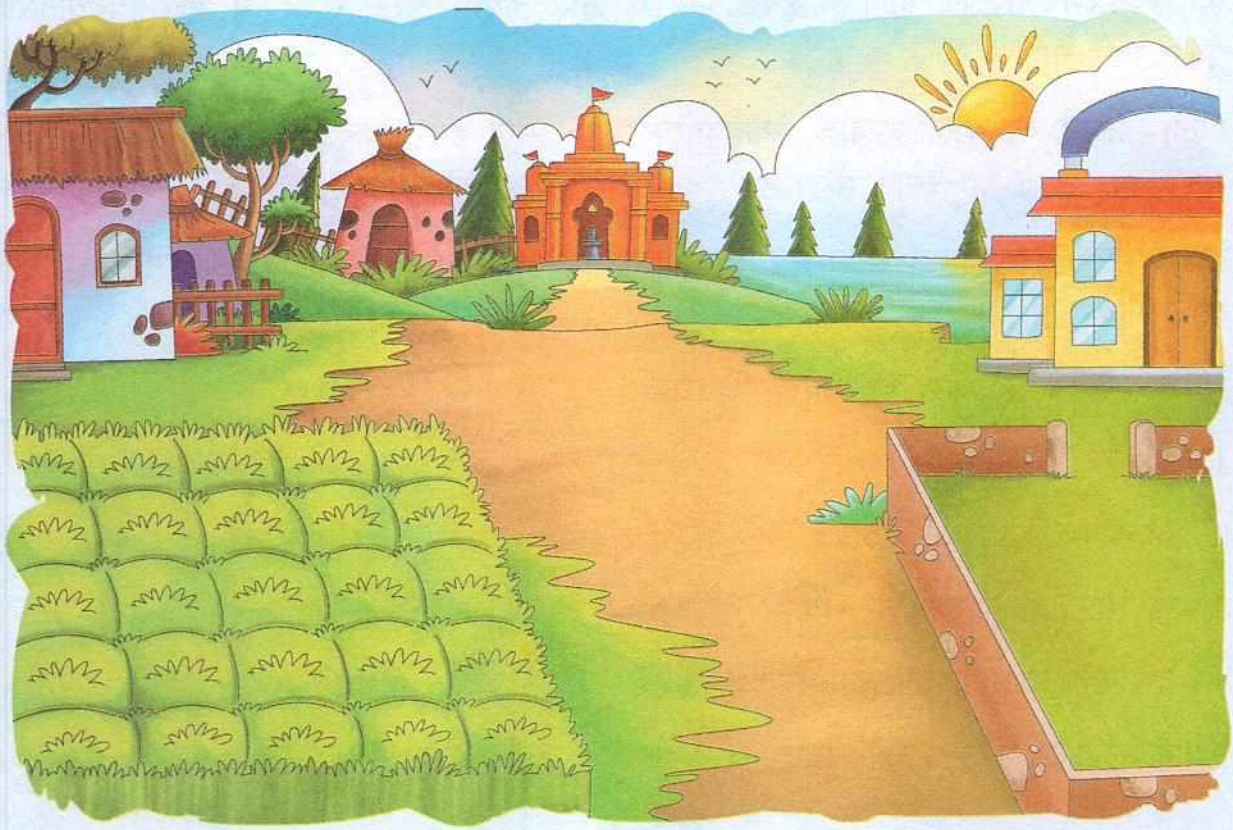

अध्यापन-संकेत–इसी प्रकार के चित्र दिखाकर बच्चों से विज्ञापन लिखवाएँ। जैसे–चॉकलेट, क्रिकेट बैट, स्कूल बैग, कपड़े आदि।

परियोजना-7

संवाद लेखन

दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच हुई बातचीत को संवाद अथवा वार्तालाप कहते हैं।

संवाद लेखन करते समय निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना आवश्यक है–

भाषा–संवाद की भाषा सरल, सहज तथा सुबोध हो। भाषा पात्र के अनुसार होनी चाहिए। भाषा का उच्चारण ओजपूर्ण होना चाहिए। भाषा में उतार-चढ़ाव, दुख, खुशी के भाव विषयानुसार प्रकट होने चाहिए।

शैली–संवाद की शैली सजीव, व्यावहारिक और सरल हो। संवाद के भाव व्यक्त करने में सक्षम हो। शब्दों का चयन सरल हो।

वाक्य–संवाद के वाक्य सरल एवं स्वाभाविक होने चाहिए। लंबे, जटिल तथा मिश्रित वाक्यों का समावेश न हो।

संवाद लेखन के कुछ महत्वपूर्ण विषय–

1. माँ-बेटे का संवाद
2. अध्यापक-छात्र का संवाद
3. दो मित्रों का पारस्परिक संवाद
4. दुकानदार और ग्राहक का संवाद
5. नौकर और मालिक का संवाद

अध्यापन-संकेत–उपरोक्त विषयों पर छात्रों से संवाद लेखन करवाएँ। संवादों पर अभिनय भी करवाया जा सकता है।

परियोजना-8

डायरी लेखन (दैनंदिनी लेखन)

दैनंदिनी लेखन–प्रतिदिन या समय-समय पर क्रमबद्ध लिखते रहना डायरी-लेखन कहलाता है।

दैनंदिनी लेखन के कुछ नियम–

1. प्रथम पृष्ठ पर नाम, पता तथा दूरभाष अवश्य लिखें।
2. डायरी लिखते समय हर पृष्ठ पर नाम न लिखें।
3. डायरी लिखते समय दिनांक अवश्य लिखें।
4. डायरी पूरी सच्चाई व प्रमाणिकता के साथ लिखें।
5. विवरण सरल तथा संक्षिप्त हो।

डायरी लेखन के लिए कुछ महत्वपूर्ण विषय–

1. पत्रिका में कविता प्रकाशित होने पर अपनी प्रसन्नता का वर्णन करते हुए डायरी लिखिए।
2. विद्यालय की प्रार्थना-सभा में पहली बार भाषण देने पर अपने अनुभव डायरी में लिखिए।
3. किसी मॉल में बिताए दिन का वर्णन डायरी में लिखिए।
4. कक्षा में दिनभर किए गए कार्यों को डायरी में लिखिए।

अध्यापन-संकेत–उपरोक्त विषयों पर छात्रों से डायरी लेखन करवाएँ। अन्य विषयों पर भी अभ्यास करवाया जा सकता है।

तिरंगे की यात्रा

सन् 1906 में भारत का गैर-अधिकारिक ध्वज।

सन् 1907 में भीकाजी कामा द्वारा फहराया गया बर्लिन समिति का ध्वज।

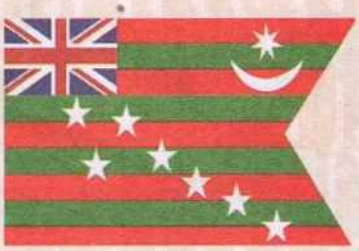

सन् 1917 में घरेलू शासन आंदोलन के दौरान अपनाया गया ध्वज।

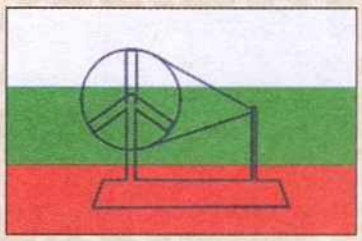

सन् 1921 में इस ध्वज को गैर-अधिकारिक रूप से अपनाया।

सन् 1931 में इस ध्वज को अपनाया गया। यह ध्वज भारतीय राष्ट्रीय संग्राम सेना का संग्राम चिह्न भी था।

नाम : तिरंगा

उपयोग : भारतीय ध्वज

अनुपात : 2 : 3

अपनाया गया : 22 जुलाई, 1947

संरचना : तीन रंगों की आड़ी पट्टियाँ

वर्तमान में तिरंगे का रूप

सबसे ऊपर केसरिया, बीच में सफ़ेद और निचली पट्टी हरे रंग की। सफ़ेद पट्टी पर बीच में नीले रंग का चौबीस तीलियों वाला अशोक चक्र।

केसरिया – त्याग का प्रतीक

सफ़ेद – शांति का प्रतीक

हरा – प्रगति का प्रतीक

अशोक चक्र – दिन के चौबीस घंटे तथा कालचक्र का प्रतीक

हमारी प्रतिज्ञा : ध्वज के प्रति

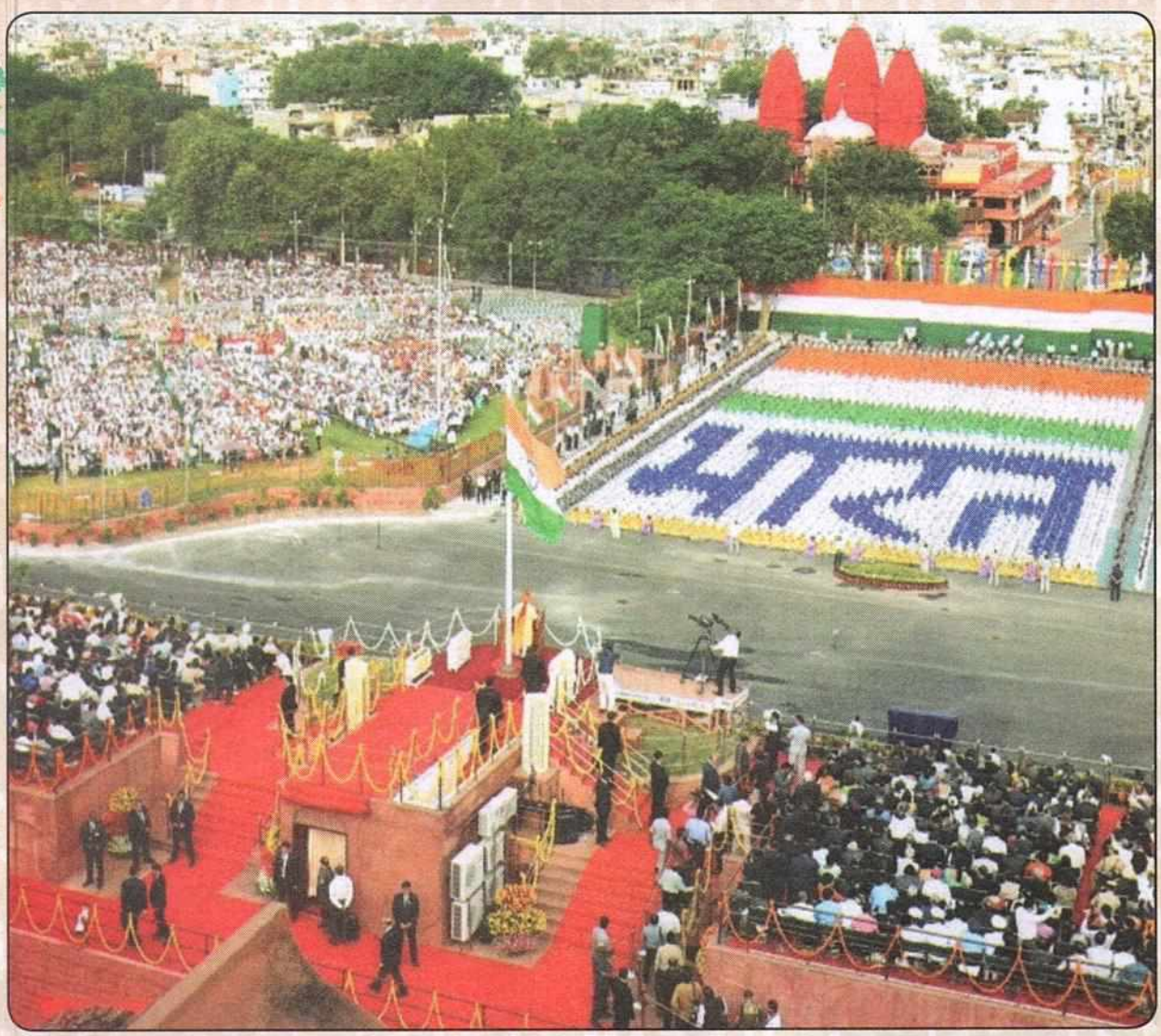

"हमारे लिए यह अनिवार्य होगा कि हम भारतीय– मुस्लिम, ईसाई, जूईस, पारसी और अन्य सभी जिनके लिए भारत एक घर है, एक ही ध्वज को मान्यता दें और इसके लिए मर मिटें।"

–महात्मा गांधी

शब्दकोश का प्रयोग

'डिक्शनरी' शब्द को हिंदी में शब्दकोश कहते हैं। शब्दकोश अर्थात् शब्दों का खज़ाना। जिस पुस्तक में हज़ारों शब्द तथा उनके अर्थ भी हों, उसे ही शब्दकोश कहते हैं। यदि शब्द को भाषा का शरीर माना जाता है, तो अर्थ उसकी आत्मा है।

कोई भी पाठ पूरी तरह से तब समझ में आता है, जब हमें हर शब्द का अर्थ पता हो। कोई कितना भी ज्ञानी हो, कभी-न-कभी किसी शब्द के अर्थ से अनभिज्ञ रहता है, तब शब्दकोश काम आता है। यदि आपको भी किसी शब्द का अर्थ नहीं पता हो, तो आप शब्दकोश में से पता कर सकते हैं।

निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखने से आप किसी भी शब्द का अर्थ आसानी से ढूँढ़ सकेंगे–

(क) शब्दकोश में शब्दों का एक विशेष क्रम होता है। शब्द के पहले अक्षर का क्रम वही रखा गया है, जो देवनागरी वर्णमाला का है।

(ख) पहले स्वरों का क्रम आता है; जैसे–अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ।

(ग) स्वरों के बाद व्यंजन आते हैं, हर व्यंजन के साथ स्वर मात्रा के रूप में लगते हैं। शब्दकोश में इनका क्रम इस प्रकार दिया जाता है–

क ख ग घ ङ →	च छ ज झ ञ →	ट ठ ड ढ ण →	त थ द ध न
प फ ब भ म →	य र ल व →	श ष स ह →	क्ष त्र ज्ञ श्र

(घ) अं/अँ, अः को अलग अक्षर नहीं माना गया है, ये दोनों ध्वनियाँ 'अ' के साथ ही आएँगी।

(ङ) ङ, ञ, ण से कोई भी शब्द आरंभ नहीं होता।

(च) दूसरे अक्षर के रूप में निम्नलिखित क्रम होगा–
अं/अँ, अः, अक, अख, अग, अघ, अच, अछ, अज, अझ, अट, अठ, अड, अढ, अत, अथ, अद, अध, अन आदि।

(छ) इस क्रम के बाद उस आदि (आरंभ) अक्षर के साथ मात्राएँ लगने का क्रम होगा; जैसे–
का, कि, की, कु, कू, कृ, के, कै, को, कौ।

(ज) मात्राओं के बाद संयुक्त अक्षर अपने क्रम में होंगे; जैसे–
क्क, क्ख, क्च, क्थ, क्न, क्प, क्म, क्य, क्र, क्व, क्ल, क्श, क्ष, क्ष (क्ष) क्स।

हिंदी वर्तनी का मानकीकरण

हिंदी, भारतीय संघ तथा कुछ राज्यों की राजभाषा के रूप में स्वीकृत है, इसलिए इसका मानक रूप निश्चित करना बहुत आवश्यक है। भारत सरकार द्वारा स्थापित विभाग हिंदी निदेशालय ने वर्तनी संबंधी समस्याओं के समाधान तथा एकरूपता की दृष्टि से सराहनीय कार्य किया है।

आइए, मानक हिंदी वर्तनी संबंधी मुख्य बिंदुओं पर विचार करें–

- खड़ी पाई वाले व्यंजनों का संयुक्त रूप खड़ी पाई (।) को हटाकर ही बनाया जाना चाहिए; जैसे–ख्याति, लग्न, विघ्न, कच्चा, छज्जा, नगण्य, कुत्ता, पथ्य, ध्वनि, न्यास, प्यास, डिब्बा, शय्या, उल्लेख, व्यास, श्लोक, राष्ट्रीय, स्वीकृत आदि।
- 'क' और 'फ/फ़' के संयुक्ताक्षर– संयुक्त, पक्का, दफ़्तर आदि की तरह बनाए जाएँ।
- ङ, छ, ट, ठ, ड, ढ, द और ह के संयुक्ताक्षर हल चिह्न लगाकर ही बनाए जाएँ; जैसे–वाङ्मय, लट्टू, बुड्ढा, विद्या, चिह्न, ब्रह्मा आदि।
- संयुक्त 'र' के प्रचलित तीनों रूप यथावत ही रहेंगे; जैसे–प्रकार, धर्म, राष्ट्र।
- विभक्ति-कारक या चिह्न संज्ञा शब्दों से अलग लिखे जाएँ; जैसे–मोहन ने, मोहन को, मोहन से आदि।
- विभक्ति-कारक या चिह्न सर्वनाम शब्दों से मिलाकर लिखे जाएँ; जैसे–उसने, उसको, उससे आदि। मेरेको, मेरेसे आदि रूप व्याकरण सम्मत नहीं हैं।
- सर्वनाम के साथ यदि दो विभक्ति-चिह्न हों तो उनमें से पहला मिलाकर और दूसरा अलग लिखा जाए; जैसे–उसके लिए, इसमें से आदि।
- सम्मान हेतु शब्द 'श्री' और 'जी' अव्यय पृथक् लिखे जाएँ; जैसे–श्री मनोहर लाल जी, महात्मा जी आदि।
- समस्त पदों में प्रति, मात्र, यथा आदि अव्यय अलग नहीं लिखे जाएँ; जैसे–प्रतिदिन, प्रतिशत, मानवमात्र, निमित्तमात्र, यथासमय, यथोचित आदि।
- क्रिया, विशेषण, अव्यय आदि में 'य', 'व' की जगह स्वरात्मक प्रयोग किया जाए; जैसे–नयी-नई, हुवा-हुआ। गए, किए, आए, नई, हुआ आदि मानक रूप हैं।
- जहाँ 'य' शब्द का मूल रूप हो वहाँ वह 'य' ही रहेगा; जैसे–स्थायी, अव्ययीभाव, दायित्व आदि।
- कुछ शब्द ऐसे हैं, जिनके दो-दो रूप बराबर चल रहे हैं। दोनों रूपों की एक-सी मान्यता है; जैसे–गरदन/गर्दन, गरमी/गर्मी, बिलकुल/बिल्कुल, सरदी/सर्दी, भरती/भर्ती, फ़ुरसत/फ़ुर्सत, वापस/वापिस, बरतन/बर्तन, दुबारा/दोबारा आदि। इन वैकल्पिक रूपों में से पहले वाले रूप को प्राथमिकता दी जाए।
- तत्सम शब्द के अंत का हल् चिह्न हिंदी में लुप्त हो चुका है; जैसे–महान, सन, भगवान आदि।
- पूर्वकालिक प्रत्यय 'कर' क्रिया से मिलाकर लिखा जाए; जैसे–मिलाकर, खा-पीकर, रो-रोकर, दौड़कर-पढ़कर आदि।

सीखने के प्रतिफल (Learning Outcome)

- विभिन्न प्रकार की ध्वनियों (जैसे– बारिश, हवा, रेल, बस, फेरीवाला आदि) को सुनने के अनुभव, किसी वस्तु के स्वाद आदि के अनुभव को अपने ढंग से मौखिक/सांकेतिक भाषा में प्रस्तुत करते हैं।
- सुनी, देखी गई बातों, जैसे– स्थानीय सामाजिक घटनाओं, कार्यक्रमों और गतिविधियों पर बेझिझक बात करते हैं और प्रश्न करते हैं।
- देखी, सुनी रचनाओं/घटनाओं/मुद्दों पर बातचीत को अपने ढंग से आगे बढ़ाते हैं, जैसे– किसी कहानी को आगे बढ़ाना।
- रेडियो, टी०वी०, अखबार, इंटरनेट में देखी/सुनी गई खबरों को अपने शब्दों में कहते हैं।
- विभिन्न अवसरों/संदर्भों में कही जा रही दूसरों की बातों को अपने ढंग से बताते हैं, जैसे– आँखों से न देख पाने वाले साथी का यात्रा-अनुभव।
- अपने परिवेश में मौजूद लोककथाओं और लोकगीतों के बारे में जानते हुए चर्चा करते हैं।
- अपने से भिन्न भाषा, खान-पान, रहन-सहन संबंधी विविधताओं पर बातचीत करते हैं।
- सरसरी तौर पर किसी पाठ्यवस्तु को पढ़कर उसकी विषयवस्तु का अनुमान लगाते हैं।
- किसी पाठ्यवस्तु की बारीकी से जाँच करते हुए उसमें किसी विशेष बिंदु को खोजते हैं, अनुमान लगाते हैं, निष्कर्ष निकालते हैं।
- हिंदी भाषा में विभिन्न प्रकार की सामग्री (समाचार, पत्र-पत्रिका, कहानी, जानकारी परक सामग्री, इंटरनेट पर प्रकाशित होने वाली सामग्री आदि) को समझकर पढ़ते हैं और उसमें अपनी पसंद-नापसंद, राय, टिप्पणी देते हैं।
- भाषा की बारीकियों/व्यवस्था/ढंग पर ध्यान देते हुए उसकी सराहना करते हैं, जैसे– कविता में लय-तुक, वर्ण-आवृत्ति (छंद) तथा कहानी, निबंध में मुहावरे-लोकोक्ति आदि।
- विभिन्न विधाओं में लिखी गई साहित्यिक सामग्री को उपयुक्त उतार-चढ़ाव और सही गति के साथ पढ़ते हैं।
- हिंदी भाषा में विविध प्रकार की रचनाओं को पढ़ते हैं।
- नए शब्दों के प्रति जिज्ञासा व्यक्त करते हैं और उसके अर्थ समझने के लिए शब्दकोश का प्रयोग करते हैं।
- विविध कलाओं, जैसे– हस्तकला, वास्तुकला, खेती-बाड़ी, नृत्यकला आदि से जुड़ी सामग्री में प्रयुक्त भाषा के प्रति जिज्ञासा व्यक्त करते हुए उसकी सराहना करते हैं।
- दूसरों के द्वारा अभिव्यक्त अनुभवों को ज़रूरत के अनुसार लिखना, जैसे– सार्वजनिक स्थानों (जैसे– चौराहों, नलों, बस अड्डे आदि) पर सुनी गई बातों को लिखना।
- विभिन्न विषयों, उद्देश्यों के लिए उपयुक्त विराम-चिह्नों का उपयोग करते हुए लिखते हैं।
- विभिन्न अवसरों/संदर्भों में कही जा रही दूसरों की बातों को अपने ढंग से लिखते हैं।
- विभिन्न संदर्भों में विभिन्न उद्देश्यों के लिए लिखते समय शब्दों, वाक्य संरचनाओं, मुहावरे आदि का उचित प्रयोग करते हैं।